'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

‘SHER KE SIR PAR NAITYA’ NATAK KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

[मिज़ोरम विश्वविद्याल, आइज़ोल के हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम.फिल.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का सारांश (Abstract)]

वानललङइजुआली

VANLALNGAIHZUALI

MZU Regd. No. 1905369

M.Phil. Regd. No. MZU/M.Phil./623 of 29.05.2020

हिंदी विभाग

शिक्षा और मानविकी संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF EDUCATION AND HUMANNITIES

नवंबर, 2021

NOVEMBER, 2021

शेर के सिर पर नृत्य’ नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

‘SHER KE SIR PAR NAITYA’ NATAK KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तुतकर्ता

वानललङइजुआली

हिन्दी विभाग

VANLALNGAIHZUALI

Department of Hindi

शोध निर्देशक

डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा

हिन्दी विभाग

Dr. Akhilesh Kumar Sharma

Department of Hindi

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के शिक्षा और मानविकी संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम. फिल.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का सारांश (Abstract)

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of Master of Philosophy in Hindi of Mizoram Uuniversity, Aizawl

अध्याय योजना

शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय: डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते का जीवन और रचनाधर्मिता

(क) डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के जीवन के विविध फलक

(ख)डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते की रचनाधर्मिता का विकास

द्वितीय अध्याय: 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का तात्विक विश्लेषण

(क) कथावस्तु

(ख) पात्र-विधान

(ग़) संवाद

(घ) देशकाल- वातावरण

(ङ) अभिनेयता

(च) उद्देश्य

(छ) शीर्षक

तृतीय अध्याय: 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक : संवेदना और शिल्प

(क) संवेदना

(ख) शिल्प

उपसंहार

संदर्भ-ग्रंथ-सूची

लघु शोध-प्रबंध सार

हिन्दी साहित्य की गद्य-पद्य विधाओं में लोक जीवन का एक भरा-पूरा संसार फैला-पसरा है। जब रचनाकार अपने कहने-लिखने के ढंग में नवीनता और मौलिकता लाता है तो स्वत: ही नई-नई विधाओं और शैलियों का जन्म होने लगता है। हिन्दी साहित्य की विधाएँ ऐसे ही जन्मी हैं। हिन्दी साहित्य में गद्य विधा के अंतर्गत आने वाली नाट्य रचना अपनी अभिनयशीलता और मंचनीयता के बूते किसी भी संदेश और उद्देश्य को दृश्य-शृव्य माध्यम से दर्शकों-पाठकों तक पहुँचाने में सशक्त विधाहै।

'शेर के सिर पर नृत्य' ('सकेई लु लाम') डॉ. ललल्लुआङलिआना खिआंगते द्वारा लिखा गया एक मिज़ो नाटक है। इस नाटक का हिंदी में अनुवाद (सन् 2019) श्रीमत रमथङा खोलहरिंग द्वारा किया गया।

यह नाटक मिज़ो लोक परंपरा के एक लोक नृत्य पर आधारित है। मिज़ो समाज में प्राचीन काल में उनके पूर्वज शेर को अपना भगवान जैसा समझते थे। शेर को बहुत ही ऊँचा दर्जा दिया जाता था और शेर को सब कुछ जानने वाला समझा जाता था। प्राचीन काल में मिज़ो जाति का पेशा शिकार करना होता था; लेकिन शेर का शिकार नहीं किया जाता था। केवल जंगली शेर को गाँव में आंतक मचाने पर मार गिराया जाता था।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में नृत्य के अलावा मिज़ो समाज एवं संस्कृति की जातिगत विशेषताओं, रीति-रिवाज और रूढ़ियों आदि का चित्रण है। इस नाटक में मिज़ो वीरों की गाथा और जनजातियों की सामाजिक विशेषताओं आदि को उद्घाटित किया गया है। इस नाटक को मिज़ो लोक परंपरा को उद्घाटित करने वाला नाटक कहा जा सकता है जिसमें वास्तविकता और काल्पनिकता का मणिकांचन योग है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का लेखक द्वारा कई जगहों पर मंचन किया जा चुका है और पूर्वकाल के जनजीवन पर आधारित होने के कारण इस नाटक को काफी हद तक सफलता मिली है। इस नाटक के अनूदित हिन्दी संस्करण को लेकर हिंदी समाज को मिज़ो समाज की परंपराओं से परिचित करवाना, मिज़ो समाज और संस्कृति, लोकाचार और परंपरा का हिंदी साहित्य से संवाद का प्रवेश द्वार खोलना आदि महत उद्देश्यों के साथ ध्यान आकर्षण करना, उनकी विवेचना-विश्लेषण करना इस लघु शोध-प्रबंध का विनम्र प्रयास है।

अध्ययन की सुविधा हेतु इस लघु शोध-प्रबंध को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय '**डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते का जीवन और रचनाधर्मिता**' है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम उप-अध्याय **'डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के जीवन के विविध फलक**' है। इस अध्याय में डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के जीवन का विस्तारपूर्वक परिचय दिया गया है। "डॉ. ललत्लुआङलिआना का जन्म 28 जून सन् 1961 में साईतुअल गाँव ('साईतुअल' गाँव अब मिज़ोरम का जिला बन गया है) में हुआ। डॉ. ललत्लुआङलियाना के परदादा रेवरेन लिआङखाया (Rev.liangkhaia) मिज़ो समाज के सबसे पहले पादरी और प्रसिद्ध लेखक थे। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के पिता का नाम श्री उपात्लआह्मिंगथाङा (Upa Tlanghmingthanga-Ex-Hav.Clerk, Ex-Asst. Headmaster, Ex–synod Music Instructor) और माता का नाम श्री दारङेनी (Darngeni khawlhring) था।"[1] डॉ. ललत्लुआलिआना खिआंगते अपने सात भाई-बहनों में पाँचवें स्थान पर हैं।

डॉ. ललत्लुआलिआना खिआंगते का विवाह 09 सितम्बर, 1987 में ललरमह्लुनीराल्ते (lalramhluni Ralte) से मिशन वेंङ गिर्जाघर में हुआ। इनके चार बेटे हुए - एल.ति.एल. फेला, एल.ति.एल फका, एल.ति.एल. फिमा,एल.ति.एल.फाला।

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी का जिस गाँव में जन्म हुआ, वही साईतुअल से इनकी शिक्षा शुरु हुई। इनके पिता जी को साईतुअल से वाईरेङते में ट्रांसफर हो गया। यहीं से सरकारी प्राथमिक विद्यालय से कक्षा तीन की पढ़ाई पूरी की। “1973 में कक्षा छठवीं (scholarship Examination) में पूरे मिज़ोरम में प्रथम श्रेणी से स्थान प्राप्त किया। 1974–78 तक डॉ. खिआंगते जी ने आइजोल के मिज़ो सिनॉड उच्च विद्यालय में अपनी पढ़ाई की और लगातार प्रथम श्रेणी में आकर मिज़ोरम बोर्ड के अन्दर सबसे पहले परीक्षा देने वाले छात्र बने। 1978 में एच.एस.एल.सी (HSLC) में पूरे मिज़ोरम में चौथा स्थान प्राप्त किया। 1980 में सेड.एन्थोनी कॉलेज शिलॉग से पी.इउ (P.U) कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं में विज्ञान की परीक्षा पास की। सेड. एड्मण्ड कॉलेज से बी.ए (अंग्रेजी) की परीक्षा1982 में पास की। नेहू (NEHU) से एम.ए (अंग्रेजी) 1984 में द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण की। 1991 में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद बिना रुके पोस्ट डॉक्टरेट रिसर्च किया। लोक साहित्य विषय पर 1998 में इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन में अध्ययन के बाद 1999 में डी.लिट (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि प्राप्त की”[2]

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद ह्लंङबाना (Hrangbana) कॉलेज में अंग्रेजी के व्याख्याता का पद पर कार्य किया। इसके बाद1985से पछुंङा यूनिवर्सिटी कॉलेज में रिसर्च एसोसिएट (मिज़ो व्याख्याता) के पद पर नियुक्त हुए। “1997 में जब NEHU का मिज़ो केम्पस खोला गया, तब उन्होंने यहाँ गेस्ट व्याख्याता के पद

पर कार्य किया। दो साल के बाद रीडर के पद पर और उसके बाद 1999 में अपने विभाग के हेड बने"।[3] इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी (IGNOU), मिज़ोरम केंद्र पर अकादमिक परामर्शदाता (अंग्रेजी विषय) का कार्य संभाला। मिजोरम विश्वविद्यालय के यूजीसी-नेट कॉ-ऑडिनेटर (समन्वयक) रहे। डॉ. खिआंगते जी की अध्यापन में रुचि है। "6 दिसम्बर, 2005 से प्रोफेसर, मिज़ो विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय (MZU) के पद पर हैं। 2001 में मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग के विभागाध्यक्ष भी रह चुके हैं। आगे चलकर डीन का भी कार्य सम्भाला"।[4] वर्तमान में डॉ. खिआंगते जी मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग में अध्यापन कर रहे हैं।

उच्च माध्यमिक शिक्षा से ही डॉ. खिआंगते जी की लेखन में काफी रुचि रही। "कक्षा 9 से ही इन्होंने लिखना शुरु कर दिया था। शुरुआत में इन्होंने दो लेख लिखे, जो 1977 में सिनॉड हाई स्कूल की मैगजीन में छपे। इसके बाद ये इसी पत्रिका के एडिटोरिअल बोर्ड के सदस्य भी बने। 1980 से ऑल ,आईज़ोल और 1997 से दूरदर्शन में भाषण देने के लिये आमंत्रित किए जाते रहे"।[5] Lemchankhawvel–Iको 1994 में सबसे अच्छी पुस्तक के लिये चुना गया। "PasalthaKhuangchera" जो इनकी नाट्य रचना है, इसे 1997 में Best of the Year में चुना गया और हर साल इनकी किताब को एक अच्छी पुस्तक के रूप में चुना जाता था। किताबों के अलावा डॉ. खिआंगते जी ने कई शोध पत्र लिखे। International/National/Regional level में लगभग 80 शोध पत्र लिख चुके है"।[6]

मिज़ो नाटकों की प्रगति और इनके द्वारा किये गए अध्ययन को देखकर जेम्स ललसंगपुइआ ने प्रो. डॉ. खिआंगते जी को 'Father of MizoDrama' की उपाधि से सम्मानित किया।

डॉ. खिआंगते जी को उनकी रचनात्मक यात्रा पर अब तक कई सम्मान मिल चुके हैं। उन सम्मानों में से जो प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण सम्मान मिले, उनमें प्रमुख हैं -"1998 में "Man of the Year" सम्मान के लिए पाँच प्रसिद्ध नाम में डॉ. खिआंगते का नाम भी चुना गया"।[7] "2003 में National Award, भारतीय लोक भाषा सम्मान दिया गया। 'Lelte Award for Best Writer of Mizoram' 2002, 2003 और 2004 में लगातार मिला। 2005 में आदिवासी सम्मान से सम्मानित किया गया। 09 मार्च, 2006 में भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के हाथों पद्मश्री मिला"।[8]

द्वितीय उप-अध्याय '**डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते की रचनाधार्मिता का विकास**' है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत उनकी रचना यात्रा का वर्णन किया गया है। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी एक मेहनती और अपनी काबिलियत पर खडे होने वाले रचनाकार हैं। डॉ. खिआंगते जी मिज़ो के प्रसिद्ध और चर्चित नाटककार हैं। डॉ. खिआंगते जी की पहचान नाट्य साहित्य के कारण हैं। खासतौर से देखा जाए तो डॉ. खिआंगते जी की तमाम रचनाओं में से नाटक से ही इनको अधिक प्रसिद्धि मिली है। 1991 में मिज़ो समाज में नाटक पर सबसे पहले पी-एच.डी. पाने वाले शोध कर्ता हैं।

इनकी निम्नलिखित नाट्य रचनाएँ हैं : - Nu leh Pa Bum–Mahniinbum, 1983 (हिंदी अनुवाद-माता पिता को धोखा-अपने आप को धोखा देना); Thawmmawia, 1984 (हिंदी अनुवाद - थोम मोइया) Fakitechhung, 1987 (हिंदी अनुवाद - फ़की का परिवार), Duhawmna leh Lalfaki, 1990 (हिंदी अनुवाद- सुंदरता और ललफ़की), Hnehzova leh Rimawii,1991 (हिंदी अनुवाद - न्हेजोऊआ और लेहरिनओमी), Chanchintha

Meichher,1994 (हिंदी अनुवाद – अनमोल कथा की चिंगारी), LalnuRopuiliani, 1994 (हिंदी अनुवाद- महारानी रोपईलिआनी), Thawmvunga, 1994 (हिंदी अनुवाद– थोमवुंङा), Chharmawia,1997 (हिंदी अनुवाद-छरमोइया), Zorama, 1997 (हिंदी अनुवाद- जोरमा), Pasaltha Khuangchera, 1997(हिंदी अनुवाद - शूरवीर खुआङचेरा), Tualvungi leh Zawlpala,1999 (हिंदी अनुवाद - तुअलवुङी और ज़ोलपला), Balhla leh Zawlpala,1999 (हिंदी अनुवाद - बअलहला और ज़ोलपला) BuaiaSai-ip, 2001 (हिंदी अनुवाद- बुईआ का साईं-इप), KumSangbiTharahchuan, 2001 (हिंदी अनुवाद- नए साल पर), DuatLuatVangin, 2001 (हिंदी अनुवाद - स्नेह के कारण), Beidawnna khur Atangin, 2001 (हिंदी अनुवाद - हिम्मत हारने के बाद), Hamlet in Mizo (Translated into Mizo, 2002 (हिंदी अनुवाद - हमलेट और मिज़ो), Sakei Lu lam, 2012 (हिंदी अनुवाद – शेर के सिर पर नृत्य), Lalawmpuii (Dramatised Biakliana'story, 2012 (हिंदी अनुवाद - ललओमपुई नाटकीय बिअकलिआना की कहानी), Pasaltha khuangchera, 2012 (हिंदी अनुवाद- शूरवीर खुआङचेरा), Zofate Zingah Hamleta, 2016 (हिंदी अनुवाद - ज़ोफाते जिङा हमलेट), Puithiam Sathaukhawnvar Chhitnna, 2016 (हिंदी अनुवाद-पुजारी का दीया), MilimPathum, 2016 (हिंदी अनुवाद – तीन मूर्तियाँ)।

इनके अलावा डॉ.खिआंगते जी ने कई लेख लिखे हैं। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी ने तीस (30) से अधिक नाटक लिखे हैं। उनमें से 24 नाटक मिज़ो भाषा में छप चुके हैं और

हिंदी में 16 से अधिक अनुवाद हो गए हैं। इनके द्वारा रचित नाटकों का मंचन कम से कम 500 बार हो चुका है। आईजोल और मिज़ोरम के कई जिले-गाँव तथा शिलांग, गुवाहाटी, श्रीरामपुर, कोलकाता तथा नई दिल्ली में कई जगह मंचन किया जा चुका है। इनके द्वारा लिखित पुस्तकों में से 10 पुस्तकें मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल; मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल; नॉर्थ ईस्टार्न हिल यूनिवर्सिटी 'नेहू' विश्वविद्यालय तथा कई विश्वविद्यालयों में स्नातक (बी.ए) तथा स्नातकोत्तर (एम.ए.) की पाठ्य पुस्तकों के रुप में चयनित हैं। इसके अलावा इनकी कई पुस्तकें उच्च माध्यमिक विद्यालयों और शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं।

द्वितीय अध्याय **'शेर के सिर पर नृत्य'नाटक का तात्विक विश्लेषण'**है। इसके अंतर्गत सात उप अध्याय रखे गए हैं।

- **कथावस्तु**
- **पात्र विधान**
- **संवाद**
- **देशकाल वातावरण**
- **अभिनेयता**
- **उद्देश्य**
- **शीर्षक**

प्रथम उप अध्याय **'कथावस्तु'** है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का कथानक मिज़ो की एक लोक परंपरा पर आधारित है जिसके अंतर्गत यह बताया गया है कि प्राचीन काल में मिज़ो समाज के लोगों का मानना था कि शेर (बाघ) सब कुछ जाननेवाला होता है। यहाँ तक कि घर के भीतर हो रहे संवादों को भी जंगल में रहकर सुन लेता है। उसे भगवान 'खुआवांग' की तरह

सब कुछ जानने वाला मानते थे। हत्या, व्यभिचार तथा चोरी इत्यादि की घटना को जानने वाला मानते थे। यह भी माना जाता था कि परपुरुष गामिनी अपने कुकर्म को छुपाएगी तो उसे शेर का शिकार बनना पड़ता है। व्यभिचारिन जो औरों के सम्मुख अपने कुकर्म को ज़ाहिर करने की हिम्मत न रखती हो, तो उसको चाहिए कि वह किसी वृक्ष को ही अपने कुकर्म के बारे में बता दे।

इस प्रकार की मान्यता रखने के कारण शिकारी भी शेर की बहुत इज्जत करते थे और उसका यों ही शिकार नहीं करते थे। जंगल जाते समय यदि शेर आतंक मचाए या किसी मनुष्य या पशु को मारे, तब ही उसका शिकार करना अनिवार्य मानते थे। यदि शेर पालतु पशु यथा- सूअर, बकरी, मिथुन (गयाल), गाय, बैल आदि का शिकार करता है, तब उस शेर को मार गिराया जाता है। शेर को मार गिराए जाने पर 'आई' नामक अनुष्ठान के लिए अन्य पालतु पशु को मारकर सम्पूर्ण गाँव या नगर वालों को सामूहिक भोज करवाया जाता था। मारे गए शरारती शेर के साथ अनेक पशुओं को मारकर अनुष्ठान करना साधारण लोगों के वश की बात न होने के कारण गाँव/नगर के धनवान व्यक्ति, राजा या मन्त्री के द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न कराया जाता। उपर्युक्त आतंकी शेर को मार गिराने के दिन ही तत्काल 'आई' क्रिया करना सम्भव नहीं हो पाने के कारण अन्य दिन में यह क्रिया करनी होती है। उस शेर की खाल को निकालकर माँस की जगह भूसा भर दिया जाता है और भूसा भरने पर ठीक से सिलाई करते हैं, बाद में उसे धूप में सुखा देते थे और सूखने के बाद वह जीवित शेर जैसा दिखता है।

शेर के सिर पर नृत्य करने के दिन सभी कार्यों से छुट्टी ली जाती थी, ताकि ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति जंगल जाए और किसी अन्य शेर का शिकार बने। दिन के लगभग दस बजे शेर

के सिर पर नृत्य करने के निमित्त अनुष्ठानकर्ता के घर में, जिनके पास मदिरा का मटका होता, वे उसे ले आते हैं। मदिरा पीकर गीत गाने लगते हैं। भोजन के समय मरे शेर को उठाने के लिए बाँस को लगभग चार हाथ लम्बा काट कर दो तरफ रख देते हैं और उसके ऊपर अन्य काटे गए बाँसों को उन लम्बे बाँस के ऊपर फैलाकर रख दिया जाता है। तब उन बाँस के ऊपर शेर को पेट के बल लिटाया जाता और चार व्यक्ति द्वारा उसे उठाया जाता है। स्त्री रूप धरने वालों के पीछे अलग-अलग प्रकार के घंटे वादक और मिथुन की सींग बजाने वाले आते हैं। वे धीरे धीरे रंगभूमि की और जाने लगते हैं। वहाँ पहुँचने पर किसी कोने में एक-एक करके आसन जमाते हैं।

इस नृत्य में एक अद्‌भुत चीज पुरुषों द्वारा स्त्री रूप धारण करना है। मिज़ो समुदाय के अनेक नृत्यों की तुलना में यही एक नृत्य है जहाँ पुरुषों द्वारा स्त्री रूप धारण किया जाता है। स्त्री रूप धरने का आशय यह है कि पहले के ज़माने में सात भाइयों की इकलौती बहिन थी। वे अपनी इकलौती बहिन को बहुत प्रेम करते थे। शिकार करते समय अन्य युवकों के साथ जाते हुए भी उन्हें अपनी बहिन का बहुत ख्याल रहता था कि कहीं शेर उनकी बहन को पकड़ न ले। इसलिए वे सात भाई अपनी बहिन को अपने साथ ही लेकर चलते थे। एक दिन अचानक खेतों में जाते समय उनकी बहिन शेर का शिकार बन जाती है। शेर उनकी बहिन को घायल कर देताहै और बिना मारे उसे एक बड़े से पत्थर के ऊपर खड़ाकर रखता है। उनकी घायल बहिन को शेर के द्वारा छेड़ते हुए देखकर सात भाइयों को बहुत गुस्सा आता है और उस शेर को अपने बंदूक से उड़ा देते हैं। शेर मर तो जाता है; परंतु वे भाई अपनी बहिन की जान बचा नहीं पाते हैं। इस घटना को लेकर जब भी 'शेर के सिर पर नृत्य' का आयोजन किया जाता है तो पुरुष वर्ग उन भाइयों की बहिन की प्यार भरी याद में स्त्री रूप धारण करते हैं।

इस तरह 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक की कथावस्तु में पूर्वकाल की मिज़ो संस्कृति और परंपरा की झाँकी को प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय उप अध्याय '**पात्र विधान**' है। नाटक के पात्रों की चारित्रिक खूबी के साथ नाटक गति पाता है। पूर्वकाल के मिज़ो जाति के लोग सच्चे, व्यवहार कुशल, निः स्वार्थ भाव वाले, सद्आचरण वाले, वीर योद्धा प्रजा की रखवाली करने वाले होते थे। प्रजा राजा की सेवा करने वाली और राजा भी प्रजा की देखभाल करने वाला होता था। विवेच्य नाटक में पात्र विधान के अंतर्गत सात पात्र हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताओं को उनके कार्यकलापों के माध्यम से विश्लेषित किया गया है।

1.**उद्घोषक -** मिज़ो समाज में पूर्वकाल से आज तक उद्घोषक होते आए हैं। उद्घोषक को हर सूचना, चाहे वह दुर्घटना की सूचना हो, दुःख या ख़ुशी की हो, उद्घोषक को उस बात की सूचना देना पड़ती है।

2. **युवकगण –** पूर्वकाल में मिज़ो जाति के युवक अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाते थे। अपनी गाँव की रक्षा करते थे। उनके हाथ में उनके गाँव की सुरक्षा होती थी। इसलिए गाँव के लोग युवकों को बड़ा आदर-सम्मान दिए करते थे। राजा के आदेश का पालन करना, पूर्वजों का आदेश का पालन करना, उनका सम्मान करना, गाँव की रखवाली करना अर्थात जंगली जानवरों से गाँव की रखवाली करना युवकों का काम होता था। पूर्वकाल में युवक बड़े ही वीर और निःस्वार्थी होते थे।

3. **राजा –** पूर्वकाल में राजा के द्वारा ही गाँव चलता था। राजा को अपनी प्रजा से बहुत प्रेम होता था। गाँव वाले भी अपने राजा से प्रेम करते थे। राजा अपने कर्त्तव्य का बहुत ही अच्छे ढंग से निर्वहन करता था। राजा के बिना कोई भी कार्य संपन्न नहीं किया जाता था। राजा के संवादों के माध्यम से यह प्रतीत होता है कि राजा एक आदर्श व्यक्ति के रूप में नाटक में चित्रित है।

4. **महामंत्री –** महामंत्री के पात्र विधान में एक आज्ञाकारी मंत्री के गुण मिलते हैं। राजा जिस प्रकार अपनी प्रजा से प्रेम करते हैं। उसी प्रकार मंत्री भी अपने प्रजा से प्रेम करते हैं। पूर्वकाल के मिज़ो राजा के मंत्री कभी भी अपने राजा का स्थान लेने की कोशिश नहीं करते हैं। मंत्री हमेशा राजा के साथ राजा के हर फैसले में उसका साथ देते हैं।

5. **वृद्ध** - प्रस्तुत नाटक में वृद्ध प्रेमपूर्ण स्वभाव के और विनम्र व्यक्ति हैं। वृद्ध की चारित्रिक विशेषताएँ राज्य हितकारी नागरिक के समान दिखलाई पड़ती हैं। राजा जिस तरह अपनी प्रजा के हित में चिंतनशील रहता है, उसी तरह वृद्ध भी अपनी उम्र से छोटे नागरिकों के लिए वत्सल भाव रखते हैं।

6. **बच्चे-** 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में जिस प्रकार बच्चे वृद्ध से सवाल करते है, उससे बच्चों की प्रश्निल चेतना का पता चलता है। बच्चे के स्वभाव में सवाल ही सवाल होते हैं। सवाल ही सवाल उपजते हैं। बच्चे हर नई चीज़ की जानकारी पाना चाहते हैं। जिस प्रकार पूर्वकाल में बच्चों की देखभाल और उनको क्या सीख मिलती है, यह सभी जानकारी इस नाटक के पात्र बच्चों के माध्यम से मिलती है।

7) **योद्धा–**पूर्वकाल में अक्सर युद्ध हुआ करता था। इसलिए राजा को अपने गाँव की रक्षा के लिए योद्धा तैयार करने पड़ते थे। योद्धा भी अपने राज्य की सुरक्षा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपना कर्त्तव्य पूरा करते थे। इस बात को नाटक के योद्धा के पात्र माध्यम से वर्णित-चित्रित किया गया है। उनके सम्मान में मिज़ो भाषा में यह कहा जाता है कि- mi that leh muvanlai chuanga leng tunge awm?

तृतीय उप अध्याय **'संवाद'** है। नाटक के संवाद मिज़ो लोक परंपरा के अनुसार पात्रोनुकूल हैं। नाटक के संवाद नाटक की कथावस्तु को गति प्रदान करने का कार्य करते हैं। नाटक के संवादों की विशेषताओं में संक्षिप्तता, सहजता, गत्यात्मकता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। नाटक में वर्णित कथोपकथनों को सामयिक संदर्भों के साथ उभारा गया है। नाटक के संवादों में स्वाभाविकता, मार्मिकता और सरलता के गुण सहज ही देखने को मिलते हैं। संवादों में स्थानीय भाषा और शैली का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

चौथे उप अध्याय **'देशकाल वातावरण'** के अंतर्गत नाटक का तत्कालीन परिवेश के संदर्भ में मूल्यांकन किया गया है। तत्कालीन परिवेश के अनुसार नाटक में विभिन प्रकार के दृश्य अंकित हैं। शेर का शिकार करना, पहाड़, जंगल, राजा का दरबार, नृत्य आयोजन शाला, मदिरा पीना, सामूहिकता की प्रस्तुति आदि नाटक के परंपरावादी दृष्टि से अनुप्राणित है। बिना देशकाल की सजीवता के नाटक के कथ्य में वह प्रामाणिकता नहीं आती। देशकाल के सजीव दृश्यों से नाटक में लोक परंपरा के दृश्यों को दिखाने में नाट्य लेखक सफल हुआ है। मिज़ो समाज के वातावरण-परिवेश की यथार्थ झांकी इस नाटक में मिलती है।

पाँचवाँ उप अध्याय **'अभिनेयता'** है। जिसके अंतर्गत नाटक में कथन, घटना विस्तार, भाषा की क्लिष्टता, वस्तु विधान, संवाद, दृश्य संयोजन, रंग निर्देशक आदि सभी बातों से इसकी रंगमंचीयता को प्रकट किया गया है। नाटक के प्रत्येक पात्रों के अभिनय में मिज़ो जाति की पूर्वकाल के लोगों के अभिनय की झलक मिलती है। अभिनय को नाटक प्राण तत्व भी माना गया है। जैसा कि पूर्व में भी उल्लेख हो चुका है कि विवेच्य नाटक का कई बार मंचन भी हो चुका है। इससे इस बात का पता चलता है कि विवेच्य नाटक मिज़ोरम की लोक परंपरा से जुड़े होने के कारण यहाँ के स्थानीय निवासी इसे बड़े चाव से देखते रहे हैं और साथ ही इसका

मंचन भी अपने-अपने स्तर पर करते भी रहे हैं। विवेच्य नाटक के सभी पात्र अभिनय की कसौटी पर स्थानीय परिवेश के अनुकूल प्रतीत होते हैं।

छठा उप अध्याय '**उद्देश्य**' है। नाटक में ऐसे संदेशों को संप्रेषित करने का प्रयास किया गया है जिसके द्वारा हम अपने जीवन में उत्कर्ष लाते हुए विश्व के संघर्षपूर्ण वातावरण से जूझने की क्षमता प्राप्तकर सकते हैं। इस नाटक के द्वारा आज की नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत और लोक परंपरा को हमेशा ऊँचा रखने का संदेश दिया गया है। बस, अपनी रूढ़िवादिता को छोड़कर। पूर्वकाल के लोगों के दिल में जिस प्रकार से प्रेम, त्याग, भाईचारे, निः स्वार्थ, साहस, वीरता आदि की भावना विराजमान रहती थी, वैसी ही भावना आज की पीढ़ी में जागृत हो, इस उद्देश्य को पूरा करने में नाटक के पात्र अपने संवादों के माध्यम से भरसक कोशिश करते हैं।

सातवाँ उप अध्याय '**शीर्षक**' है। जिसके अंतर्गत नाटक के शीर्षक पर विचार किया गया है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक एक लोक परंपरा से जुड़ा होने के कारण और पूर्वकाल में मिज़ो जाति में शेर के सिर पर नृत्य का अनुष्ठान किया जाता था। उसी संदर्भ को लेकर नाटक का नामकरण किया गया है। नाटक की कथावस्तु में देखा जाए तो शेर जो मारने के बाद उसके चारों तरफ घूमकर, विशेषकर उसके सिर की तरफ घूम-घूमकर नृत्य किया जाता है। वह कथानक से पूरी तरह स्पष्ट होता है। इस मायने में यह नाटक अपने शीर्षक तत्व की कसौटी पर अपने नामकरण को लेकर पाठकों और दर्शकों की स्वीकार्यता बनाता है।

तृतीय अध्याय **'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक की संवेदना एवं शिल्प'** है। जिसके दो उप अध्याय है। प्रथम उप अध्याय में '**संवेदना**' में स्थानीय लोक उत्सव का स्वरूप, राजतंत्रीय

(मुखिया) व्यवस्था का स्वरूप, मिजोरम की लोक परंपराओं की व्याख्या, प्राकृतिक परिवेश और मनुष्य का सहचरी भाव को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय उप अध्याय '**शिल्प**'में नाटक की भाषा को लेकर विवेचन-विश्लेषण किया गया है। संस्कृतनिष्ठ शब्द (तत्सम शब्द), हिन्दी शब्द (तद्भव शब्द), विदेशी शब्द और मिज़ो शब्द आदि को रेखांकित-वर्गीकृत किया गया। इस नाटक की भाषा में बहुत से मिज़ो शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे:- दरबू, दरमंग, तुइबुर, एमपिंग, चेमपुई, सेलुफन आदि। कथात्मक शैली, वर्णात्मक शैली, संवाद शैली और प्रश्नोत्तर शैली से नाटक के शिल्प में कसावट लाने की कोशिश हुई है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक वर्तमान में पशु वध के रूप में अपनी कोई प्रासंगिकता नहीं रखता। पर, मिज़ो की लोक कथा और यहाँ के समाज-संस्कृति की विशेषताओं पर आधारित होने के कारण इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। आज भले ही मिज़ो समुदाय में इस नृत्य का आयोजन नहीं किया जाता। पर, इस नृत्य के आयोजन को लेकर स्थानीय उत्सवधर्मिता के भरपूर रंग इस नाटक में देखने को मिलते हैं। यह माना जाता है जब ब्रिटिश सरकार ने मिज़ो समुदाय पर कब्जा किया था। तब ब्रिटिश सरकार ने मिज़ो जाति के राजा पर अपना पूरा अधिकार जमाकर वीर योद्धाओं को अपनी सेना में शामिल किया। युद्ध के कारण विभिन्न देशों में रहकर उनके व्यवहार, रहन-सहन आदि में परिवर्तन आये। जिसके चलते मिजो समाज में बदलाव हुए और धीरे-धीरे ऐसी कई परम्पराएँ मिजो समाज से दूर होती चली गईं।

संक्षेप में कहें तो विवेच्य नाटक हिन्दी में अनूदित होकर मिज़ो समाज के जनजीवन की लोक-परम्पराओं, संस्कृति और लोकाचारों को बड़ी संजीदगी और जीवंतता के साथ हिन्दी समाज के समक्ष रख पाने में सफल हुआ है।

संदर्भ:

1. Hnamte Isaac & Lalsangzuala, A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,B-43, Fakrun, Mission Veng Aizawl, Mizoram:Swapna Printing Works Pvt. Ltd.Kolkata, 2011.पृ.118
2. वही, पृ. 119
3. वही, पृ. 120
4. वही, पृ. 120
5. वही, पृ. 121
6. वही, पृ. 122
7. वही, पृ. 126
8. वही, पृ. 126

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ :

1. शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम-III, नाटयकार- डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, अनुवादक – श्रीमत रमथङा खोलह्रिंग, Loise Bet Print & Publication, Aizawl, 2019

सहायक ग्रंथ:

हिंदी पुस्तकें:

1. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ल्ली, 2001
2. डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
3. डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी (सं.), अनुवाद विज्ञान, समीक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
4. डॉ. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, साहित्य निधि, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982
5. सी. कामलोवा, मिज़ो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास, Mualchhin Publication and Paper Work, Aizawl, 2016
6. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत: अतुल्य भारत, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2021
7. वीरेंद्र परमार, उत्तर-पूर्वी भारत के आदिवासी, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020
8. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत के पर्व त्योहार,मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020,
9. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक आयाम, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020
10. वीरेंद्र परमार, मिजोरम: लोकजीवन और संस्कृति, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2021
11. आलोक सिंह, पूर्वोत्तर की जनजातियाँ और उनका लोकजीवन, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2021
12. सुनील सिंह, पूर्वोत्तर समाज और संस्कृति, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2020

13. वीरेंद्र परमार, अरुणाचल का लोकजीवन, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2003
14. वीरेंद्र परमार, अरुणाचल के आदिवासी और उनका लोकसाहित्य, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009
15. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत की नागा और कुकी-चीन जनजातियाँ, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2021
16. वीरेंद्र परमार, अरुणाचल प्रदेश: लोकजीवन और संस्कृति, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
17. वीरेंद्र परमार, उत्तर-पूर्वी भारत का लोक साहित्य (2021)-मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
18. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017
19. डॉ रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009
20. डॉ.नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1980
21. डॉ.हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य, विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1985
22. नंदकिशोर नवल, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
23. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2004
24. मोहन राकेश, साहित्य और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, आगरा, 2018
25. महादेवी वर्मा, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2011
26. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, 2018
27. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
28. रमणिका गुप्ता, (सं.), आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
29. माता प्रसाद, पूर्वोत्तर भारत के राज्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998
30. गंगा सहाय मीणा, आदिवासी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014

मिज़ो ग्रंथ:

1. Chaldailova, R.Mizo Pi Pute Khawvel, Mizo Pi Pute Lenlai, Aizawl, 2011
2. Dokhuma, James. Hmanlai Mizo Kalphung. Aizawl: Hmingthanpuii. Gilzom Offset 2nd Edition, 2008.
3. Khiangte Laltluangliana. Chantual Ennawm -2 (Lali & Sakei lu lam). Aizawl: L.T.L Publication. 2012
4. Lalthangliana, B. Mizo Culture. Aizawl: Gilzom Offset.2013
5. Lalthantlanga. "Folk Theatre leh Khawtlang Nun Zirchianna" Mizo Studies Vol. V No 2, Aizawl, 201
6. Zatluanga. Mizo Chanchin Aizawl: Royal Press. 1966
7. Colney Lalzuia & Lalthianghlima, Mizo Thu leh Hla cl-IX &X, Mizoram Board of School Education, Thankthing Bazar Press 1999.
8. Dokhuma, James, HManlai Mizo Kalphung, Electric veng, Aizawl: R.Lalrawna, 2015.
9. Duhsaka, V.L,Mary WINCHESTER (ZOLUTI)& Isreal-Mizo,Sabbath vrs Sunday, Krishmas, Good Friday etc. L.R.Offset& Flex Printing Canteen Kual Dawrpui, Aizawl, 2013.
10. Dokhuma, James& Pu Lalthangfala Sailo, Mizo Class-IX, Mualchin Publication and Paper Work, Peter's Street khatla, Aizawl, 2001.
11. Laltluangliana Khiangte, THU LEH HLA THLIFIMNA LAM, L.T.L Publication, Mission Veng, 2016.

12. Dr. Laltluangliana Khiangte, Saitual Centenary 1915-2015 Souvenir, Gilzom offset Electric Veng, Saitual Centenary sub-Committee, 2015.
13. Hnamte Isaac & Lalsangzuala, A PROFESSORS PADMA SHRI SOUVENIR, B-43, Fakrun, Mission veng Aizawl, Mizoram: Swapna Printing Works Pvt.Ltd Kolkata, 2011.
14. Lalauva, R Mizo MiBikte, Upper Bazar: R Lalauva, Maranatha, 2010.
15. Lianhmingthanga, Mizo Pasalthate, Rajinder Nagar new Delhi: Tribal Research Institute Department of Art & Culture, Government of Mizoram, 2004.
16. Laithanga, C, Mizo Khua, Chanmari: L.V Art, 2002.
17. Lianthanga,C, HMANLAI MIZO NUN, 1998.
18. Lalthangliana, B, Pi Pu Zunleng 2007.
19. Lalbiakliana,C, Zawlbuk Ti Ti, Milan Computerise,2000
20. Lalthangliana,B, & Lalthangliana, B, Mizo hnam zia leh Khawtlang nun siam that, 2016.
21. Lianhmingthanga, F, & Lalthangliana, F, Mizo nun hlui Part – 1 Pawl Riat zirlai, 1996.
22. Lalbiakliana,H.K.R, Pasalthate Chanchin, Khatla: H.R.K Lalbiakliana, 2006.
23. Lalhruaitluanga, Ralte, Thangliana, Aizawl: Art & Culture Department Govt. Of Mizoram, 2013.

24. Liankhaia, Rev, Mizo AWMDAN HLUI & MIZO MI LEH THIL HMINGTHANGTE LEH MIZO SAKHUA, L.T.L Publication Mission Veng, 2008.
25. Liangkhaia, Rev, Mizo Chanchin, L.T.L Publication, Felim Computer B- 43, Fakrun, Mision veng 2002.
26. Lalthangliana, B, Laithanga. C, Lalchungngunga, Hluna J.V, Lalsangliana, F, Mizo Hnam Zia Leh Khawtlang nun siam thatna, The Synod Publication Board Aizawl, Mizoram. Synod Press Aizawl, 1988.
27. Lalthangliana,B,Zotui, M. C Lalrintluanga RTM Press Chhinga Veng Aizawl, 2006.
28. Sailo Lalsangzuali, Class X Mizo Puitu, AJBP Publication, Hnamte Press Khatla 2009.
29. Siama, V.L. Mizo History, Lengchhawn Press, Khatla, 2009.
30. Zawla.K, Mizo Pi Pute leh an thlahte chanchin, Gosen Press Mission veng: Aizawl, 1989.
31. Zawla.K, Mizo Pi Pute leh an thlahte chanchin, zomi book agency, Samuel Press Electric Veng.
32. Vanlallawma, C, Bengkhuaia Silo, Lengchhawn Press, Mission veng 1996.
33. Thanga, Selet, Pi Pu Len, Bara bazaar, Aizawl: Lianchhungi Book store, 1989.

अंग्रेजी ग्रंथ:

1. Dr. Laltluangliana khiangte, Mizos of North East India. An Introduction to Mizo Culture,Folklore Language & Literature, L.T.L Publication, Mission Veng, 2008
2. Dr. Laltluangliana khiangte, TRIBAL CULTURE AND FOLKLORE AND LITERATURE, Krishna Mittal for Mittal Publication, New Delhi, 2013

कोश :

1. डॉ. सी. ई. जीनी, हिन्दी-अँग्रेजी मिज़ो शब्दकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
2. कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय व मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बृहत हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2000
3. एस.के.पूरी, आशा पूरी व सुमन ओबेरॉय, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, साहनी पब्लिकेशंस, 2015

पत्र-पत्रिकाएँ :

1. कंचनजंघा, संपादक – डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, जनवरी-जून, 2020
2. समन्वय पूर्वोत्तर, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग, अक्तूबर- दिसंबर, 2011
3. साहित्य परिक्रमा (कथा विशेषांक), क्रांति कनाटे (संपादक), ग्वालियर, अक्टूबर-दिसंबर, 2015
4. अक्सर, हेतु भारद्वाज (संपादक), जयपुर, अप्रैल-सितंबर, 2015
5. मधुमती, ब्रजरतन जोशी (संपादक), राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, अंक – 1, जनवरी, 2020

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

‘SHER KE SIR PAR NAITYA’ NATAK KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

[मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम.फिल.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध]

वानललङइजुआली

VANLALNGAIHZUALI

MZU Regd. No. 1905369

M.Phil. Regd. No. MZU/M.Phil./623 of 29.05.2020

हिंदी विभाग

शिक्षा और मानविकी संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF EDUCATION AND HUMANNITIES

नवंबर, 2021

NOVEMBER, 2021

शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

'SHER KE SIR PAR NAITYA' NATAK KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तुतकर्ता

वानललङइजुआली

हिन्दी विभाग

VANLALNGAIHZUALI

Department of Hindi

शोध निर्देशक

डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा

हिन्दी विभाग

Dr. Akhilesh Kumar Sharma

Department of Hindi

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के शिक्षा और मानविकी संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम. फिल.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of Master of Philosophy in Hindi of Mizoram Uuniversity, Aizawl

डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइजॉल – 796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Dr. Akhilesh Kumar Sharma
Assistant Professor
Department of Hindi
Mizoram University
Aizawl - 796004

Mob.No.-9413224221/7597525190; Email:akhileshksharma82@gmail.com; Website : www. mzu.edu.in

दिनांक: .11. 2021

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **वानललङइजुआली** ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल की **मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम.फिल.- हिन्दी)** की उपाधि हेतु **'शेर के सिर पर नृत्य नाटक' का विश्लेषणात्मक अध्ययन'** विषय पर शोध कार्य किया है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी की निजी गवेषणा का प्रतिफल है। यह इनका मौलिक शोध-कार्य है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध या इसके किसी अंश को किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल की **मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम.फिल.-हिन्दी)** की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करता हूँ।

(डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा)
शोध निर्देशक

हिन्दी विभाग
मिजोरम विश्वविद्यालय
आइज़ोल

नवंबर, 2021

घोषणा पत्र

मैं **वानललङइजुआली** एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की विषय सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध कार्यों का परिणाम है। इस शोध- सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, किसी अन्य को उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह लघु शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय/संस्थान में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के सम्मुख हिंदी विषय में **मास्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (एम. फिल.- हिन्दी)** के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(वानललङइजुआली)
शोधार्थी

(प्रो. संजय कुमार)
अध्यक्ष

(डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा)
शोध-निर्देशक

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन i - iii

प्रथम अध्याय: डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते का जीवन और रचनाधर्मिता 1 - 15

(क) डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के जीवन के विविध फलक

(ख)डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते की रचनाधर्मिता का विकास

द्वितीय अध्याय: 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का तात्विक विश्लेषण 16 - 87

(क) कथावस्तु

(ख) पात्र-विधान

(ग़) संवाद

(घ) देशकाल-वातावरण

(ङ) अभिनेयता

(च) उद्देश्य

(छ) शीर्षक

तृतीय अध्याय: 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक : संवेदना और शिल्प 88 - 115

(क) संवेदना

(ख) शिल्प

उपसंहार: 116 – 117

संदर्भ-ग्रंथ-सूची 118 -123

बायोडाटा

अनुसंधित्सु का विवरण

प्राक्कथन

'शेर के सिर पर नृत्य' डॉ. ललत्लुआङलियाना खिआंगते द्वारा लिखा गया एक मिज़ो नाटक है। इस नाटक का हिंदी में अनुवाद (सन् 2019 में) श्रीमत रमथङा खोलहरिंग द्वारा किया गया।

यह नाटक मिज़ो लोक परंपरा के एक लोक नृत्य पर आधारित है। मिज़ो समाज में प्राचीन काल में उनके पूर्वज शेर को अपना भगवान जैसा समझते थे। शेर को बहुत ही ऊँचा दर्जा दिया जाता था और शेर को सब कुछ जानने वाला समझा जाता था। प्राचीन काल में मिज़ो जाति का पेशा शिकार करना होता था; लेकिन शेर का शिकार नहीं किया जाता था। केवल जंगली शेर को गाँव में आंतक मचाने पर मार गिराया जाता था।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में नृत्य के अलावा मिज़ो समाज एवं संस्कृति की जातिगत विशेषताओं, रीति-रिवाज और रूढ़ियों आदि का भी चित्रण है। इस नाटक में मिज़ो वीरों की गाथा और जनजातियों की सामाजिक विशेषताओं आदि को उद्घाटित किया गया है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक को मिज़ो लोक परंपरा को उद्घाटित करने वाला नाटक कहा जा सकता है, जिसमें वास्तविकता और काल्पनिकता का मणिकांचन मिश्रण है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर केन्द्रित है। प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय **'डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते का जीवन और रचनाधर्मिता'** है। जिसके प्रथम उप अध्याय **'डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के जीवन के विविध फ़लक'** के अंतर्गत खिआंगते जी के जन्म, शिक्षा-दीक्षा, पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन आदि का विवेचन किया गया है। द्वितीय उप अध्याय **'डॉ.ललत्लुआङलिआना खिआंगते की रचनाधर्मिता का विकास'** के अंतर्गत रचनाकार की रचनाधर्मिता के विकास को दर्शाया गया है।

द्वितीय अध्याय **'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का तात्विक विश्लेषण'** है। इसके अंतर्गत सात उप अध्याय रखे गए हैं। प्रथम उप अध्याय में नाटक की **'कथावस्तु'** की विवेचना की गई है। द्वितीय उप अध्याय में **'पात्र-विधान'** के अंतर्गत नाटक में चित्रित चरित्रों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय उप अध्याय में **'संवाद'** के अंतर्गत नाटक में वर्णित कथोपकथनों को सामयिक संदर्भों के साथ उभारा गया है। चतुर्थ उप अध्याय में **'देशकाल वातावरण'** के अंतर्गत नाटक का देशकाल वातावरण के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया गया है। पंचम उप अध्याय में **'अभिनेयता'** के अंतर्गत नाटक का अभिनयशीलता के आलोक में मूल्यांकन किया गया है। पष्ठ उप अध्याय **'उद्देश्य'** के अंतर्गत नाटक के उद्देश्य की सफलता पर विचार किया गया है। सातवाँ उप अध्याय **'शीर्षक'** के अंतर्गत नाटक के शीर्षक की सार्थकता को मिज़ो समाज की परंपरा और नाटक के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय **'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक : संवेदना और शिल्प'** है। जिसके प्रथम उप अध्याय **'संवेदना'** के अंतर्गत मिज़ो समाज की लोक परंपरा, संस्कृति, लोकाचार को विश्लेषित किया गया है। साथ ही नाटक के मर्म को उजागर किया गया है। द्वितीय उप अध्याय में **'शिल्प'** के अंतर्गत भाषा शैली की विवेचना की गयी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध सहायक आचार्य डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा (हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल) के निर्देशन में पूर्ण हुआ है। मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। उनके स्नेहशील, सतत प्रेरक और परामर्शपूर्ण व्यक्तित्व के फलस्वरूप ही यह शोध कार्य पूरा हुआ है। मैं जब भी कोई समस्या लेकर अपने आचार्य के पास गई हूँ, उनका हमेशा मुझे सहयोग और प्रोत्साहन मिला है। मैं अपने आचार्य के प्रति विशेष कृतज्ञता का अनुभव कर यह कामना करती हूँ कि उनका स्नेह मुझ पर सदा बना रहे।

हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय के अपने आदरणीय गुरुजनों – प्रो. सुशील कुमार शर्मा (आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग), प्रो. संजय कुमार, डॉ. सुषमा कुमारी और डॉ. अमिष वर्मा सभी

के प्रति मैं दिल से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर बहुमूल्य सुझाव एवं सहयोग देकर प्रस्तुत लघु शोध को पूर्णता तक पहुँचाने में मेरी मदद की।

मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों और मित्रों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनकी आत्मीयता से मैं अपने शोध कार्य को पूर्ण कर यहाँ तक पहुँची हूँ।

25 नवंबर, 2021 **(वानललङइजुआली)**

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल शोधार्थी

प्रथम अध्याय

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते का जीवन और रचनाधर्मिता

1.1 डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के जीवन विविध फलक :

जन्म :

"डॉ. ललत्लुआङलिआना का जन्म 28 जून सन् 1961 में साईतुअल गाँव ('साईतुअल' गाँव अब मिज़ोरम का जिला बन गया है) में हुआ। डॉ. ललत्लुआङलियाना के परदादा रेवरेन लिआङखाया (Rev.liangkhaia) का इकलौता पुत्र जिसे एक अबला विधवा ने दुर्भाग्य स्थिति में पाला और वे मिज़ो समाज में सबसे पहले पादरी, प्रसिद्ध लेखक थे। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते के पिता का नाम श्री उपा त्लआह्लिंगथाङा (Upa Tlanghmingthanga) जो (Ex-Hav. Clerk, Ex-Asst. Headmaster, Ex–synod Music Instructor) और माता का नाम श्री दारङेनी (Darngeni khawlhring) था।"[1] डॉ. ललत्लुआलिआना खिआंगते अपने सात भाई-बहनों में पाँचवें स्थान पर हैं। इनके माता- पिता का कहना था कि ये बचपन से ही बहुत ही आज्ञाकारी हैं। इन्होंने बहुत ही कम उम्र में अनेक किताबें लिखी और प्रकाशित भी हुईं।

विवाह और परिवारिक जीवन :

डॉ. ललत्लुआलिआना खिआंगते का विवाह 9 सितम्बर, 1987 में ललरमह्लुनी राल्ते (lalramhluni Ralte) [पिता - सिअकएङ थाङह्लिरा लेड की बेटी] से मिशन वेंङ गिर्जाघर

में विवाह हुआ। इनके चार बेटे हुए - एल.ति.एल. फेला, एल.ति.एल. फका, एल. ति. एल. फिमा, एल. ति. एल. फाला। डॉ.लल्लुअंगलिआना खिआंगते जी के माता और पिता ने 86 उम्र तक अपने बेटे का साथ निभाया और आज डॉ.खिआंगते जी अपनी पत्नी और चार बेटों के साथ एक खुशी जीवन बिता रहे हैं।

शिक्षा:

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी का जिस गाँव में जन्म हुआ। वही साईतुअल से इनकी शिक्षा शुरु हुई। इनके पिता जी को साईतुअल से वाईरेङते में ट्रांसफर हो गया। और यहीं से सरकारी प्राथमिक विद्यालय से कक्षा तीन की पढ़ाई पूरी की। "1973 में कक्षा छठवीं (scholarship Examination) में पूरे मिज़ोरम में प्रथम श्रेणी से स्थान प्राप्त किया। 1974–78 तक डॉ. खिआंगते जी ने आइजोल के मिज़ो सिनॉड उच्च विद्यालय में अपनी पढ़ाई की और प्रथम श्रेणी में लगातार आकर मिज़ोरम बॉड के अन्दर सबसे पहले परीक्षा देने वाले छात्र बने। 1978 में एच.एस.एल.सी (HSLC) पूरे मिज़ोरम में चौथा स्थान प्राप्त किया। 1980 में सेड.एन्थोनी कॉलेज शिलॉग से पी.इउ (P.U) कक्षा ग्यारह और बारह में विज्ञान की परीक्षा पूरी की। सेड. एड्मण्ड कॉलेज से बी.ए (अंग्रेजी) 1982 में पूरा किया। नेहू (NEHU) से एम.ए (अंग्रेजी) 1984 में द्वितीय श्रेणी में पूरा किया। 1986-1991 के बीच पी-एच.-डी. पूरी की। इसके बाद बिना रुके पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च किया। लोक साहित्य विषय पर 1998 में इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन में अध्ययन के बाद 1999 में डी.लिट (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि प्राप्त की"[2]

व्यवसाय:

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी ने अपनी परीक्षा पूरी करने के बाद ह्रंङबाना (Hrangbana) कॉलेज में अंग्रेजी के व्याख्याता का पद सम्भाला। इसके बाद 1985 से पाछुंङा यूनिवर्सिटी कॉलेज में रिसर्च एसोसिएट (मिज़ो व्याख्याता) के पद पर नियुक्त हुए। "1997 में जब NEHUका मिज़ो केम्पस खोला गया, तब उन्होंने गेस्ट व्याख्याता का पद सम्भाला। दो साल के बाद रीडर के पद पर और उसके बाद 1999 में अपने विभाग के हेड बने"।[3] इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी (IGNOU) के अंदर एकेडेमिक काउन्सलर का काम अंग्रेजी विषय लेकर सम्भाला। यूजीसी के अंदर नेट कॉ-ऑडिनेटर (समन्वयक) मिजोरम विश्वविद्यालय में इस पद को भी इन्होंने सम्भाला। डॉ. खिआंगते जी को अध्यापन कार्य अच्छा लगता था। इन्होंने भी खूब पढ़ाई की। "6 दिसम्बर, 2005 से प्रोफेसर, मिज़ो विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के पद पर नियुक्त हुए। 2001 में मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग में विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। और आगे चलकर डीन का भी कार्य सम्भाला"।[4] वर्तमान में डॉ. खिआंगते जी मिज़ोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग में अध्यापन कर रहे हैं।

लेखन और साहित्य:

उच्च माध्यमिक शिक्षा से ही डॉ. खिआंगते जी को लिखने में काफी रुचि थी। "कक्षा 9 से ही इन्होंने लिखना शुरु कर दिया था। शुरुआत में इन्होंने दो लेख लिखे, जो 1977 में सिनॉड हाई स्कूल की मैगजीन में छपे। इसके बाद ये इसी पत्रिका के एडिटोरिअल बोर्ड के सदस्य भी बने। 1980 से ऑल इण्डिया रडियो, आईज़ोल और 1997 से दूरदर्शन में भाषण देने के लिये आमंत्रित किए जाते रहे"।[5] साहित्य, संस्कृति, खेल, नाटक, इंगलिश टॉक, (quiz youth&

general) आदि विषय पर इनके भाषण प्रसारित हुए। बताया जाता है कि डॉ. खिआंगते जी मिज़ो समाज में सबसे पहली बार अंग्रेजी में भाषण देने वाले नवयुवक थे। साहित्य और सांस्कृतिक लेखन में इनकी काफी रुचि थी। समाचार पत्रों में संयुक्त संपादक का कार्य करते रहे। (वाई.एम.सि.ए) अध्यक्ष, वाई.एम.ए समाचार पत्र, टलाईकंतु (बि.के.ति.पी) क्रिस्चियन यूथ (सेन्ट्ल के.टि.पि) थू लेह ह्ला और सरकारी संगठन के लिये कई पत्रिका लिख (मैग्जीन) लिख चुके हैं। नेशनल लेवल पर भी इनके द्वारा लिखे गए लेख देखने को मिलते हैं। अब तक चालीस से अधिक पुस्तक और लगभग बीस से अधिक पुस्तिकाओं के रचयिता प्रो.खिआंगते द्वारा सृजित अनेक नाटकों का अनुवाद हिंदी, बंगला, असमिया तथा भारत की और भी कई भाषाओं में हुआ। डॉ. खिआंगते जी के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण और याद रखने वाली बात यह है कि ज़ो एकेडेमिक ऑफ लेटर 1989 से हर साल सबसे अच्छी पुस्तक चुनते हैं, इनकी पुस्तक को भी हर साल चुना जाता है। Lemchan khawvel – I को 1994 में सबसे अच्छी पुस्तक के लिये चुना गया। “Pasaltha Khuangchera” जो इनकी नाट्य रचना है, इसे 1997 में Best of the Year में चुना गया। हर साल इनकी किताब को अच्छी पुस्तक के लिये चुना जाता रहा। किताबों के अलावा डॉ. खिआंगते जी ने कई शोध पत्र लिखे। International/National/Regional level में लगभग 80 शोध पत्र लिख चुके है”।[6] National Seminar/consultative/workshop आदि के Resource Person/official Participant रहकर बीस से अधिक बार विदेश भी जा चुके हैं। साहित्य, संस्कृति, भाषा, लोक-साहित्य, सामाजिक-धार्मिक मुद्दे आदि इनके विषय हैं। इनकी रचनाओं को भारत देश के अलावा विदेश में भी प्रकाशित किया गया है। इनकी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी, हिंदी,

बंगाली, कोक्बोरोक, असमिया, गारो, खासी, ओरिया, मराठी, बोरो, मणिपुरी आदि भाषा-बोलियों में किया जा चुका है।

मिज़ो नाटकों की प्रगति और इनके द्वारा किये गए अध्ययन को देखकर जेम्स ललसंगपुइआ ने प्रो. डॉ खिआंगते जी को 'Father of Mizo Drama' की उपाधि से सम्मानित किया।

निबंध/ कविता :

- Poem- ziak loh zirlai, Precribed for Class-IX, Poetry-Mizo
  (हिंदी अनुवाद – कविता- अलिखित शिक्षा, नियत कक्षा नौ की पुस्तक मिज़ो भाषा में संकलित)
- Poem – Lalruanga dawi bur thar, B.A (Mizo) Paper-IV
  (हिंदी अनुवाद – कविता - ललरुआङा का नया जादू मटका, कॉलेज की छात्रों की पुस्तक, मिज़ो भाषा में संकलित)
- Poem – Bum hmang, for M.A in Mizo, NEHU/MZU
  (हिंदी अनुवाद – कविता – धोखा देने वाला, विश्वविद्यालय छात्रों के लिए पुस्तक, मिज़ो भाषा में संकलित)
- Poem- Zan rau dangdai, For M.A.MIZO, NEHU/MZU
  (हिंदी अनुवाद – कविता - रात की अनोखी आत्मा, विश्वविद्यालय छात्रों के लिए पुस्तक, मिज़ो भाषा में संकलित)
- Poem- No khat ei theuh theuh, M.A.Mizo, NEHU/MZU

(हिंदी अनुवाद – कविता - एक ही थाली पर खाने वाले, विश्वविद्यालय छात्रों के लिए पुस्तक, मिज़ो भाषा में संकलित)

- Poem- Zo hnam pasalthate, M.A.Mizo,NEHU/MZU
  (हिंदी अनुवाद - कविता - मिज़ो जाति के शूरवीर, विश्वविद्यालय छात्रों के लिए पुस्तक, मिज़ो भाषा में संकलित)
- Essay – Lehkhabu hlutna, B.A-Mizo Prose, NEHU/MZU
  (हिंदी अनुवाद – निबंध - पुस्तक की महत्वपूर्णता, कॉलेज छात्रों के लिए, मिज़ो भाषा गद्य, विश्वविद्यालय में संकलित)
- Essay – Lehkhabu ziak leh chhiar, class XI & XII Mizo.
  (हिंदी अनुवाद – निबंध - पुस्तक का उच्चारण और लेखन, कक्षा ग्यारह और बारह के लिए मिज़ो भाषा में संकलित)
- Essay on Drama – Lemchan, Class VII: MBSE (OC)
  (हिंदी अनुवाद – निबंध - नाटक, कक्षा सातवीं छात्रों के लिए मिजोरम बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन में संकलित)
- Essay on Language – Mizo tawng tihhausak dan, Prescribed for Degree MIL- Mizo: NEHU & MZU
  (हिंदी अनुवाद – निबंध - मिज़ो भाषा को किस प्रकार विकसित किया जाये, नियत विश्वविद्यालय में संकलित)

- Essay on Environment – Ram hring, Prescribed for Degree MIL- Mizo: NEHU&MZU

  (हिंदी अनुवाद - निबंध – पर्यावरण, नियत विश्वविद्यालय में संकलित)

- Biographical Essay – Lungleng Lal Khamliana, Prescribed for Class VIII, MBSE (OC)

  (हिंदी अनुवाद – निबंध - लूँङलेङ राजा की जीवनी, नियत कक्षा आठवीं, मिजोरम बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन में संकलित)

- Essay –khualzin, Prescribed, for Class VII- Mizo Essay,MBSE-2010

  (हिंदी अनुवाद – निबंध - यात्री, नियत कक्षा सातवीं - मिज़ो निबंध, मिजोरम बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन में संकलित)

आलोचना, गद्य लेखन, पाठ्यपुस्तक लेखन आदि के रूप में की गई समीक्षाएं:

क) का लूँगख़मबाय बाई बी.लल्थन्गिलअन (1989) प्रेस्क्राइबड फॉर एम.ए.इन मिज़ो क्रिटिसिज्म/बुक रिव्यू

ख) रामगईजुअली बाई सी.लाइजोना (1990) प्रेसक्राइबड फॉर एम.ए.इन मिज़ो क्रिटिसिज्म/बुक रिव्यू

ग) जोरम खाव्वेल बाई ल.केइवोम (1991) प्रेसक्राइबड फॉर एम.ए.इन मिज़ो क्रिटिसिज्म/बुक रिव्यू एन.इ.एइच.यु एंड एम.जेत.यु

घ) बेईसेइन बेइदवंग बय बुंगी सिलो

ङ) अनीता बइ सी.लाइजोना (1998) एम.ए.मिज़ो,एम.जेत.यु,अप्रेल 2016

सम्मान और पुरस्कार :

डॉ खिआंगते जी को उनकी रचनात्मक यात्रा पर अब तक कई सम्मान मिल चुके हैं। उन सम्मानों में से जो प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण सम्मान मिले, उनका यहाँ उल्लेख जरूरी है। "1998 में "Man of the Year" सम्मान के लिए पाँच प्रसिद्ध नाम में डॉ. खिआंगते का नाम भी चुना गया"।[7] डॉ. खिआंगते जी एक नाटककार, कवि, विद्वान-आलोचक, निबंधकार, लोक-साहित्यकार, जीवनी लेखक और एक सामाजिक इंसान माने जाते हैं। इनका नाम जीवनी (Biography) लेख की किताबों पर डॉ. खिआंगते जी जीवनी को अंग्रेजी और हिंदी में अनुवाद किया जा चुका है। "2003 में National Award, भारतीय लोक भाषा सम्मान दिया गया। Lelte Award for Best Writer of Mizoram में 2002, 2003, 2004 लगातार मिलता गया। 2005 में आदिवासी सम्मान से भी सम्मानित किया गया। 09 मार्च, 2006 में भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के हाथो पद्मश्री मिला"।[8] 2007 में K. Zawla Award से सम्मानित किया गया। 2008 में Khuangchera Award से भी सम्मानित किया गया और 15 मार्च 2010 में Distinguished Contribution to Poetry Award से भी सम्मानित किया गया।

1.2 डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते की रचनाधार्मिता का विकास

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी एक मेहनती और अपनी काबिलियत पर खडे होने वाले इंसान हैं। डॉ. खिआंगते जी मिज़ो के प्रसिद्ध और चर्चित नाटककार हैं। डॉ. खिआंगते जी की पहचान नाट्य साहित्य के कारण हैं। खासतौर से देखा जाए तो डॉ. खिआंगते जी की तमाम

रचनाओं में से नाटक से ही इनको अधिक प्रसिद्धि मिली है। 1991 में मिज़ो समाज में नाटक पर सबसे पहले पी-एच.डी. पाने वाले इन्सान हैं।

इनकी निम्नलिखित नाट्य रचनाएँ हैं:

- Nu leh Pa Bum – Mahniinbum(1983)

  नु लेह् पा बूम – मा नी इन बूम

- Thawm mawia (1984)

  थोम मोइया

- Fakite chhung(1987)

  फ़कीते छुंङ

- Duhawmna leh Lalfaki(1990)

  दुह् ओमना लेह् ललफ़की

- Hnehzova leh Rimawii(1991)

  न्हेह् जोऊआ लेह् रिनओमी

- Chanchintha Meichher(1994)

  चनचिनठा मेईछेर

- Lalnu Ropuiliani(1994)

  ललनु रोपईलिआनी

- Thawmvunga(1994)

  थोमवुंङा

- Chharmawia(1997)

  छरमोइया

- Zorama(1997)

  जोरमा

- Pasaltha Khuangchera(1997)

  पसलठा खुआङ्चेरा

- Tualvungi leh Zawlpala(1999)

  तुअलवुङी लेह ज़ोलपला

- Balhla leh Zawlpala (1999)

  बअलह्ला लेह ज़ोलपला

- BuaiaSai-ip(2001)

  बुईआ साईं - इप

- KumSangbi Tharah chuan(2001)

  कुम संङबी थर अह छुआन

- DuatLuat Vangin (2001)

  दुआत लुआत वाङ्इन

- Beidawnna khur Atangin(2001)

  बाईदोन ना खुर अतंङ्इन

- Hamlet in Mizo (Translated into Mizo 2002)

हमलेट इन मिज़ो

- Sakei Lu lam (2012)

  सकैई लू लम

- Lalawmpuii (Dramatised Biakliana' story:2012)

  ललओमपुई द्रमातिसेद बिअकलिआना

- Pasaltha khuangchera(Translated into Hindi,2012)

  पसलठा खुआङचेरा

- Zofate Zingah Hamleta (2016)

  ज़ोफाते जिङा हमलेट

- Puithiam Sathau khawnvar Chhitnna(2016)

  पुईथिआम साथआऊ खोंनवर छीतना

- Milim Pathum (2016)– इन सभी नाट्य रचनाओं का नाम हिन्दी में लिखें।

  मिलीम पथुम

इनके अलावा डॉ.खिआंगते जी ने कई लेख लिखे हैं। अंग्रेजी की किताब का अनुवाद मिज़ो में और मिज़ो भाषा की किताबो का भी हिंदी में अनुवाद हो चुका है। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी ने तीस (30) से अधिक नाटक लिखे हैं। उनमें से 24 नाटक मिज़ो भाषा में छप चुके हैं और हिंदी में 16 से अधिक अनुवाद हो गए हैं। इनके द्वारा रचित नाटकों का मंचन कम से कम 500 बार हो चुका है। आईजोल और मिज़ोरम के कई जिले-गाँव तथा शिलांग, गुवाहाटी, श्रीरामपुर, कोलकाता तथा नई दिल्ली में कई जगह मंचन किया जा चुका है। इनके द्वारा लिखित पुस्तकों में से 10 पुस्तकें मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल;

मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल; नॉर्थ ईस्टार्न हिल यूनिवर्सिटी 'नेहू' विश्वविद्यालय तथा कई विश्वविद्यालयों में स्नातक (बी.ए) तथा स्नातकोत्तर (एम.ए.) की पाठ्य पुस्तकों के रुप में चयनित हैं। इसके अलावा इनकी कई पुस्तकें उच्च माध्यमिक विद्यालयों और शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं।

लोकगीतकार :

दुनिया में हर जातियों की अपनी लोक कथा और साहित्य होता है। उसी तरह मिज़ो की भी अपनी लोक कथाएँ हैं। डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी मिज़ो के प्रतिष्ठित और चर्चित लोकगीतकारों में से एक हैं। उनकी लोक कथा, लोकगीत में गहरी दिलचस्पी है। आगे चलकर पी-एच.-डी. मिलने के बाद खिआंगते जी ने लोक साहित्य में दिलचस्पी रखने के कारण D.Litt. की उपाधि भी प्राप्त की।

"लोक साहित्य की बात की जाये तो खिआंगते जी ने सबसे पहले Lemchan Khawvel – I : Lalnuropuiani, Darlalpuii और Thawmvunga की कथाओं का नाटक के रूप में प्रस्तुत करके वर्ष 1994 में किताब के रूप में प्रकाशित किया। MAL-in 'Book of the year' में इस नाटक को तीसरा स्थान मिला। यह किताब एक अच्छी लोक साहित्य व नाटक की किताब हैं"।[9]

"Lemchan Khawvel – II: वर्ष 1997 में 'Pasaltha khuangchera' (हिंदी अनुवाद - शूरवीर खुंङचेरा) नामक इस पुस्तक के जरिये शूरवीर खुंअङचेरा के माध्यम से नवयुवकों के लिए खुंअङचेरा को एक बार फिर जागृत किया। आगे चलकर इनकी यह पुस्तक 'Book of the year' से पुरस्कृत हुई''।[10]

"Folktales of Mizoram (हिंदी अनुवाद - मिजोरम की लोक कथाएँ): मिज़ो की एक लोक कथा, जिसे हम 'छूरबुरा' के नाम से जानते हैं। एक लड़का और लड़की के रिश्तों की अलग अलग कहानियाँ, एक प्रेमिका की कथाएँ, एक आदमी और अन्य जीव के रिश्तों के सम्बन्ध लगभग 66 लोक कथाएँ, जिनका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और 1997 में प्रकाशित हुई। खिआंगते जी यह किताब दूसरी जाति समूह के सामने पेश करने वाली लोक साहित्य की अनूठी किताब बनी"।[11]

भारत के साहित्य की दुनिया में (National Academy of letters)201/Jan-Feb/2001 में मिज़ो लोक साहित्य, मिज़ो जाति की एक अपनी पहचान बनी। पहली बार मिज़ो की अपनी एक प्रसिद्ध लोक कथा; जैसे छूरबुरा, लेंगकोइया, चेमतातरोता, सामदाला की कथाओं को दूसरी जाति-समूह के लिए अनुवाद किया गया।

मिज़ो गीत और लोक कथाएँ : साहित्य अकादमी ने इनकी किताब, जो अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित है। उसे पहली बार 2004 में प्रकाशित किया गया। इस किताब में मिज़ो लोक कथाएँ, लोक गीत सभी सम्मिलित हैं।

Bharat Bachitra (भारत चित्र) मार्च, 2002 ढाका, बंगलादेश से एक अच्छी पत्रिका में प्रकाशित कर बंगाली में इनकी पुस्तक का अनुवाद प्रकाशित किया"।[12]

डॉ.खिआंगते जी ने अंग्रेजी में किताबें अनूदित की। इसी से संदर्भित समाचार को प्रमुखता से बम्बई मिडडे समाचार पत्र में छापा गया। प्रत्येक रविवार को उनका आलेख भी छापा करते थे। इसके लिए डॉ. खिआंगते जी को 15,000 रुपए का चेक भी भेजा गया। इससे

पता चलता है कि इनके लिखे गए लेखों को समाचार पत्र बड़ी तत्परता से छापा करते थे। साथ इनके लिखे हुए पर इन्हें मेहनताना भी दिया जाता था।

सेमिनार, वर्कशॉप आदि में पेपर प्रेजेंट जैसे जितने भी कार्य हुए हैं, उनमें 180 से अधिक पत्र लोक साहित्य में पढ़े गए। मिज़ो लोक साहित्य लेखन में डॉ. खिआंगते जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मिजोरम के बाहर के लोगों से पूछा जाये तो वे डॉ. खिआंगते जी का नाम 'मिज़ो लोकगीतकार, साहित्यकार के साथ बड़े सम्मान से लेते हैं। नार्थ ईस्ट और भारत के अनेक राज्यों में इनका नाम लोकगीतकार के नाम से जाना-पहचाना जाता है।

संदर्भ:

1. Hnamte Isaac & Lalsangzuala, A PROFESSOR'S PADMA SHRI SOUVENIR,B-43, Fakrun, Mission Veng Aizawl, Mizoram:Swapna Printing Works Pvt. Ltd.Kolkata, 2011.पृ.118
2. वही, पृ. 119
3. वही, पृ. 120
4. वही, पृ. 120
5. वही, पृ. 121
6. वही, पृ. 122
7. वही, पृ. 126
8. वही, पृ. 126
9. वही, पृ. 142
10. वही, पृ.142
11. वही, पृ. 143
12. वही, पृ. 144
13. वही, पृ. 150

द्वितीय अध्याय

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का तात्विक विश्लेषण

2.1 कथावस्तु :

नाटक का प्रधान और मूल तत्व कथावस्तु है। यही रचना का मूल ढाँचा, भित्ति या आधार माना जाता है। कालक्रमानुरुप व्यवस्थित घटनाओं का कथन कथा है; किंतु घटनाचक्र के कालानुक्रम में अपेक्षित परिवर्तन करते हुए अथवा मन: कल्पना से अद्‌भुत घटनाओं को मिलाकर उनका नया अनुक्रम बनाना कथावस्तु कहलाता है। अर्थात घटनाएँ अधिक-कम या परिवर्तित हो सकती हैं और परिणाम भी बदला जा सकता है। कथा में यदि नायक स्रोत और कायर हो तो नाटककार इस कौशल से कथावस्तु की रचना कर सकता है कि नायक की सौजता पर श्रद्धा हो, उसकी कायरता आवश्यक और अनिवार्य प्रतीत हो। इस प्रकार कथा के स्थान पर कथानक का कथावस्तु शब्द का प्रयोग किया जाए तो अनुचित नहीं है।

मानव जीवन में संबंध रखने वाली प्रत्येक सामाजिक-पारिवारिक उलझनों, आर्थिक-राजनीतिक जटिलता, मानसिक तथा आध्यात्मिक द्वंद्व नाटक का वर्ण विषय बनाया जा सकता है। आवश्यकता यदि किसी बात की है, तो वह यह है कि केवल चतुर्दिक घटने वाली उन घटनओं को कार्य कारण की मनोरंजन शृंखला में बाँधकर व्यवस्थित, सुसम्बद्ध एव कलात्मक रुप में उपस्थित करने की है।

कथावस्तु नाटक की आधारशिला और अनुभूति को अभिव्यक्त करने का एकमात्र साधन है। वास्तव में कथावस्तु ही एक ऐसा तत्व है, जिस पर नाटक का समूचा भवन खड़ा है। साथ

ही वह चरित्र को प्रदर्शित करने का साधन भी है और जनजीवन को समभाव से अभिव्यक्त करने वाला कलापूर्ण माध्यम भी। कथा के मूल रुप में समरसता के विधान को स्वीकार किया गया है और भारतीय नाट्याचार्यों द्वारा कथावस्तु का अंत आनन्दात्मक माना गया है। अर्थात अंत में कथावस्तु के भेद कई दृष्टियों से किए गए हैं - स्त्रोत, अधिकारी, अभिनय और कथोपकथन की दृष्टि से आदि। स्त्रोत की दृष्टि से कथावस्तु के तीन भेद किए हैं - प्रख्यात, उत्पाद्य और मिश्र।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी का लोक परंपरा का नाटक है। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु को छह दृश्यों में विभाजित किया गया है। इन छह दृश्यों में पात्रों का नामोल्लेख इस प्रकार है :-

पहला दृश्य :

- उद्घोषक
- युवकगण
- राजा
- महामंत्री
- दूसरा मंत्री
- तीसरा मंत्री
- अन्य मंत्री

दूसरा दृश्य :

- घंटेवादक गण
- पहला युवक

- बच्चे
- वृद्ध
- वृद्धगण

तीसरा दृश्य :

- राजा
- महामंत्री
- वीरगण
- बच्चे

चौथा दृश्य और पाँचवाँ दृश्य

- घंटेवादक
- उद्घोषक
- लोग
- बच्चे
- वृद्ध
- अनुष्ठानकर्ता
- पहला योद्धा
- दूसरा योद्धा
- तीसरा योद्धा
- चौथा योद्धा

छठवाँ दृश्य :

- पहला विदूषक
- दूसरा विदूषक
- युवकगण
- उद्घोषक
- युवा नेता
- पहला युवक
- दूसरा युवक

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक की कथा के बारे में चर्चा करने से पहले मिज़ो जाति के प्राचीन काल की लोक कथा के बारे में थोड़ी चर्चा करना उचित प्रतीत होता है। प्राचीन काल में लोगों का रहन-सहन बहुत ही मामूली था। सबसे पहले बच्चों के बारे में बात की जाए तो पूर्वकाल में पूर्वज बच्चों के लिए कोई खास दिन नहीं मनाते थे और बच्चों को उतना महत्वपूर्ण नहीं मानते थे। लेकिन बच्चों के हिस्से को बच्चों से छीना नहीं जाता था।

पूर्वकाल में मदिरा पान मिज़ो जाति के लोग बहुत अधिक मात्र में करते थे। बच्चों के लिए भी एक अलग प्रकार की मदिरा बनाई जाती थी। किसी भी त्योहार में बच्चों के लिए उनके खाने के लिए कई प्रकार के भोजन बनाए जाते थे। मिज़ो लोगों के तीन प्रकार के त्योहार होते थे। उसमें से एक त्योहार जिसे पोलकूत कहा जाता है। यह पोलकूत ख़ास तौर से बच्चों के लिए होता है। इस तरह पूर्वकाल में भले ही उनके लिए बच्चें बड़ों के लिए उपयोगी नहीं हो, लेकिन बच्चों के भविष्य के लिए उनका पूरा-पूरा ध्यान रहता था।

पूर्वकाल में बड़े लोग बच्चों को वीरता, निःस्वार्थ का पाठ सिखाते थे। बच्चों के लिए एक प्रकार का खेल होता था - "Sakei lem chan"। जिसे शेर के जैसा बनना कहा जाता है। और बच्चों को अपने प्रजा के लिए त्याग और सही मौका आने पर अपने दोस्तों या किसी के लिए भी

प्राण की बाजी लगा सकने की सीख दी जाती थी। लड़कियों से घर के कामों को करवाया जाता था। घर के सभी काम सिखाये जाते थे।

मिज़ो जाति के लिए खेती इनके रोज का व्यापार करने का साधन होता था। बड़े लोगों को खेतों में जब रात गुजारनी पड़ती थी, तो थोड़े बड़े बच्चों के लिए भी काम की योजना का प्रंबंध किया जाता था। बड़े बच्चों को ऐसे ही अपना समय गवांने नहीं दिया जाता था। विधवा औरत और गरीब लोगों के साथ उनका व्यवाहार बहुत ही सुनने लायक और अच्छा होता था।

पूर्वकाल की इन सभी बातों से पता चलता है कि पहले के जमाने में मिज़ो जाति के लोग एक दूसरे का काफी ध्यान और ख्याल रखते थे। किसी भी चीज को वे छोटा नहीं समझते थे और मिज़ो जाति में निःस्वार्थ एक दूसरे के प्रति समर्पण भाव होता था। उनके दिल में एक दूसरे के प्रति जान दे सकने की भावना भी कूट-कूटकर भरी हुई थी। हर त्योहार में सभी मिलकर त्योहारों का आनन्द लिया करते थे। पूर्वकाल में मिज़ो जाति के लोगों का रहन-सहन और उनके व्यवहार में प्रेम की भावना बहुत ही अधिक मिलती है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का कथानक मिज़ो की एक प्राचीन लोक परंपरा पर आधारित है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते जी की प्रसिद्ध नाट्य रचना है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक की कथावस्तु के अंतर्गत मिज़ो समाज की प्राचीन लोक परम्परा को दर्शाया गया है। शेर के सिर पर नृत्य प्रक्रिया का आयोजन पूर्वकाल में मिज़ो लोगों के पूर्वज किया करते थे। प्राचीन काल में मिज़ो पूर्वज शेर को बहुत ऊँचा दर्जा दिया करते थे। शेर उनके लिए भगवान समान था। इसलिए शेर को उसके नाम से भी ना पुकारकर 'सपुई' 'महापशु' कहकर नाम लिया जाता था। उनका मानना है कि शेर सब कुछ जानने वाला है। वे शेर को भगवान 'खुआवाअंग' की तरह सब कुछ जानने वाला मानते थे। "इस प्रकार की

मान्यता रखने के कारण शिकारी भी शेर की बहुत इज्ज्त करते थे और उसका यूँ ही शिकार नहीं करते थे। लेकिन जंगल जाते समय यदि शेर आंतक मचाए या किसी मनुष्य या पशु को मारे तभी उसका शिकार करना जरूरी मानते थे। यदि किसी कारणवश किसी शिकारी के हाथ से शेर मारा जाता, तो कोई नहीं स्वीकारता कि उसने शेर को मारा है। यह बात यदि किसी को बताना आनिवार्य होने पर वे यह कह देते थे कि इसके ऊपर छेतिज वज्रपात हो गया होगा, सो मर गया। उसी मरे हुए शेर को कुछ दयालु लोग अपना चादर तक ओढ़ा देते थे। यदि शेर पालतु पशु, सुअर, बकरी, मिथुन, गाय-बैल आदि का शिकार करता तब उसे शेर को मार गिराया जाता है"।[1]

"शेर को मार गिराए जाने पर 'आई' नामक अनुष्ठान के लिए अन्य पालतु पशु को मारकर गाँव या नगर वालों को सामूहिक भोजन खिलाना पडता है। लेकिन मारे गाए शरारती शेर के बदले में अन्य पशु को मारकर अनुष्ठान करना साधारण लोगों के वश की बात न होने पर गाँव, नगर के धनवान व्यक्ति, राजा या मंत्री महोदय के द्वारा ही कार्य सम्पन्न कराया जाता''।[2]

इन बातों के अतिरिक्त जिसने शेर का अन्य पालतू पशु मारकर अनुष्ठान सम्पन्न किया हो, तत्कालीन मान्यता में उस व्यक्ति के मरने पर उसके शव को 'थि:थिआप' नामक जीव से सुरक्षित करना आवश्यक हो जाता है। अत: नगर के सभी निवासी 'थि:थिआप' को डराने के लिए समस्त उपलब्ध वाद्य यंत्र बजाकर शोर मचाते। तदनन्तर उस मृतक के अंतिम संस्कार के बाद तर्पण के लिए अन्य पालतू पशू की क्रिया करना साधारण लोगों के लिए अत्यत दुष्कर होता है। शेर को मार गिराने के दिन में ही तत्काल 'आई' क्रिया करना सम्भव नहीं हो पाने के कारण अन्य दिन में करना होता है। उस शेर की खाल को निकालकर मांस की जगह भूसा भर

दिया जाता और भूसा भरने पर ठीक से सिलाई करने के बाद में उसे धूप में सुखा देते थे और सूखने के बाद वह जीवित शेर जैसे दिखता था। इस कार्य के मध्य कुछ समय तक लोग अपने-अपने घर में मदिरा बनाने में लग जाते थे। 'शेर के सिर पर नृत्य' करने के दिन सभी कार्यों से छुट्टी ली जाती थी, ताकि ऐसा न हो कि कोई जंगल जाए और अन्य शेरों का शिकार बने।

प्राचीन काल में मिज़ो जाति की 'आई' करने के कारण यह माना जाता है कि जिस शेर को मार गिराकर जो व्यक्ति उसके निमित्त 'आई' कार्य सम्पन्न करता है। माना जाता है कि ऐसा करने पर परलोक में शेर की जीवात्मा उस व्यक्ति की गुलाम बनी रहेगी जिसने उसके लिए 'आई' क्रिया सम्पन्न की है। बजुर्ग लोग मानते थे कि उस व्यक्ति की जीवात्मा जब परलोक के द्वार पहुँचेगी, तो साथ शेर आदि जंतुओं की जीवात्मा को ले जाएगा। तो वहाँ पोला नामक परलोक द्वार रक्षक हाथ में गुलेल लिए खडा रहता है और जो पुण्यवान नहीं है, उनको गुलेल से मार देता है। बहुत काल तक वह घाव सहते रहना पडता है, वह द्वार रक्षक पोला भी शेर का अनुष्ठान करनेवाले से भयभित रहेगा और बडा महिमावान होकर परलोक 'स्वर्ग' में प्रवेश करके सदा आनंद प्राप्त कर लेता है। बात इतने में ही पूरी नहीं होती, बल्कि उस पुण्यवान के शव को पूरे नगर के लोगों द्वारा 'थि:थिआप' नामक जंतु से सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती थी।

"थि:थिआप नामक जंतु शेर (सिंह, बाघ, चीता, तेन्दुआ आदि) सब का राजा और अधिकारी होता है। वह जीव मकडी, ततैया आदि पर हुकूमत करता है। वह अत्यंत विराट है। उसका आकार कुत्ते के समान है, किंतु सभी पशुओ का राजा है। उसके दो तरफ सात गुणे कान

हैं। जब शेर का 'आई 'करने वाले व्यक्ति मृत्यु होने पर उसी शेर की जीवात्मा को अपने गुलाम के रुप में ले जाता है''।[3]

यह सोचकर थि:थिआप को अपमानित महसूस होता है, इसीलिए वह उक्त व्यक्ति के शव को छति पहुँचाना चाहता है। यदि वह इस काम में सफल हो जाए तो शेर की जीवात्मा उक्त व्यक्ति की जीवात्मा को ही अपनी गुलाम बना देगी। इसी कारण थि:थिआप के द्वारा भेजे गए प्राणी मक्खी टिड्डी, टिड्डा, ततैया आदि क़ो शव के आस-पास फटकने नहीं देते। वाद्य यंत्रों या अति उच्च स्वर से चिल्लाकर थि:थिआप कई दूतों को भगाने की प्रक्रिया परम्पारागत चलती आयी है। मारकर गिराए गए शेर के लिए अन्य पालतू पशु काटकर अनुष्ठान करने का दिन आने पर पूर्व निर्धारित मीठी मदिरा को इकट्ठा कर, लोगों को जंगल न जाने के लिए राजा का उद्घोषक हर गली में जाकर घोषणा करता कि कोई जंगल न जाए और न ही कोई जलस्त्रोत की ओर जाए। तब राजाज्ञा होने के कारण गाँव या नगर का हर जन राजा- मंत्री आदि के बताए गए स्थान पर शिकारी नृत्य देखने के लिए एकत्रित होते थे। इस प्रकार पूर्व से ही इस अनुष्ठान की जोर-शोर से तैयार की जाती थी। लगभग दिन के भोजन के समय मरे शेर को उठाने के लिए बांस को लगभग चार हाथ लम्बा काटकर दो तरफ रख देते हैं और उसके ऊपर अन्य काटे गए बाँसों को ऊपर फैलाकर रख दिया जाता है। तब उन बाँस के ऊपर शेर को पेट के बल लिटाया जाता है और चार व्यक्ति द्वारा उसे उठाया जाता है। तदनन्तर पुरोहित अपने मुँह में मदिरा रखकर उस शेर पर फूँककर यह बोलता कि अब तू किसी मनुष्य को मार नहीं सकता; बल्कि तेरे शरीर सहित जीवात्मा भी मनुष्य की गुलाम हो चुकी है। इसके बाद लोगों के समक्ष ले जाकर, चार व्यक्ति स्त्री के वेश में आ जाते हैं। उनका विचार था कि लोगों का मनोरंजन करने के लिए वे लोग तुरंत ही स्त्रियोचित वस्त्र और उपयोगी सामान हाथ में लेकर लोगों के सामने आ खडे होते हैं।

स्त्री रूपधारी रंगभूमि में आकर शेर के शव को गाली देना शुरु करते और कोई उस पर पेशाब करता तो कोई तम्बाकू के धूए से सने हुए पानी (हुक्का का पानी) उस पर उंडेलने लगते हैं। वे यह यह कहते हैं कि 'अब तू स्त्री का भी कुछ नहीं बिगाड पा रहा है' ऐसा कहकर हाथ में पकडे सूए (मिज़ो में 'तूल-थीर') से शेर के सिर को कोंच-कोंचकर अपनी जगह वापस चले जाते हैं। उसी समय अनेक प्रकार के घन्टे 'दरबू' 'दरखुआंग' तथा नगाडे आदि लगातार बजाने लगते हैं। स्त्री रूपधारी अपने स्थान वापस चले जाते। कुछ समय बाद तीन या चार वीर पुरुष सज-धजकर रंगभूमि की ओर आकर शेर के शव को अपने तरीके से घेरकर उस पर बिना गोली के, सिर्फ बारुद भरा बंदूक बार-बार दागते लगते हैं। तपश्चात उसके अनुयायी अन्य वीर शिकारी उस शेर के शव के चारों ओर नृत्य करने लगते हैं। यह सभी उपस्थित लोगों का कौतूहल बढ़ाने वाला होता है।

नृत्य करने के बाद शेर के शव को घर के भीतर ले जाकर रख दिया जाता है और ले जाते समय सभी वादक उन वीरों के पीछे- पीछे वाद्य बजाते हुए चले जाते हैं। अर्थात इस नृत्य में एक अद्‌भुत चीज पुरुषों द्वारा स्त्री रुप धारण करना है। मिज़ो समुदाय के अनेक नृत्यों की तुलना में यही एक नृत्य है, जहाँ पुरुषों द्वारा स्त्री रूप धारण किया जाता है।

इसका आशय यह है कि प्राचीन काल में सात भाइयों की इकलौती बहिन थी। वे अपनी इकलौती बहिन को बहुत प्यार करते थे। शिकार करते समय अन्य युवकों के साथ जाते हुए भी उन्हें अपनी बहिन का बहुत ख्याल रहता था कि कहीं शेर उनकी बहिन को पकड़ नहीं लें। इसलिए वे सात भाई अपनी बहिन को अपने साथ ही लेकर चलते थे। एक दिन अचानक खेतो में जाते समय उनकी बहिन शेर का शिकार बन जाती है। उनकी घायल बहिन को शेर के द्वारा छेड़ते हुए देखकर सात भाइयों को बहुत गुस्सा आता है और उस शेर को अपनी बन्दूक से मार देते हैं। शेर मर तो जाता है लेकिन अपनी बहिन की जान को जान को नहीं बचा पाते हैं।

इस घटना को लेकर जब भी 'शेर के सिर पर नृत्य' का आयोजन किया जाता है। तो पुरुष वर्ग उन भाइयों की बहिन की याद में स्त्री रुप धारण किया करते हैं। तत्कालीन मिज़ो जन-जीवन में शिकार करना आम बात थी। अनेक प्रकार के जंगली जानवरों का शिकार होता था। लेकिन शेर का शिकार करना उचित नहीं मानते थे। क्योंकि शेर भगवान का दूत माना जाता था।

लेकिन शेर अपना स्वभाव भूलकर जंगल में शिकार करना छोड़ गाँव या नगर में आकर किसी पालतू पशु या मनुष्य को अपना शिकार बनाता तो लोग अपने राजा सहित मजबूर होकर उस हिंसक शेर को मार गिरा देते थे। तब शेर का शिकार करने के बाद एक प्रकार का अनुष्ठान सम्पन्न करने हेतु अपने पालतू पशू का वध करके उपर्युक्त (सकेई लुलाम) यानि 'शेर के सिर पर नृत्य' का आयोजन किया जाता था।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो जनजाति की ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को उद्घाटित करता है। इसके नाटककार डॉ.लल्तुआगलियाना खिआगते ने इस नाटक की कथा के माध्यम से हिन्दी समाज को मिज़ो समाज की परम्परा से परिचित करवाना एक उद्देश्य रहा है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक लोक परम्परा का एक महत्वपूर्ण नाटक है। इस नाटक के अनुसार मिज़ो जनजाति शेर को अन्य पशुओं से अधिक ऊँचा दर्जा देती है। जिस प्रकार अपने शत्रुओं का सिर काटकर 'आई' नामक क्रिया का आयोजन किया जाता है, जिससे आने वाले समय में, वीरता, साहस आदि की सीख मिलती है। इस प्रकार 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का उद्देश्य अपनी लोक परम्परा को कायम करना, ऐतिहासिक संदर्भ के साथ आदर्श प्रस्तुत करना, साहस, वीरता आदि के साथ अपने शत्रुओं का सामना करना आदि है।

निष्कर्षत डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते ने प्रस्तुत नाटक 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में कथा के सूत्र को विस्तारपूर्वक अपने कथानक में समेटने का प्रयास किया है। प्रस्तुत नाटक 'शेर के सिर पर नृत्य' में मिज़ो जाति की लोक परंपरा को सामने लाने की कोशिश की है। पूर्वकाल की मिज़ो संस्कृति और परंपरा को इस नाटक के जरिये प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उसमें उन्हें सफलता भी मिली है। इसी प्रकार उन्होंने आगे चलकर इसी शैली को अपने नाटक का आधार बनाया।

2.2 पात्र- विधान

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक डॉ. लालत्लुआङलिआना खिआंगते जी के द्वारा लिखित नाटक है। 'शेर के सिर पर नृत्य' में मिज़ो की लोक परंपरा के सांस्कृतिक नृत्य को दर्शाया गया है। पूर्व काल के समय के युग में मिज़ो जाति के लोगों में 'आई' नामक अनुष्ठान का आयोजन करने की अपनी परंपरा होती थी।

शेर को मार गिराए जाने पर 'आई' नामक अनुष्ठान के लिए अन्य पालतू पशु को मारकर सम्पूर्ण गाँव या नगर वालों को सामूहिक भोजन खिलाना पड़ता है। मारे गए शेर का अन्य पशु मारकर अनुष्ठान करना साधारण लोगों के वश की बात न होने के करण गाँव/ नगर के धनवान व्यक्ति, राजा या मंत्री महोदय के द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न कराया जाता था।

शेर के सिर पर नृत्य मिज़ो जाति के लिए एक बहुत ही ख़ास नृत्य है। जब शेर के सिर पर नृत्य का आयोजन किया जाता है तब सभी गाँव के लोगों को सूचना दिया जाता है कि शिकार करने कोई जंगल न जाये। राजा के आदेश का कोई आपमान नहीं किया जाता था जब गाँव वालों को सूचना दिया जाता है, तो सभी आदेश का पालन करते हैं।

"इन कार्यों के मध्य कुछ समय तक लोग अपने-अपने घर में मदिरा बनाने में लग जाते थे। निर्धारित दिन पर किसी को भी जंगल जाना निषिद्ध किया गया। महिलाओं को भी पोखड़ी या जलस्रोत से पानी लाना निषिद्ध है। और यदि पानी लाये बिना काम नहीं हो पा रहा है तो महिलाओं को बन्दुकधारी शिकारी के संरक्षण सहित पानी लाना पड़ता था। शेर के सिर पर नृत्य करने के दिन सभी कार्यों से छुट्टी ली जाती थी, ताकि ऐसा न हो कि जंगल जाएं और अन्य शेरों का शिकार बनें।''।[4]

थि:थिआप(Thihthiap) एक शेर का राजा कहलाता है। शेर राजा अपने शेर का ध्यान रखता है। जब शेर को मार डालते हैं और शेर के सिर का आई क्रिया का आयोजन करने के लिए तैयारी करते हैं। तो उसके लाश को शेर ख़राब करने की कोशिश में रहता है। परलोक में एकदम बदसूरत से पहुँचने के लिए शेर उसकी लाश को ख़राब करने की कोशिश करता है। इसलिए थि:थिआप को नहीं आने के लिए वीर योद्धा सभी युवक पहरा लगाते हैं और शेर का नृत्य करना कोई मामूली कार्य नहीं होता है। बहुत ही कठिन कार्य होता है। थि:थिआप जिसे शेर का राजा कहते हैं। असल में किसी ने देखा हो या उसे शिकार बनाया हो, ऐसा बहुत कम देखने को मिला है।

"Pu. Ngulbuk" का कहना है कि उसके दादा के परदादा ने कहा, प्राचीन काल में जब वह राइएक गाँव में रहते थे। तब उनके दादा के परदादा ने थि:थिआप को मारा था। वह भी जब हम खेतों से जब अनाज इक्कठा कर रहे थे। रात में किसी जंगली पशु का इंतजार कर रहा था। बैठा हुआ था तभी थि:थिआप ही था, जो वहाँ आया, तो मैंने उसे वहीं अपनी बंदूक से मार डाला। जब मैंने पास जाकर देखा तो एक बहुत ही बड़ा पशु था"।[5]

जब मरे हुए शेर की 'आई' क्रिया का आयोजन करने की तैयारी होती है तब थि:थिआप शेर की लाश को खराब करने की कोशिश करने आता है। अगर ऐसा थि:थिआप कर दे तो

उनका मानना है कि परलोक में उस शेर की शक्ल जरूर बिगड़ जाएगी। ऐसा शेरों के राजा थि:थिआप चाहता था। लेकिन गाँव वाले यह नहीं चाहते थे। इसलिए शेर के सिर पर नृत्य आयोजन करने के लिए इन सारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था।

जिस शेर को मार गिराया जाता है, जिस प्रकार पहले किया करते थे। उसी प्रकार शेर की लाश को अच्छी तरह नहलाया जाता है। नहलाने के तुरंत बाद थि:थिआप से बचाने में लग जाते हैं। गाँव के बच्चें और बुजुर्ग भी मरे हुए, धुले हुए लाश की रखवाली करते हैं। थि:थिआप से बचने के लिए गाँव के कुत्ते को मारकर कहीं गाँव के पास उसकी लाश को फेकते हैं। सभी शेर की लाश की रक्षा के लिए सभी पहरा लगाते हैं। जब बुजुर्ग "ka tiam e'' (मैं तैयार हूँ) कहते हैं, तो सभी संगीत द्वारा शोर मचाने लग जाते हैं। फिर बुजुर्ग "kan hai e, kan hai e" (कन हाइ ए, कन हाइ ए) और इस प्रकार थि: थिआप से बचाने की क्रिया खत्म होती है। इस प्रकार शेर के सिर पर नृत्य मिज़ो समाज में पूर्वकाल में बहुत ही महत्त्व दिया गया है। इसलिए इस लोक कथा को नाटक के द्वारा लेखक ने प्रस्तुत करना उचित समझा।

डॉ. ललल्लुआङलिआना खिआंगते जी ने मिज़ो जाति की इस लोक परंपरा को नाटक के ज़रिये प्रस्तुत किया है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में आठ पात्र हैं -

क) उद्घोषक

ख) युवकगण

ग) राजा

घ) महामंत्री

ङ) वृद्ध

च) बच्चे

छ) योद्धा

(क) उद्घोषक :

मिज़ो समाज में प्राचीन काल से आज तक उद्घोषक होते रहें हैं। गाँव वालों के लिए उद्घोषक बहुत ही उपयोगी होता है। उद्घोषक के बिना गाँव वाले नहीं रह सकते हैं। उद्घोषक राजा के पास हर समय रहता है। राजा के हर आदेश चाहे वह दुर्घटना की सूचना हो या दुःख हो या ख़ुशी की सूचना हो उद्घोषक अपना कार्य बहुत ठीक तरह से निभाता है। उद्घोषक का कार्य एक दास तरह होने के कारण अर्थात उसे हर कामों के लिए भेजा जाने वाला होने के कारण लोग उसे बहुत ही निम्न दृष्टि से देखते थे। लेकिन उसके बगैर नहीं रह सकते थे। उद्घोषक का कार्य अपने गाँव के लोगों, जातियों को राजा के आदेश की सूचना देना होता है। ऊँची आवाज़ में उद्घोषक अपनी बातों को कहता है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में उद्घोषक ने अपनी भूमिका को बहुत अच्छी तरह से प्रस्तुत की है। उद्घोषक को राजा के आदेश के बिना एक शब्द की सूचना देने का अधिकार नहीं होता है। सूचना देने से पहले राजा, मंत्री सभी आपस में उस सूचना के बारे में काफी चर्चा के बाद और निर्णय के बाद उद्घोषक को सूचना देने का आदेश दिया जाता है। जब उद्घोषक कुछ सूचना देता है तो बच्चे और युवक उद्घोषक का हंसी-मजाक उड़ाते हैं।

"युवकगण : क्या तू भी जाएगा ?

उद्घोषक : मैं क्यों नहीं जाऊँगा। मुझें तुम्हें कितनी बार बताना पड़ेगा!

युवकगण: तो फिर पुकारते जाओ मामू ।

उद्घोषक : तुम लोगों ने कार्य पर दखल डाला, बदमाशों!"[6]

इस कथन से प्रकट होता है उद्घोषक का काफी मजाक उड़ाया करते थे। लेकिन उद्घोषक कभी उनके बातों का बुरा नहीं मानते था। उद्घोषक के लिए हर साल उसके तंगखा के लिए

"Tlangau Fawng" कहा जाता हैं जिसका मतलब यह है कि हर घरों में उद्घोषक के लिए चावल इक्कठे करते हैं। उद्घोषक का कार्य दिन भर की रोजी रोटी के लिए तो बहुत ही कम होता था। लेकिन उद्घोषक का कार्य करने के साथ-साथ वह खेती का काम करता था। उद्घोषक की प्रथा आज भी चली आ रही है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में उद्घोषक ने अपनी भूमिका को बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है।

"सुनो, सुनो ! हमारे महामंत्री जी की ओर से महापशु के शव का अनुष्ठान कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। कोई भी जंगल न जाये। राजा की ओर से छुट्टी घोषित की गई है। लगभग दस बजे रंगभूमि पर सब को आना होगा। सभी माताओं और बच्चों को उस अनुष्ठान कार्य में भाग में लेना है। (अपनी आवाज को अधिक न दबाते हुए) दूसरी गली की ओर जाकर बताता हूँ।"[7]

इस कथन से प्रस्तुत होता है कि उद्घोषक का सूचना देने का तरीका बहुत ही शुद्ध और सही है। वह बहुत ही आज्ञाकरी दास भी कहलाता था।

(ख) युवकगण :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का दूसरे पात्र के रूप में युवकगणों का समूह है। मिज़ो समाज में 30 वर्ष के आयु के लोगों (विवाहित और अविवाहित) के लिए रहने का दूसरा घर बनाते हैं। उसे जोल्बूक कहा जाता है। उस जोलबूक में जो पुरुष रहते हैं, वे काफी तगड़े और स्वस्थ होते हैं। अपनी प्रजा की रखवाली करना उनका कर्त्तव्य होता है। उनके हाथ में अपनी प्रजा की सुरक्षा होती है। राजा के आदेश का पालन करना और पूर्वजों का आदेश करना व उनका सम्मान करना उनका धर्म होता था। गाँव की रखवाली करना, जंगली पशुओं से गाँव की रखवाली करना युवकों का काम होता था। इसलिए युवकों का बहुत सम्मान किया जाता

था। गाँव की लडकियाँ भी युवकों का बहुत सम्मान करती थी। युवकों के विवाह होने से पहले सभी युवक जोलबूक में ही रहना पड़ता था। अपने घरों में रहना उनके लिए अनुमति नहीं होती थी। युवकों के लिए ज़ोलबूक में रहना उनको वीरता का पता सिखाता था। अच्छे इंसान बनना सिखाता था।

पूर्वकाल में मिज़ो जाति के युवकों की खासियत यह है कि वे अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाते थे। अपनी गाँव की रक्षा करते रहते थे। उनके हाथ में उनके गाँव की सुरक्षा थी। इसलिए गाँव के लोग युवकों के बड़ा आदर सम्मान दिया करते थे।

"इसको खम्बे के रूप में गाड़ा जाय... तुम तैयार हो? जोर लगाओ...लो भाई..."[8]. इस कथन से प्रस्तुत होता है कि शेर के सिर पर नृत्य समाप्त होने पर अधूरे काम जो बचे बचे हुए थे। वे भी युवकों द्वारा पूरे किए जाते थे।

पूर्वकाल के युवक बड़े ही वीर और निस्वार्थी होते थे। भले ही इस नाटक में युवक पात्र कम हो, लेकिन इनके द्वारा ही नृत्य का आयोजन पूरा किया जाता है। आज के युवकों के लिए यह नाटक के एक बड़ी चुनौती है। आज के युग और पूर्वकाल के युवकों में अब कितना फर्क आ गया है।

(ग) राजा :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में राजा नाम से एक पात्र का उल्लेख है। पर, मिज़ो समुदाय के पूर्वजों का कहना है कि मिज़ो समाज में राजा या राजतंत्र की परंपरा नहीं रही है। अत: इस नाटक के संदर्भ में जहाँ-जहाँ राजा शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ हमें राजा का अभिप्राय मुखिया से लगाना अधिक संगत प्रतीत होगा। नाटक में राजा का पात्र बहुत ही प्रभावशाली है। राजा के द्वारा ही शासन चलता। राजा का कर्त्तव्य बहुत ही विशाल होता है।

राजा को अपनी प्रजा का बहुत ख़याल रहता है। राजा पूरी तरह से अपने कर्त्तव्य को बहुत ही अच्छी तरह निभाता है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में पूर्वकाल के मिज़ो जाति के युग की लोक कथा होने के कारण राजा को बहुत ऊँचा दर्जा दिया गया है। राजा का आदर-सम्मान बहुत अच्छे ढंग से किया जाता है। राजा के आदेश के बिना कोई भी कार्य संपन्न नहीं किया जाता है। राजा को अपने प्रजा से बहुत लगाव और प्रेम होता है। राजा को अपनी प्रजा की बहुत चिंता होती है। प्रजा अपने राजा की संपन्नता के लिए गीत भी गाया करती है।

> "किसी को बिना हानि पहुँचाये ख़ुशी से जीवन बिताते हैं, हमारे जमीन को हमारे खेतों को अगर कोई छीनने की कोशिश करे, तो उसका मुकाबला करेंगे। हम पर कोई आक्रमण करे, राजा जी आप घबराना नहीं, फिर वहीं अपने आँगन में खुशी से नाचेंगे।"[9]

इस प्रकार गीत गाकर राजा के साथ में गीत गाते और नाचते थे। इस प्रकार प्रस्तुत होता है कि राजा की प्रजा और राजा कितने लगाव के साथ रहते हैं। राजा भी प्रजा से कितना प्रेम करते हैं। इस गीत के अनुसार प्रतीत होता है। राजा को हमेशा अपनी प्रजा की चिंता रहती और अपने मंत्रियों के साथ हमेशा अपने प्रजा की सुरक्षा और भलाई की बात सोचा करते रहते थे। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में राजा की सारी अच्छाई इसी बात में निहित है कि उसे अपनी प्रजा को एक आदर्श राजा बनकर संभालना है। राजा की वाणी, संवाद आदि से यह प्रतीत होता है कि राजा एक आदर्श व्यक्तित्व हैं। राजा को गाँव में या खेतों में आग लग जाने से काफी सतर्क रहना पड़ता है, क्योंकि किसी भी कारण, किसी भी जगह आग लग जाये तो राजा को उसके लिए भुगतना पड़ता है।

राजा और मंत्री अपनी प्रजा की भलाई के लिए अच्छी प्रकार से राज्य चलाते थे। इसलिए प्रजा भी उनका समुचित आदर-सत्कार करती थी।

"महापशु के निमित्त अनुष्ठान कार्य संपन्न करने में समर्थ महामंत्री का होना हमारे लिए कितनी सौभाग्य की बात है! सुनिए, आज का पूरा दिन सभी काम से छुट्टी लेकर मनाया जाये। मदिरा भी कतार में लगाए जा चुके हैं। अहा, लाओ, लाते जाओ।"[10]

इस कथन से प्रतीत होता है कि राजा को अपनी प्रजा से काफी प्रेम हैं। राजा का आदेश होता है कि कोई भी गाँव में किसी भी प्रकार का कार्यक्रम का आयोजन किया जाए तो राजा कभी नहीं चाहता कि उसकी प्रजा काम करने निकले। जब भी त्यौहार हो या किसी अनुष्ठान का कार्य का संपन्न हो राजा की ओर से सभी को छुट्टी दी जाती। अर्थात जंगलों में भी जाने से मना किया जाता। राजा अपनी प्रजा को एकता का पाठ सिखाते हैं। भाईचारे का सन्देश देते हैं। राजा के वचन बड़े आदर्श होते हैं। राजा कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे राजा को प्रजा के सामने निंदा का शिकार होना पड़े। राजा का फैसला हमेशा अमर होता है। राजा का फैसला हमेशा सच्चा होता है। राजा कभी अपनी प्रजा के एक-एक सदस्य के प्रति गलत व्यवहार नहीं करता। लेकिन अपनी प्रजा की भलाई के कारण दोषी को उसके किये की सजा दी जाती है। राजा की ओर से बिना मतलब के किसी निर्दोष को दण्ड नहीं दिया जाता है। पूर्वकाल में कहा जाता है कि 'lushai' लुशाई राजाओं में 'Thanglura' थांगलूर' के खानदान जिसे साईंलोउ कहा जाता है साईंलोउ एक जाति का नाम होता है। पूर्वकाल में कई राजा होते थे। उस राजाओं में से सबसे अच्छा और ज्ञानी राजा साईंलोउ कहलाता था। साईंलोउ राजा जिस प्रकार राज्य चलाना चाहता, वह चलाता। उसके विचार बहुत ही ज्ञानवान होते थे। छोटी या ओछी बातों को अपने मुँह से नहीं निकालते थे। हर मामलों का हल बड़े सावधानी और ठीक ढंग से निकलना उनको बहुत अच्छी तरह आता था। उनकी प्रजा उन पर किसी बात के लिए राजा पर सवाल करे उनका हमेशा ख्याल रहता था। अपने पूर्वजों के दिए हुए संस्कारों से अपनी परंपरा का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण भी समझते थे। साईंलोउ राजा कभी अपने पुत्रों को उनके गलत कार्यों के लिए माफ़ भी नहीं करते थे। राजा के बच्चों का किसी से कोई

झगड़ा हुआ और अगर खून से लथपथ नहीं हुए तो राजा अपने बच्चों को चुप रहने को कहते थे। ठीक से समझाकर खेल-खेल में तो ऐसा होता है, कहकर अपने बच्चों को बात समझाते थे। इस प्रकार राजा दूसरे बच्चों और अपने पुत्रों को एक सामान प्रेम करते थे। किसी के बीच भेदभाव नहीं रखते थे।

राजा के पुत्र की शादी दूसरे राजा की पुत्री के साथ शादी करना होता था। इसलिए राजा के पुत्रों को कोई ऐसी गाँव की लड़की के साथ सम्बन्ध बनाना मना होता था। अगर राजा के पुत्र किसी आम लड़की के साथ प्रेम सम्बन्ध रखता, तो गाँव के युवक राजा के पुत्र से मुहँ मोड़ लेते थे। लेकिन दूसरी तरफ राजा की पुत्रियों के लिए नियम बहुत ही कठिन होता था। जब कोई युवक राजा की पुत्री से प्रेम सम्बन्ध रखता या राजा की पुत्री किसी गाँव के लड़के के साथ प्रेम सम्बन्ध रखती, तो उस लड़के को मार ही दिया जाता था। पूर्वकाल में जिस राज्य में प्रजा ज्यादा होती, राजा अपनी प्रजा का ख्याल रखता हो, वही राजा अधिक समय तक राज कर सकते थे। राजा गाँव के परिवार में ज्यादा संतान होने वाले परिवार वालों को बहुत ही ध्यान रखते थे। क्योंकि जब उनके बच्चें बड़े हो जायेंगे, तो राज्य के लिए एक सच्चे नागरिक बन जाएंगे। यह विचार हमेशा राजा के मन में रहता था। जब कोई दुसरे गाँव में बसने के लिए चले जाते, तो राजा उस परिवार को अपनी मदिरा पिलाकर ठीक से उनकी विदाई करता। इस तरह करके वह परिवार दूसरे साल जरूर लौटकर आ जाते।

राजा के लिए अपनी प्रजा में उनके बिना कोई राजा और अधिकारी नहीं होता है। इसलिए प्रजा राजा को बहुत सम्मान और मदिरा, मांस इत्यादि से राजा का ध्यान रखा जाता। राजा को खेती करना, शिकार करना जरुरी नहीं होता था। हर दिन मदिरा पीकर अपने मंत्रियों के साथ बड़े ख़ुशी और आनंद के साथ रहते थे। हर समय मदिरा पीकर और गीत

गाया जाता था। इसलिए राजा गाँव के गीतकार, संगीतकार को बहुत ही ऊँचा दर्जा देते थे। राजाओं में कोई राजा शिकार करने में बहुत ही अच्छें होते थे। नदी में जाने की काफी रूचि होती थी। राजाओं में शूरवीर भी हुआ करते थे। उनमें से Lalchhuana lal, Tuchhingpa और Hniarvunga ये लोग शूरवीर राजा थे।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में राजा के पात्र के माध्यम से लेखक ने पूर्वकाल के मिज़ो जाति के राजा (मुखिया) का व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है।

(घ) महामंत्री :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में महामंत्री के पात्र में एक प्रजाहितकारी मंत्री के गुण मिलते हैं। राजा जिस प्रकार अपनी प्रजा से प्रेम करता है, उसी प्रकार मंत्री भी अपने प्रजा से प्रेम करते हैं। कहा जाता है कि पूर्वकाल के मिज़ो राजा के मंत्री अपने राजा का स्थान लेने की कभी कोशिश नहीं करते थे। मंत्री हमेशा अपने राजा के साथ राजा के हर फैसले में उसका साथ देते थे। राजा अपने मंत्रियों में सबसे ज्यादा बुद्धिमान, जो प्रजा की भलाई में हमेशा तत्पर रहता था, उसे प्रमुख मंत्री का दर्जा देते थे। साथ ही यह भी कहा जाता है कि जो मंत्री प्रजा की भलाई नहीं चाहते थे, वे अक्सर राजा के खिलाफ जाकर अपनी प्रजा का नुकसान कर देते थे। लेकिन ऐसा कम ही देखने को मिलता था। राजा के साथ-साथ मंत्री, जो प्रजा की भलाई के लिए दिल से कार्य करता था, उसे पूरे राज्य में वही आदर्श, सम्मान दिया जाता, जो राजा को दिया जाता।

"सही बात है, हमारे राजा के कहे अनुसार रंगभूमि की ओर चला जाये। मैं अपने राजा जी के पीछे जाऊँगा और तुम लोग मेरे पीछे आना...."[11]

इस कथन से साफ पता चलता हैं कि मंत्री अपने राजा की आज्ञा का पालन करने वाला होता था। राजा जिस प्रकार अपनी प्रजा से प्रेम करते, प्रजा की भलाई करते हैं, उसी प्रकार मंत्री भी अपनी प्रजा से प्रेम करते और पूरे दिल से राजा का साथ देते।

इसलिए प्रजा भी मंत्रियों का आदर-सत्कार, उनके आदेशों का पालन करती। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के माध्यम से मिज़ो समाज के पूर्वकाल के मंत्रियों का व्यक्तित्व प्रकट होता है। इस नाटक के माध्यम से प्रजा हितैषी मंत्री की पहचान भी उभरकर सामने आती है।

(ङ) वृद्ध :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के दूसरे दृश्य में यह दिखाया गया है कि शेर के सिर पर नृत्य का आयोजन रंगभूमि पर होता है। उस नृत्य को देखने गाँव के सभी लोग आते हैं। उसमें बच्चे और वृद्ध भी शामिल होते हैं। वृद्ध स्वभाव से विनम्र और सभी को स्नेह करने वाले होते थे।

"अहो, मुझे अपनी जवानी के दिन की याद आ रही है! बेशक मैं भी राजा के पीछे चलकर शूरवीर के नृत्य में शामिल होता था।"[12]

इस कथन से पता चलता है कि वृद्ध को अपनी जवानी के दिन याद आ रहे थे। उसे दुबारा अपनी जवानी के दिनों को जीने का मन हो रहा था। वे भी कभी अपने ज़माने में एक शूरवीर योद्धा हुआ करते थे। नृत्य को देखकर उन्हें अपनी जवानी के दिन याद आ रहे थे और नृत्य को देखकर बच्चों को नृत्य के बारे में बड़ी उत्साह के साथ उस नृत्य को समझाते जा रहे थे।

वृद्ध द्वारा बच्चों को नृत्य के बारे में समझाना, उनसे बाते करने का ढंग वृद्ध के व्यक्तित्व को वत्सलता से भर देता है। वे अपनी परंपरा से गहरा लगाव भी रखते थे।

(च) बच्चे:

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में एक पात्र बच्चे का भी है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में जिस प्रकार बच्चे का वृद्ध से सवाल करना, इस नाटक को ओर भी ज्यादा मनोरंजक बनाता है। बच्चे के स्वभाव में सवाल ही सवाल पैदा होते हैं। बच्चे हर नए चीज की जानकारी पाना चाहते हैं। जैसा कि कहा गया है कि 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो समाज की पूर्वकाल की लोक परंपरा पर आधारित है। पूर्वकाल में दस साल के बच्चों को 'जोलबूक' के लिए लकड़ी इक्कठे करके जोलबूक में रखना पड़ता था। अर्थात जोलबूक के लिए लकड़ी इक्कठा करना बच्चों का काम होता था। केवल राजा के बच्चों को छोड़कर गॉव के सभी बच्चों का काम होता था। इस काम को करने से किसी बच्चों को कोई छोड़ लगी भी तो कोई दुर्घड़ना नहीं होती तो उनके माता-पिता गुस्सा नहीं करते थे। माता-पिता अपने बच्चों के कर्त्तव्य में उनका साथ देते थे।

हर शाम को जोलबूक के लिए एक दुसरे को पुकार कर इक्कठे हो कर लकड़ी इक्कठे करने चले जाते थे। और कम इक्कठा करने वाले को दुसरे दिन ओर अधिक इक्कठा करने को कहा जाता है। इस प्रकार बड़े बच्चों को अनुशासन का सिखाने में कोई कसार नहीं छोड़ते हैं और बच्चे भी दण्ड के डर से वे अनुशासन का पालन करते हैं और आगे चलकर ये बच्चे अपने प्रजा से प्रेम, सच्चाई, वीरता, निःस्वार्थ आदि सीखते हैं।

शेर के सिर पर लेखक का बच्चे का पात्र रखना शेर के सिर पर नृत्य नाटक को और भी महत्वपूर्ण बनाता है और इस नाटक के द्वारा पूर्वकाल के बच्चों को जिस प्रकार अनुशासन सिखाया जाता है, इसका जिक्र करना उचित होता है।

(छ) योद्धा :

वीर योद्धा सभी के लिए उनके दिल में उनके लिए इज्जत और सम्मान से देखा जाता था। सभी युवकों का उद्देश्य होता था वीर योद्धा बनना। जो योद्धा शिकार करने के बाद पशु

मारकर लाता हैं तो गाँव की युवतियाँ उन पर अपना जान छिडकती हैं और सबसे कमज़ोर समझने वाला भी शिकार में पशु को मार गिराकर लाता है, तो उस पर अपनी जान छिडकने के कारण हर योद्धा बनने की कोशिश में लगे होते हैं। वीर योद्धा के लिए अच्छे शिकारी से अच्छे अपने शत्रु के सिर काटने से बनता था।

पूर्वकाल में अक्सर युद्ध होता था इसलिए राजा और अपने गाँव की रक्षा अपने जान की बाजी लगाकर योद्धा अपना कर्तव्य मानकर चलते थे। इसलिए जो अपने शत्रु को मार गिराए उस योद्धा को बहुत ऊँचा सम्मान दिया जाता था। कहा जाता है - ' Mi that leh muvanlai chuanga leng tunge awm?' वीर योद्धा जब युद्ध करने निकलते हैं तो बहुत ही तैयारी से और उचित समय पर निकलते हैं।

वीर योद्धा को जब पता चलता हैं कि वे अपने शत्रुओं से थोडा सुरक्षित हैं और उनका गाँव अपने शत्रुओं से सुरक्षित हैं और त्योहार का समय भी होता है। सभी गाँव वाले अपने खेती के कामों से छुट्टी ले रहे होते हैं तो योद्धा जंगल में शिकार करने जाते थे, लेकिन शिकार करने सभी को जाना मना होता हैं। क्योंकि राजा सभी को शिकार करने के लिए भेजना उनके गाँव के लिए असुरक्षित होता था। इसलिए सभी को शिकार करने जंगल जाना माना होता है और कुछ योद्धा, युवक गाँव की रखवाली के लिए रहते थे।

"मैं भी तुझ पर तनिक दया नहीं करूँगा। तुम बड़े बेचारे हो गए हो। अपने सहायकों को पुकारों, मैं लेशमात्र भी नहीं डरता...."[13]

इस योद्धा के कथन से पूर्वकाल के योद्धा बहुत ही वीर योद्धा रहें हैं। पूरे गाँव की रक्षा उनके हाथ में होती हैं। और वीर योद्धा अपने प्रजा के लिए अपने जान दे सकने वाले योद्धा कहलाते थे। शेर के सिर पर नृत्य के नाटक से उनके पात्र और संवाद से भी प्रकट है कि योद्धा बहुत वीर, साहसी, बलवान आदि योद्धा कहलाते हैं।

निष्कर्षत : शेर के सिर पर नृत्य नाटक में प्रस्तुत पात्रों से पूर्वकाल के मिज़ो जाति के सच्चे व्यवहार, निःस्वार्थ, अच्छे आचरण, प्रजा की रखवाली एक सच्चे इन्सान की तरह गाँव और राजा की देखभाल करना एक एक पात्रों से प्रस्तुत होता है।

2.3 संवाद :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का जब संवाद विश्लेषण करते हैं,तो सामने आता है कि 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में आठ पात्र हैं। और नाटक का प्रत्येक पात्र अपने हर पात्रों के संवाद के द्वारा अपने अभिनय की पूर्ति करता है और नाटक को प्रभावशाली बनाता है। प्रत्येक पात्र ने अपने संवादों में अनेक प्रकार के भाव प्रकट किए हैं। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में लेखक ने मानव के व्यक्तित्व को प्रकट किया है। इस नाटक में प्रेम, एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना, मेलजोल, एकता, अपने से बड़ों की इज्जत की भावना को प्रकट किया है।

'शेर के सिर पर नृत्य' लोक कथा है। मिजोरम में पूर्व काल में जनसंख्या बहुत कम थी और जंगली जानवर बहुत थे। अन्य जंगली पशु गाँव के पशुओं का शिकार करते थे। और खेतों के अनाज, गेहूँ, फल आदि को भी नष्ट करते थे। जंगली पशु पालतू पशुओं के अलावा मनुष्यों को भी कभी- कभी अपना शिकार बनाते थे। इसी कारण मिज़ो जाति के पूर्वज अपनी सुरक्षा के लिए, अपने खेतों को बचाने के लिए, अपने पालतू पशुओं की सुरक्षा के लिए उन जंगली जानवरों को मार देते थे। मिज़ो जाति में जो जंगली पशु को मार गिराता था, उसे शूरवीर माना जाता था। उस समय युवकों के लिए एक प्रकार से अपनी बलवानी दिखाने का समय होता था। मिज़ो समाज में 'शेर के सिर पर नृत्य करना', 'आई' एक समान समझा जाता है।

'आई' नामक क्रिया के लिए कोई अच्छा समय नहीं होता है। जब गाँव में 'आई' नामक क्रिया का अनुष्ठान किया जाता, तो दिन भर मदिरा पी जाती और उस 'आई' अनुष्ठान के लिए पालतू पशु को भोजन के लिए तैयार किया जाता है। शाम को गाँव के सभी लोग एक साथ

भोजन किया करते। पशु के सिर पर नृत्य का अनुष्ठान किया जाता, तो उसके लिए गीत भी होता था।

"मनुष्य के सिर से ज्यादा या पशु के सिर का? आँगन भरी हुई हैं पशु के सिर के टाँगने की रस्सी, जिसमें एक पत्ता भी नहीं उगते।"[14]

मिज़ो जाति के पूर्वज पशु के सिर की बहुत इज्जत करते थे। कोई कभी जंगली पशु शिकारी के हाथों मरता, तो कभी भी उस मरे हुए पशु को यों ही नहीं फेंका करते थे। उसे एक सुरक्षित स्थान पर रखकर धूप में सुखाकर और सूखने के बाद अपने घरों पर टांग देते थे।

शेर के सिर पर नृत्य की बात कही जाए तो शेर ही ऐसा एक पशु है, जिसका सम्मान मिज़ो जाति के पूर्वज अपने युग में किया करते थे। शेर को उसके द्वारा किये आक्रमण में भी उसे माफ़ कर देते थे। यह भी एक आश्चर्य की बात थी। शेर को 'सपुई' कहकर ही पुकारा जाता था। इस प्रकार शेर के सिर पर नृत्य मिज़ो समाज की एक महत्वपूर्ण लोक कथा है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में मिज़ो समाज की एक महत्वपूर्ण लोक कथा को प्रस्तुत किया है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में मुख्य पात्रों के संवाद विश्लेषण में उद्घोषक के संवाद विशेष महत्व रखते हैं। पूर्व काल में मिज़ो जाति में उद्घोषक होते थे। उद्घोषक के आदेश अनुसार गाँव वालों को सूचना दिया करता था। " सुनो, सुनो! हमारे महामंत्री जी की ओर से महापशु के शव का अनुष्ठान कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। कोई भी जंगल न जाये। राजा की ओर से छुट्टी घोषित की गई है। लगभग दस बजे रंगभूमि पर सब को आना होगा। सभी माताओं और बच्चों को इस अनुष्ठान कार्य में भाग लेना है।"[15]

इस पात्र के कथन से यह प्रतीत होता है कि उद्घोषक किसी विषय की सूचना दे रहा है। उसके संवाद से एक व्यक्ति की घोषणा देने की बात प्रकट होती है। उद्घोषक को किसी बात की घोषणा करते समय, उसे बड़ी सावधानी से राजा के दिए गए आदेश की सूचना देनी होती है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में उद्घोषक के हर संवादों से उद्घोषक की विनम्रता प्रकट होती है। उसके संवाद में आज्ञा पालन करने वाली भावना प्रकट होती है।

युवक के वार्तालाप में 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में युवक का संवाद किसी-किसी जगह पर एक दुसरे को छेड़ने जैसे वार्तालाप के रूप मिलता है।

"तो फिर पुकारते जाओ मामू ।"[16]

इस संवाद में युवक द्वारा उद्घोषक को मामू कहकर पुकारने से एक दूसरे के प्रति छेड़खानी हंसी-मजाक जैसी प्रतीत होती है। साथ ही एक दूसरे के प्रति लगाव भी प्रतीत होता है।

"हम ले आएँ तुम बजाते रहना। (वह घंटों सहित ढोल को ले आया, आधिक भार की वजह से गिरते गिरते बचा) यह लो, जल्दी से अपने घंडी की ध्वनी की ताल से बजाओ बहुत लोग एकत्रित हो चुके हैं ।"[17]

इस संवाद से युवक के संवाद में अपने कर्त्तव्य का बोध प्रकट होता है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में राजा के संवाद से एक आदर्श व्यक्ति राजा की भावना प्रकट होती है। राजा के हर कथन में एक आदर्श संवाद के गुण देखे जा सकते हैं।

"महापशु के निमित अनुष्ठान कार्य सम्पन्न करने में समर्थ महामंत्री का होना हमारे लिए कितनी सौभाग्य की बात है! सुनिए, आज का पूरा दिन सभी काम से छुट्टी लेकर मनाया जाये। मदिरा के मटके भी कतार में लगाए जा चुके हैं। अहा, लाओ, लाते जाओ।"[18]

इस संवाद में राजा की वाणी में प्रेम की अनुज्ञा प्रकट होती है। जिस प्रकार राजा को अपने प्रजा से प्रेम होता है, वह इस नाटक में राजा के हर संवाद में देखा जा सकता है। राजा के

किसी भी संवाद में कठोरता का संवाद नहीं मिलता है। उनके हर संवाद में प्रेम, दया, आदर्श, आदि भाव प्रकट होते हैं। जो इस नाटक को संवाद की दृष्टि से प्रभावशाली बनाते हैं।

'शेर के सिर पर नृत्य नाटक' में महामंत्री के संवादों में एक आज्ञाकारी भावना को दर्शाया गया है।

"अहो भाग्य! हमारे राजा जी भी आ गए हैं। इनके सानिध्य में हम निश्चित रहेंगे। आप आ गए तो बहुत अच्छा हुआ"।[19]

इस वार्तालाप से सुकून वाली भावना प्रकट होती है। चकित होने वाला संवाद और उत्साह का संवाद प्रकट होता है। महामंत्री के संवादों से नाटक और ज्यादा प्रभावशाली बनाता है।

अगले पात्र के रूप में इस नाटक में वृद्ध के संवाद की बात कही जाए तो वृद्ध के संवाद बड़े रोचक हैं। वृद्ध के हर संवाद में भी बड़ी विनम्रता मिलती है।

" बच्चे : हाय रे, वे देखों महिला! इसमें क्यों भाग ले रही हैं ? अरे हमें बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा है।

वृद्ध : वे हमारे वीरगण हैं । ऐसे दिन पर वे स्त्रीरूप धारण करते हैं। देखों वे स्त्रियोचित हुक्का 'तुइबुर' पीकर पेटीकोट पहनते हैं। स्त्रियों की टोकरी 'एमर्पिंग' पीठ में ढो रहे हैं। तम्बाकू रखने के डिब्बें में राख रखकर फूंक रहे हैं और चरखे से बनू धागे का कुछ भाग हाथ लिए आ रहे हैं...तुम देखते रहो"।[20]

इस प्रकार वृद्ध के संवादों में प्रेम, विनम्रता, उत्साह, प्रोत्साहन आदि भाव देखने को मिलते हैं। इस वार्तालाप से स्पष्ट हो रहा है कि बच्चे को मनोरंजन देखने में कुछ खास मजा नहीं

आ रहा था, लेकिन वृद्ध बच्चों को बड़े प्रोत्साहन से उनके अन्दर उस नृत्य को देखने की उत्सुकता लाने का भाव प्रकट कर रहे हैं।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में वृद्ध के हर संवाद काफी दिलचस्प हैं। जितना भी बच्चे वृद्ध से सवाल पूछें, वृद्ध उनके सवालों का जवाब बड़ी विनम्रता से दे रहे हैं। इस प्रकार इस नाटक में वृद्ध के संवादों में विनम्रता मिलती हैं, जिससे यह नाटक संवादों की दृष्टि से और अधिक प्रभावशाली व रोचक बनता है।

इस नाटक को और ज्यादा प्रभावशाली बनाने के लिए बच्चों के संवाद में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस नाटक में बच्चों के हर कथन में एक भाव प्रकट होता हैं, जो बड़ों के प्रति सम्मान, श्रद्धा और विनम्रता को प्रकट करता है।

"अरे..अरे..देखो तो, महिलाओं की तरह वे उन्होंने अपने को सजाया। वे पेटीकोट पहन कर कर्ण फुली की तरह कान में हाथी दाँत के गहने भी पहन रखे हैं। सब से आगे वाले के हाथ में क्या है? इतना लम्बा, आश्चर्य है। चलो, छूकर देखे कि क्या है? नहीं, यह सही नहीं, अच्छा नहीं होगा।"[21]

बच्चों के संवाद से प्रकट होता है कि वे नई चीजों को जानने की उत्सुकता रखते हैं। जिस प्रकार बच्चे वृद्ध से सवाल करते हैं, उनमें एक मासूम बच्चे की इच्छा प्रकट होती है।

प्रस्तुत नाटक में जितने भी संवाद प्रस्तुत किये गए है सभी में एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना प्रकट होती है। इस नाटक में ऐसा कोई भी संवाद नहीं हैं, जहाँ क्रोध का स्वर हो। एक दूसरे के प्रति नफरत बिल्कुल भी नहीं है। इस नाटक के संवादों के जरिये मिज़ो जाति के पूर्व काल की उस स्थिति का पता चलता है कि वे उस समय परस्पर किसी तरह प्रेमभाव, मेलजोल

और सहृदयता से रहते थे। नाटक के अनेक पात्रों के संवाद के माध्यम से हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत संवादों ने नाटक को प्रभावशाली बनाने में बड़ी भूमिका का निर्वहन किया है।

निष्कर्षत : 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के संवाद सभी विशेषताओं से युक्त हैं। ये स्वाभाविक और मार्मिक होने के साथ-साथ सरल, के गुण से भरे हुए हैं। संवादों के माध्यम से पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का भी उद्घाटन होता है।

2. 4 देशकाल- वातावरण

नाटक के अंतर्गत देशकाल-वातावरण बड़ा महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्योंकि बिना उपयुक्त देशकाल का निर्माण किऐ नाटककार अपने अभिप्रेत को संप्रेषित करने में असमर्थ रहता है। देशकाल की सृष्टि किए बिना उसका कथानक पंगु-सा हो जाता है। पात्रों का आचार-व्यवहार, उनके कार्य-व्यापार, वस्त्राभूषण विधान और उनकी भाषा आदि के प्रति नाटककार यदि सजग नहीं है, तो वह अपने नाटक में यथार्थता और सजीवता कदापि नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि उसे जिस युग के कथानक को प्रस्तुत करना होगा, बिना उपर्युक्त सतकर्ताओं के वह उसे प्रस्तुत नहीं कर पायेगा। यहाँ नाटककार की सूझबूझ, उसका अनुभव उसके नाटक को सफल से सफलतम बनाने में योगदान देती है। ऐतिहासिक नाटकों में बिना उचित देशकाल के चित्रण के कथ्य संप्रेषण हो ही नहीं सकता। वास्तव में ऐतिहासिक नाटकों का देशकाल चित्रण ऐसे नाटकों का प्राणतत्व होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नाटक में जिस काल विशेष की कथा प्रस्तुत की जा रही हो, तो उसमें उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, धार्मिक आदि परिस्थिति का भी सफलता के साथ चित्रण होना आवश्यक है। इसमें तनिक सी असावधानी ऐतिहासिक नाटक को असफलता की ओर मोड़ देती है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो जाति की एक लोक परंपरा पर आधारित नाटक है। सभी आदिवासी जनजातियों की तरह मिज़ो जनजातियों को भी अपने प्राकृतिक अधिवास से

गहरा लगाव रहा है। इनके पूर्वज मिजोरम के सदाबहार वर्षा वनों में प्रकृति से तादात्म्य बनाकर रहते थे। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए मिज़ो जाति के लोग वनों पर निर्भर थे। खेती बाड़ी करना इनका मुख्य पेशा है। मांस हेतु जंगली पशु,पक्षी आदि का शिकार करना मिज़ो जाति के दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा था। मिज़ो जाति सभी प्रकार के जानवरों के मांस का सेवन किया करते हैं और यह परंपरा आज भी लगातार जारी है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो जाति के उस समय का है, जब मिज़ो जाति के रहन-सहन बहुत ही सरल आसान जीवन था। बीसवीं सदी के प्रारंभ तक मिज़ो जनजातियाँ मिजोरम के जंगलों में बसे अलग-अलग गाँवों में रहती थी। प्रत्येक गाँव का अपना-अपना मुखिया होता यानी राजा। सभी अपने राजा की इज्जत करते थे। गाँव की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के निर्धारण राजा की बहुत प्रभावकारी भूमिका होती थी। गाँव की सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के उपाय, सम्पूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक रीति का निर्धारण, झूम खेती हेतु स्थान का निर्धारण, दुश्मन आक्रमण की योजना आदि का निर्णय राजा की सहमति से किया जाता था। अपने-अपने गाँव में 'जोलबू' बनाते थे, जिसमें गाँव के 30 वर्ष की आयु तक के सभी विवाहित एवं अविवाहित पुरुष एक साथ 'जोलबूक' में रहते थे और किसी भी प्रकार की आकस्मिक घटना या दुर्घटना या बाहरी लोगों का सामना करने के लिए उनका एकजुट होना आवश्यक होता था। इसलिए 'जोलबूक' में सोते और रहते थे। बीसवीं शताब्दी के मध्य तक मिज़ो जनजातियों के गाँव एवं घर बाँस, लकड़ी से बने थे। पहाड़ी ढलान पर घुन न लगने वाली लकड़ी या बांस, जो स्थानीय स्तर पर बहुतायत में उपलब्ध थे।

'शेर के सिर पर नृत्य' मिज़ो समाज की अपनी एक लोक परंपरा का नृत्य है। मिज़ो जाति के पूर्वज शेर को अपना भगवान मानते थे। मिज़ो जाति के लोग जंगलों में जाकर शिकार करते थे। लेकिन शेर का शिकार कभी नहीं करते थे। परन्तु, जब शेर गाँव या गाँव के किसी

प्राणी पर आक्रमण करे तो शेर का शिकार करना आवश्यक होता था। परन्तु साथ ही यह भी ध्यातव्य रहे कि मिज़ो जाति के लिए शेर भगवान की तरह समझा जाता था, भगवान की तरह सबकुछ जानने वाला समझा जाता था। मिज़ो समाज में शेर को बहुत ऊँचा दर्जा दिया जाता था।

"उपरोक्त आंतकी शेर को मार गिराने के दिन में ही तत्काल 'आई' क्रिया करना संभव नहीं हो पाने के कारण अन्य दिन में करना होता है। उस शेर की खाल को निकालकर मांस की जगह भूसा भर दिया जाता और भूसा भरने का ठीक से सिलाई करते हैं और बाद में उसे धूप में सुखा देते थे, जिससे सूखने के बाद वह जीवित शेर जैसा दिखता था।"[22]

गाँव के उद्घोषक राजा के आदेश के अनुसार सूचना देता है कि "सुनो,सुनो! हमारे महामंत्री जी की ओर से महापशु के शव का अनुष्ठान कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। कोई भी जंगल न जाये। राजा की ओर से छुट्टी घोषित की गई है। लगभग दस बजे रंगभूमि पर सब को आना होगा। सभी माताओं और बच्चों को इस अनुष्ठान कार्य में भाग लेना है।"[23]

जब उद्घोषक द्वारा राजा के आदेश को प्रेषित किया जाता, तो गाँव के लोगों को काम से छुट्टी दी जाती थी। राजा के साथ सभी एक साथ कार्यक्रम में शामिल होते थे। इसलिए काम से सभी को छुट्टी दी जाती है और राजा के आदेश का पालन कर सभी धूम धाम से त्योहार हो या नृत्य, सभी मिलकर एक साथ मनाते और सामूहिक आनंद की परंपरा को कायम रखते।

पूर्वकाल में उनके लिए अनेक प्रकार के छुट्टियाँ होती थी, जिसे "**Awm ni kham ni**"(ओमनी खमनी) कहा जाता। जिस प्रकार उद्घोषक ने सूचना दी कि सभी के लिए छुट्टी हैं। जब किसी शुभ या किसी आयोजन में हों, तो सभी मिलकर एक दूसरे का साथ देते। इस "**Awm ni kham ni**" (ओमनी खमनी) के दिन कोई भी काम पर नहीं जाते। "**Awm ni kham ni**" (ओमनी खमनी) के कई प्रकार होते हैं :

1) Kawngpui siam (कोंगपुई सियाम)

2) Fano dawi (फनो दोई)

3) Kang ral (कंग राल)

4) Mizawn, hlangpuia zawn (मी जोम, ह्लंगपुई ज़ोन)

5) Sakei lu lam ni (सकैई लू लम नी)

6) Ral lu lam ni (राल लू लम नी)

7) Khaw kawng awm ni (खो खोंग ओम नी)

8) Sar thi awm ni (सार थि ओम नी)

9) Raicheh thih ni (राइचेह् थिः नी)

10) Sa hrang awm ni (सा हरंग ओम नी)

इस दिन सभी अपने कार्यों से छुट्टी लेते और कोई भी काम पर नहीं निकलते।

'शेर के सिर पर नृत्य' मिज़ो समाज की एक महत्वपूर्ण परंपरा है। जैसा कि नाटक में कहा गया है कि मिज़ो जाति में 'आई' क्रिया का आयोजन करने की परंपरा होती है। 'आई' उनके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। पूर्वकाल में गाँव-गाँव में युद्ध होता था। जब युद्ध होता था तो बच्चे को भी नहीं छोड़ते थे एक दूसरे का वार बहुत ही भारी होता था। इसलिए अपने शत्रु को मार गिराने वाले को बहुत ही ऊँचा दर्जा दिया जाता था। पूर्वकाल में शत्रु के सिर की 'आई' क्रिया उस जमाने की सबसे बड़ी अनोखी बात रही। जब अपने शत्रु पर आक्रमण करते हैं, तो बहुत सोच समझकर आक्रमण किया जाता है। आक्रमण करने का सही व उचित दिन और वक़्त होता था।

अपने शत्रु के सिर पर नृत्य करने के लिए मारे गए शत्रु के सिर को गाँव तक लेकर लाना होता था, लेकिन मारे गए शत्रु के सिर को गाँव तक ले जाना कठिन हो तो, केवल उसके सिर के ऊपर का हिस्सा, उसके बालों को साथ ही लेकर आते थे। मरे हुए शत्रु की लाश के ऊपर उसका नाम पुकारना, उसको धमकी देना है, क्योंकि परलोक में वह उसके लिए दास बन कर रहेगा। उनका मानना है कि जो अपने शत्रु को ज्यादा से ज्यादा मार गिराएगा, उसके लिए परलोक में इन्तजार करने वाले दास बहुत होंगे, ऐसा उनका मानना था। इस प्रकार की मान्यता उनकी संस्कृति में थी। जिस प्रकार शेर के सिर पर नृत्य की योजना प्रबंध करते हैं, उसी ही तरह उस शत्रु के सिर का 'आई' नृत्य का कार्यक्रम किया जाता है। इन सब बातों से हमें पता चलता है कि शेर को एक मामूली पशु नहीं समझा करते थे। जिस प्रकार अपने शत्रु के सिर की आई अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है। उसी प्रकार शेर के सिर के 'आई' नृत्य का अनुष्ठान कार्य की योजना करते थे।

पूर्वकाल और आज के युग में देशकाल और वातावरण में काफी विभिन्नता मिलती है।

"राजा : महापशु के निमित अनुष्ठान कार्य सम्पन्न करने में समर्थ महामंत्री का होना हमारे लिए कितनी सौभाग्य की बात है! सुनिए, आज का पूरा दिन सभी काम से छुट्टी लेकर मनाया जाए। मदिरा के मटके भी कतार में लगाए जा चुके हैं। अहा, लाओ, लाते जाओ।"[24]

प्रस्तुत वार्तालाप से पता चलता है कि पूर्वकाल में मिज़ो समाज में मदिरापान का प्रचलन अधिक था। मदिरा, जिसे आज हम शराब के नाम से जानते हैं। पहले के ज़माने में गाँव में कोई भी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता, तो मदिरापान को अवश्य शामिल किया जाता था।

कोई भी कार्यक्रम मदिरापान के बिना अधूरा समझा जाता था। साथ ही मदिरा का सम्मान किया जाता था। मदिरा को हर कोई हमेशा यो ही नहीं पीता था। लेकिन राजा और

मंत्री, जब चाहे मदिरा पी सकते थे। सामान्य मिज़ो समाज के लोगों में मदिरा पीने का समय होता था। स्त्रियों को भी मदिरा पीने की अनुमति होती थी। युवक और स्त्रियाँ को ज्यादा मदिरा पीने की अनुमति नहीं होती थी। स्त्रियाँ जब मदिरा पीती,तो वे थोडा पिया करती थीं।

लेकिन बुजुर्गो को नशा करने यानि मदिरा पीने की अनुमति होती थी। जब वे नशे के हालात में भी होते थे, तो कोई शर्मिंदगी की बात नहीं समझा करते थे। गाँव में थोड़े धनी परिवारों के पास हमेशा मदिरा होती थी। उस मदिरा को किसी भी त्यौहार या किसी भी कार्यक्रम के लिए सम्भालकर रखा जाता था। मदिरा चार प्रकार की होती थी। मिज़ो भाषा में Zupui (जुपुई), Tinzu (तिनजू), Zufang (जुफंग), Rakzu (रकजू) नामक की मदिरा होती थी। जुफंग (zufang) एक प्रकार के buhtun (बुतुन) से बनता है। मिज़ो समाज में इसका प्रयोग किया जाता है और हर घर में पिया जाता है। यह मदिरा एक प्रकार से मीठी होती है। इस मदिरा को बाहर नहीं लेकर जाते हैं। इस जुपुई मदिरा से नशा नहीं होता है, अर्थात इस मदिरा को मदिरा के अंतर्गत नहीं माना जाता है। बल्कि इस मदिरा को चाय के समान माना जाता है। नाटक में भी इस प्रकार की मदिरा का सेवन होते हुए देखा गया है।

Tinzu (तिनजू) नामक मदिरा चावल से बनाई हुई एक मदिरा है। इसे दोस्तों के साथ, किसी की मृत्यु पर पिया जाता है। यह पड़ोसियों के साथ पी जाने वाली मदिरा होती है। यह एक प्रकार से बहुत ही प्रसिद्ध मानी जाती है।

zupui (जुपुई) नामक मदिरा को बहुत स्वादपूर्ण मदिरा कहा जाता है। इस मदिरा को किसी विशेष अवसरों में पिया जाता है। नाटक में भी देखा जाये तो जब नृत्य की योजना होती है और नृत्य के शुरू होने से पहले राजा सभी के लिए मदिरा पिलाने की सूचना अपने मंत्री को देते हैं।

Rakzu (रकजू) मदिरा को बनाना एक कोई आसान कार्य नहीं होता है इसलिए इस मदिरा को कम ही बनाया जाता है। पूर्वकाल के समय शराब हर त्योहार पर या मृत्यु आदि होने पर परोसी जाती थी। इसलिए हर घरों में मदिरा केवल अपने लिए नहीं, बल्कि जरुरत पड़ने पर सार्वजनिक रूप से पी जा सकने के लिए भी मदिरा हर घर में उपलब्ध होती थी।

इस प्रकार मदिरा पीना मिज़ो जाति की अपनी एक परंपरा है। लेकिन आज के युग में इस परंपरा को नहीं अपनाया गया है।

"आइए ढोल बजाना शुरू करें और साथ ही गीत गाया जाए"[25]

मिज़ो समाज के लोग संगीत में काफी रूचि रखते थे। उनके समाज में हर कार्यक्रम के लिए गीत होता था।

"इस खूंखार शेर ने मेरे पालतू पशू को मारने की गलती की, मेरे इस आँगन में सर्वसमर्थ होकर मैंने इसे लिटा दिया, राज कार्य भाँती अपनी सामर्थ्य की घोषणा करता हूँ।"[26] इस प्रकार के काफी गीत होते हैं।

"हमारे महामंत्री जी की ओर से महापशु के शव का अनुष्ठान कार्य संपन्न होने जा रहा है"। [27] इस कथन का आशय है कि मिज़ो भाषा में 'ओमनीख़म' कहा जाता है जिसे एक प्रकार से छुट्टी कहा जाता है। गाँव में किसी भी प्रकार का कार्यक्रम होता, तो राजा की ओर से छुट्टी घोषित की जाती है। किसी को भी काम करने की अनुमित नहीं होती। इस प्रकार पता चलता है कि पूर्वकाल के लोगों में राजा के द्वारा एक दूसरे में काफी लगाव है। एक दूसरे के लिए भाईचारे का स्वभाव होता था। अर्थात राजा अपनी प्रजा को समनाता के साथ सम्भालते थे। राजा के द्वारा दिए गए आदेश का गाँव के सभी लोग उसका पालन अवश्य करते थे।

"मैं घंटों में सब से बड़े "दरखुआंग'' को बजाता हूँ''[28] पहले ज़माने में दरखुआंग केवल राजा और गाँव के धनी के पास ही रहता था, दरखुआंग एक एक प्रकार का यंत्र होता है, जो लोहे का बना होता है। इस यंत्र को ख़ासकर मिज़ो जाति के पूर्वज इस यंत्र को किसी के देहांत और शुभ दिनों में ही बजाया करते थे।

जब किसी का देहांत होता था तो उस मरे हुए आदमी के घर उसे धीरे-धीरे बजाया करते थे। पड़ोस के गाँव के किसी के रिश्तेदार का देहांत हो, तो उसके लिए भी बजाया करते थे। अर्थात किसी के भी देहांत की खबर पहुँचे उसकी सूचना देने के लिए इस यंत्र को बजाया जाता था। किसी भी शुभ दिन: जैसे लोक नृत्य में, किसी की शादी में आदि में बजाया जाता था। 'शेर के सिर पर नृत्य' कार्यक्रम में भी बजाया जाता था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता है कि किसी व्यक्ति के पास यह यंत्र दरखुआंग हो, और वह अपनी मन मर्जी से इसे कभी भी बजा सकता है। केवल दुर्घटना और शुभ दिनों पर ही बजाया जाता है।

इस नाटक में "थांगछुअपुआन"[29] का जिक्र किया गया है। यह एक पारंपरिक मिज़ो वस्त्र होता है। पूर्वकाल में मिज़ो जाति का यह पारंपरिक वस्त्र आज के समय में टटोला जाए तो उतना सुन्दर नहीं दिखता, जितना पूर्वकाल में मिज़ो समाज के बुजुर्गों के पास होता था।

लेकिन हर चीज अपने समय के अनुसार सुन्दर और अच्छी दिखती है। जिस तरह मिज़ो जाति के लोग वस्त्र पहनते हैं, उतना खर्च करना जरुरी नहीं होता था। उस जमाने में हर किसी के वस्त्र एक जैसे ही होते थे, अर्थात किसी के सुन्दर या नये। सभी के एक समान वस्त्र होते थे। लेकिन जेवरों में कान के झुमके, माला आदि में थोड़ा फर्क होता था। अमीरों के पास थोड़े अच्छे होते थे और कुछ गरीबों के पास कम।

पूर्वकाल में मिज़ो जाति के लोग अपने वस्त्र के लिए उतना खर्च नहीं करते। सभी अपने आप को साफ़ सुथरा रखते थे। मिज़ो जाति के पारंपरिक वस्त्र के बारे में कहा जाये तो

'थांगछुअपुआन' (Thangchhuahpuan) मिज़ो पारंपरिक वस्त्र में सबसे महँगा वस्त्र कहा जाता था।

"आस-पास खड़े युवक-युवतियाँ वीर नृत्य "सारलामकाइ'' प्रस्तुत करने लगे। इसमें वीर पुरुष के प्रति कितना सम्मान होता था, यह स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है।''[30]

इस कथन में "सारलामकाइ" का जो जिक्र किया गया है। यह एक लोक नृत्य है। 'शेर के सिर पर नृत्य' के अलावा भी ऐसे बहुत नृत्य है मिज़ो जाति में, जिनमें -

- खुआलाम
- चेरो
- छईहलाम
- ल्लांगलाम
- चाईलाम
- सारलामकाई
- चोंगलाईज़ोन

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में "चोंगलाईज़ोन'' के नृत्य का जिक्र किया है। इसके बारे में कहा जाये तो इस नृत्य को लाई जाति के लोग 'सारलामकाइ' कहते हैं। लुशाई के लोग 'राल लू लाम' कहते हैं। मारह के जाति लोग 'सोलाक्या' कहते हैं।

पूर्वकाल में जाति के भेद-भाव में काफी युद्ध होता था। अपने शत्रु की लाश से 'आई' नामक अनुष्ठान किया जाता था। इसका कारण यह है कि अगर मरे हुए शत्रु का वे 'आई' नहीं करेंगे तो मारने स्वयं के मरने के बाद परलोक में उसका गुलाम बन जायेगा। इस अनुष्ठान की क्रिया को पांच दिन में करते हैं। सबसे पहले दिन और दूसरे दिन में मदिरा पीकर गीत गाकर

ख़ुशी से आनंद किया जाता है। तीसरे दिन सूअर को काटते हैं और जिस वीर ने शत्रु को मार गिराया है, वह सूअर के खून को अपने पूरे बदन में लगाता है। चौथे दिन या पाँचवें दिन नहाता है और अपने शारीर में लगे हुए खून को धोता है। पाँच दिन पूरे होने से पहले उसके पास कोई भी लड़की का साथ होना अशुभ माना जाता है।

पूर्वकाल में जो शत्रु को मार गिराए और 'आई' नामक अनुष्ठान क्रिया का आयोजन करे, उसे गाँव में राजा की ओर से व पूरे गाँव की और से सम्मान मिलता था।

"बच्चे : हाय से, वे देखों महिला! इसमें महिला क्यों भाग ले रही हैं? अरे हमें बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है।

वृद्ध : वे हमारे वीरगण हैं। ऐसे दिन पर वे स्त्रीरूप धारण करते हैं! देखो वे स्त्रियोचित हुक्का 'तुईबूर' पीकर पेटीकोट पहनते हैं। स्त्रियों की टोकरी 'एमपिंग' पीठ में रहे हैं। तम्बाकू रखने के डिब्बे में राख रखकर फूँक रहे हैं और चरखे से बुने धागे का कुछ भाग हाथ में लिए आ रहे हैं ...तुम देखते रहो।"[31]

स्त्रीरूप धरण का आशय यह है कि एक राजा के साथ पुत्र और एक बेटी थी। एकलौती बहन और बेटी होने के कारण राजा उसे बहुत प्रेम करते थे। कभी उसको अकेला नहीं छोड़ते थे। खेतों में भी अपने साथ ले जाया करते थे। एक दिन जंगल की ओर शिकार पर जाते हुए समय एक शेर उनकी बहन पर हमला कर देता है। वे शेर के हाथों अपने बहन को नहीं बचा पाते हैं, लेकिन अपनी बहन को शेर से बचाने के लिए पूरी कोशिश में लग जाते हैं। अपनी बहन को घायल होते हुए पाते हैं। उनकी बहन की साँस चल रही होती है। शेर को अपनी घायल बहन के ऊपर घेरते हुए देखते हैं। इस प्रकार उनका दिल बहुत क्रोधित होता है। और वे शेर को मार गिराते हैं। लेकिन अंत में अपनी बहन को नहीं बचा पाते हैं। इस घटना के चलते 'शेर के सिर पर नृत्य' में उस लाचार बहन के बदले के लिए जब शरारती शेर का शिकार कर

उसे मार कर गिराए जाने पर, जिस शेर ने लड़की को पूरी तरह घायल कर मार दिया था। उसी तरह शेर के सिर पर नृत्य आई नामक अनुष्ठान क्रिया आयोजन किया जाता है तब पुरुष इस शेर के सिर पर नृत्य के लिए स्त्री रूप धारण करके स्त्री के वस्त्र पहनकर शेर के सिर के ऊपर नृत्य करते हैं।

"तत्कालीन मान्यता के अनुसार जब शेर के शव की चारों ओर नृत्य कर रहे होते हैं, तब अन्य शेर भी एकत्रित होकर पास के पहाड़ों पर छुपकर उस दृश्य को देख रहे होते हैं। जब स्त्री रूप धारी शिकारी लोग मरे हुए शेर का उपहास कर रहे होते हैं, तो छुपकर देखने वाले अन्य शेर आपस में कहते कि अबे, देख तो ले, स्त्रियों के सामने हारकर तनिक भी हिल नहीं रहा है। ऐसे कायर को मर जाना ही उचित है। बाद में जब शिकारीगण अपने वस्त्र-शास्त्र से सुसज्जित होकर उस शेर की परिक्रमा करते देखकर शेर आपस में कहते कि "अरे बाप रे! ऐसे वीरों के सामने कौन ठहर सकता है? वे बहुत ही भयानक हैं, चलो, हम को भी मार देंगे, ऐसे कहकर अन्य शेर भयभीत होकर भाग जाते हैं।"[32]

"युवकगण : चलो , शेर के सिर पर नृत्य करने का अनुष्ठान क्रिया तो पूरी हो गई। इस शेर का सिर तो नष्ट हो गया। अपने पूर्वजों के नियमानुसार अनुष्ठानकर्ता के आंगन में 'सेलुफन' नामक अभिषिक्त खम्भा गाड़ा जाएँ। उनके द्वारा वध किये गए अन्य पशु का सिर ठीक और उचित रीती से टाँग दिया जाय।"[33] इस कथन में जिस 'सेलुफ' के बारे में कहा गया है। इस नाटक में, पूर्वकाल में मिज़ो जाति द्वारा जिस पशु का आई नामक क्रिया का अनुष्ठान किया जाता है, उस पशु के सिर के टाँगने को जो लम्बी लकड़ी होती है, उसे 'सेलुफन' कहा जाता है। मरे हुए पशु के सिर के सेलुफन के लिए, टाँगने के लिए एक लम्बी और अच्छी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। पूरे उचित ढंग से 'सेलुफन' का आयोजन किया जाता है। शाम को 'सेलुफन' में मरे हुए पशु के सिर को टाँगने के कार्यक्रम का आयोजन होता है। इस लकड़ी की

लम्बाई आठ से दस फिट की होती है। बुजुर्ग लोग मदिरा पीकर गीत गाते हैं, जब 'सेलुफन' कार्य होता है।

"पहले ज़माने में बुजुर्ग मदिरापान का आयोजन करते थे तब अपने सारे खानदान को इक्कठा कर इस गीत को गाया कर ही मदिरापान किया जाता है। तीन बार यही गीत गाया जाता है। माँ के दादा, पिता के दादा अपने दाएँ हाथ से मदिरा को तीन-तीन बार पीते हैं और उसके बाद अन्य लोग मदिरा पीते हैं। ऐसा करने का कारण है कि यह इश्वर का आशीर्वाद पाने का एक साधन माना जाता है।"[33]

"दूसरा मंत्री : चलों, मैं गीत की मैं गीत की अगुवाई करता हूँ, ढोल वादक भी तैयार हो चूके हैं ..."[34]

इस कथन से प्रतीत होता है कि मिज़ो समाज के लोग पूर्वकाल से लेकर आज तक संगीत-नृत्य में काफी रुचि रखते हैं। ख़ुशी का कोई उत्सव हो या दुर्घटना, इनके लिए हर घटनाक्रम के लिए उसी अनुरूप संगीत और नृत्य है। संगीतकार की राजा और गाँव के सभी लोग बहुत ही इज्जत करते हैं। पूर्वकाल में मिज़ो जाति के पूर्वज संगीत में काफी रुचि रखते थे। लेकिन उनके पास संगीत के कुछ खास उपकरण नहीं थे। जो थे वह यह हैं –

Tingtang (गिटार): पहले के जमाने में गिटार उनके लिए सबसे ज्यादा प्रसिद्ध उपकरण था। गिटार पर गीत इस प्रकार से गाया जाता है:

"मैं जल्दी से दोड़कर आ रहा हूँ मेरा इंतजार करना वही जगह जहाँ हम मिला करते थे, अमीर इंसान को न चुन कर मुझ जैसे गरीब इंसान को चुना मेरे प्रिय सियाम चुअङनुङ।"[35] ऐसे बहुत सारे गीत होते थे।

ज़ोलपाला और तुअल्वुंगी के गिटार गीत भी कुछ इस तरह कही गयी है-

"मेरे प्रिय गए हैं उस समुन्द्र के पार, लाये सौ मिथुन के झुंड, मेरे प्रिय ज़ोलपला की हुई बड़े धूमधाम से स्वागत।"[36] इस तरह कई गीत होते हैं।

संगीत के उपकरणों में पूर्वकाल में गिटार के अलावा अग्रलिखित उपकरण भी थे -

1. Bengbung (बेङबुङ)
2. Darbu (दरबु)
3. Darkhuang (दारखुआङ)
4. Liandang khuang (लिआनदाङ खुआङ)
5. Hnah tum (ह्ना तुम)
6. khuang (खुआङ)
7. talhkhuang (तल्हखुआङ)
8. Thingkhuang (थिङखुआङ)
9. Rawchhem (रोछेम)
10. Tumphit (तुमफित)
11. Buhchang khuang (बुहचाङ खुआङ)
12. Phenglawng (फेङलोङ)

इस प्रकार के कुछ उपकरणों का प्रयोग किया जाता था। 'शेर के सिर पर नृत्य' में भी संगीत गाकर 'khuang' (खुआंग) ढोलक आदि का प्रयोग किया गया है। पूर्वकाल के पूर्वज

अपने हर उत्सव में, त्योहार में 'शेर के सिर पर नृत्य' को बहुत ही आनंद और बड़े उत्साह के साथ संगीत और नृत्य के साथ मनाया करते थे।

"अन्य मंत्री : मधुशाला के मधुर गीत, खूंखार पशु को मारने बाद गाये जाने योग्य अनेक गीत गाये जाएँ । मिथुन की सींग बजानेवाले भी और जोर से बजावें"[37]

इस कथन में इस मिथुन की सींग का जिक्र किया गया है। उसे 'fungki' (फूंकी) कहा जाता है। फूंकी एक प्रकार का संगीत उपकरण है, जो मिथुन का सींग होता है और इस फूंकी को पूर्वकाल में पूर्वज शिकार करने के लिए निकालते थे। खेती-बाड़ी करने निकलते हैं, तब इस फूंकी को साथ ले जाते हैं। इसके अन्दर बन्दूक की गोलियाँ रखते थे। इसे बजाया भी जाता है।

" वृद्ध : वे हमारे वीरगण हैं। ऐसे दिन पर वे स्त्रीरूप धारण करते हैं! देखो वे स्त्रियोचित हुक्का 'तुइबूर' पीकर पेटीकोट पहनते हैं। स्त्रियों की टोकरी 'एमपिंग' पीठ में ढो रहे हैं। तम्बाकू रखने के डिब्बे में राख रखकर फूंक रहे हैं और चरखे से बने धागे का कुछ भाग हाथ में लिए आ रहे हैं.... तुम देखते रहो"[38]

इस कथन से पूर्वकाल में किस प्रकार के वस्त्र पहना करते थे, इसका जिक्र करना उचित है। आम तौर पर पूर्वकाल के पुरुष, युवक वस्त्र नहीं पहनते थे, अर्थात बहुत ही कम वस्त्र पहनते थे। वे केवल सफ़ेद लूंगी ही पहनते थे। उसे भी अपने घुटनों के ऊपर तक पहना करते थे। उस समय के पुरुष, युवकों के बाल छोटे नहीं होते थे। वे अपने सिर पर एक पगड़ी जैसे बाना पहना करते थे। माला और कान के झुमके भी पहना करते थे।

"सन 1911 से कपड़े (कमीज़) पहना शुरु किए। फ्रांस राज्य में जाकर युद्ध से लौटकर आने के बाद तो वेह पेंट,कोट, नेकटाई,जूते पहनने शुरू किये"[39]

स्त्रियाँ सफ़ेद लुंगी और उसके ऊपर गर्दन तक ही कपड़े पहनती थी। जिनके पास माला होती हैं, तो उसे पहनते हैं। हाथी के दांत के बने कान के झुमके पहना करते थे। कहा जाता है कि 'Chhawng hnawh' (छोङ्ह्नोह) के दिन स्त्रियों के सजने का दिन होता था। 'Chhawng hnawh' (छोङ्ह्नोह) के दिन कपड़े और ह्मारआम (Hmaram) लुंगी पहनते थे।

"वृद्ध : भाले और तलवार को हाथ में लेकर नाचना तो बहुत उत्साह की बात है ही। इस प्रकार से नृत्य प्रस्तुत कर पाने वाले एक गाँव/ नगर के प्रख्यात वीर ही होते हैं जिनसे लोगों को मन ही मन सांत्वना मिलती है"।[40]

जब मिज़ोरम ब्रिटिश सरकार के शासन के अधीन था। उन दिनों मिज़ोरम राज्य को कोई जानता या मिजोरम से कोई नाता ही नहीं था। किसी दूसरे राज्य को जानना तो बहुत दूर बात थी। मिज़ो जाति अपने ही राज्य में अपने राजा के अनुसार ही जीवन जीते थे।

जैसे-जैसे समय बीतता चला गया। मिजोरम के राज्य के पास ही कचार राज्य पर आक्रमण हुआ। कचार राज्य भी ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया। वहीं से "मिजोरम को 1892 A.D में ब्रिटिश सरकार ने कब्जा कर दिया।"[41] इस प्रकार मिजोरम भी ब्रिटिश ने कब्जा करने के कारण युद्ध से मुक्त नहीं हो सकता था। मिज़ो वीर योद्धा सभी युवक योद्धा, सभी युवक युद्ध में ब्रिटिश की ओर से अपनी पूरी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार हो गए।

Abor (अबोर), प्रथम विश्व युद्ध, द्वितिय विश्व युद्ध के लिए मिज़ो वीर योद्धा भी ब्रिटिश राज्य को बचाने के लिए युद्ध में कूद पड़े। इस युद्ध से मिज़ो समाज में काफी बदलाव भी आने लगे।

अबोर की बात कही जाए, तो जब ब्रिटिश सरकार ने मिजोरम में अपना राज्य चलाना शुरु किया, तब राजा के द्वारा भी अपना राज्य चलाना शुरू किया। मिज़ो जाति को अपने वश

में करके नौकरों जैसा काम करवाने लगें। अनके पालतू पशु गाय, बकरी, मुर्गे आदि को जब उनका मन किया, उनसे देने का आदेश देते चले गए। मिज़ो समाज, पूरा गाँव ब्रिटिश सरकार का गुलाम बन गया। ब्रिटिश सरकार ने मिज़ो जाति को अपना गुलाम बना दिया।

वक्त बीतता चला गया। ब्रिटिश सरकार ने अबोर राज्य को अपना गुलाम बन जाने के लिए कहा। सन् "1911 में सभी मिज़ो युवकों को श्रम कोर्प के लिए आदेश दे दिया। इसलिए इस तरह के शोषण को मिज़ो जाति ने अबोर नाम दिया"।[42]

इस श्रम कोर्प में सभी युवकों ने स्वीकार कर लिया था उनके लिए युद्ध करना तो पहले से ही शौक था। ब्रिटिश सरकार को जितनी आवश्यकता थी, उतने सैनिक सरकार को मिले भी। यह सबसे पहला समय था, जब मिज़ो जाति ने दूसरे राज्य पर कदम रखा। युद्ध से लड़ने के बाद उनमें काफी बदलाव आये। उनके हाथ में तीन पैसे थमाए। किसी ने हिंदी भाषा सीखी। दूसरे राज्य के व्यवहार भी सीखे। कहा जाता है कि युद्ध से लड़ने के बाद ही युवकों ने सफ़ेद कमीज़ और खाकी पहनना शुरू किया। जो पहले केवल लुंगी पहना करते थे। यूनिफार्म मिलने के कारण जूते भी पहनने शुरू किये। दूसरे राज्य में जाकर, फिर लड़ने के बाद उनके सारे व्यवहार में बदलाव आने लगा। उन दिनों पैसे की कीमत बहुत ज्यादा होती थी। पैसा बहुमूल्य होता था।

दुनिया के दो बड़े राष्टों ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी दोनों में सन् 1914 में युद्ध छिड़ गया। दोनों के पास दोनों तरफ से सिपाही ज्यादा होने के कारण यह प्रथम युद्ध कहा गया था। एक बार फिर उस प्रथम युद्ध में मिज़ो युवक को ब्रिटिश सरकार के राज्य को बचाने के लिए युद्ध में कूद पड़े।

फ़्रांस में युद्ध छिड़ा तरह-तरह की बंदूकों की आवाज़ में समय बिताने लगे। किसी ने अपने प्राण खोये। काफी युद्ध होने के बाद जर्मनी सरकार भी अंत में कुछ नहीं कर पाई। सन्

1918 सितम्बर के महीने में मिजोरम के अपने राज्य की तरफ लौट आये। आइजोल में उनके परिवार, दोस्त सभी उनका इंतजार कर रहे होते थे। जब एक दूसरे से मिले तो बहुत ही खुश हुए, गले मिले। लेकिन किसी के लिए इंतजार ही रह गया।

जब मिज़ो जाति के वीर युवक युद्ध से वापस आये। उन्होंने दूसरे राज के व्यवहार, रहन-सहन, आदि सब कुछ सीखा। सभी युवक अपने शरीर को पहले ढका नहीं करते थे। वे अपने शरीर को कमीज़ द्वारा ढकने लगे। खेल-कूद में भी बहुत ही आगे बढ़कर, हॉकी, फुटबॉल खेल हर गाँव में खेला जाने लगा। इस प्रकार मिजो वीर युवकों के प्रथम युद्ध में जाने से मिज़ो समाज में काफी बदलाव आया।

फिर दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। ब्रिटिश सरकार के विशाल अनुशासन से तंग आकर जापान और जर्मनी दोनों मिल गए। जापान अपने में बहुत ही तेज था उसकी सेना काफी तेज और उनके पास बारूद भी काफी था। जापान ने फिलीपींस पर कब्जा कर लिया। सिंगापुर से होकर थोड़ी देर में बर्मा पर भी पूरा कब्जाकर कोहिमा पहुँच गए। बर्मा के पाईते के सिपाहियों ने कहा "**Janpan chu a tih a tih lual an ni lo, a likin an li dul dul mai, darkhuang angin**"(जापान चू अ तिह अ तिह लुअल अन नि लओ, अ लिकिन अन लि दुल दुल मई, दरखुंग अङिन) इसका मतलब है जापान के सिपाही इतने ज्यादा हैं कि उनका मुकाबला करना मुश्किल था। भारत भी ब्रिटिश सरकार के कब्जे में होने के कारण युद्ध के लिए तैयारी में जुड़ गया। इस युद्ध में मिज़ो के वीर योद्धा फिर युद्ध के लिए कूद पड़े।

मिज़ो जाति के लोग पूर्वकाल में युद्ध में संलग्न रहा करते थे। पहले केवल अपने ही राज्य के गाँव और दूसरे गाँव में ही युद्ध करते थे। भाल, तलवार और बंदूक का प्रयोग किया करते थे। आगे चलकर विश्व युद्ध में भी लड़ें। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में प्रस्तुत कथन से

प्रकट है कि मिज़ो जाति भी युद्ध में शामिल हुई। इस तरह मिज़ो समाज में भी युद्ध के बाद बदलाव आने लगे और मिजोरम राज्य भी अन्य राज्यों की तरह जाना पहचाना जाने लगा।

"वृद्ध : वे हमारे वीरगण हैं। ऐसे दिन पर वे स्त्रीरूप धारण करते हैं! देखों वे स्त्रियोचित हुक्का "तुइबूर" पीकर पेटीकोट पहनते हैं। स्त्रीयों की टोकरी "एमपिंग" पीठ में ढो रहे हैं। तम्बाकू रखने के डिब्बे में राख रखकर फूंक रहे हैं और चरखे से बने धागे का कुछ भाग हाथ में लिए आ रहे हैं....तुम देखते रहो।"[43]

इस कथन में जिस "तुइबूर" का जिक्र किया गया है। यह आजकल के जमाने में जिस प्रकार इंसान तम्बाकू, पान, आदि का सेवन किया करते हैं। उसी तरह पूर्वकाल में पूर्वज भी इन सभी का सेवन किया करते थे। उनमें से 'तुइबूर' का सेवन किया जाता था। इस 'तुइबूर' को बस अपने मुँह के अन्दर बिना पीकर रखा जाता है। अगर गलती से पी लिया जाता, तो 'तुइबूर' का नशा बहुत ही तेज होता है। आज भी तुइबूर का सेवन मिज़ो समाज में कई लोग करते हुए दिखाई देते हैं। तुइबूर पानी का बना होता है। तुइबूर को आग के राग से बनाया जाता है। तुइबूर बहुत ही उत्तेजक होती है। पूर्वकाल में इसका सेवन बहुत ही खुले आम से किया जाता था। ज्यादातर बुजुर्ग, माता-पिता इस तुइबूर का सेवन करते थे। युवक और युवतियों में काफी कम सेवन करने वाले होते थे।

दूसरे वाक्य में जिस "एमपिंग" का जिक्र किया गया है। यह "एमपिंग" मिज़ो जाति से इसका बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। आज के युग में इस एमपिंग का उतना प्रयोग नहीं किया जाता है। एमपिंग के बदले आज ज्यादा जगहों में थैले की प्रयोग किया जाता है।

पूर्वकाल में पूर्वजों के लिए एमपिंग बहुत ही उयोगी होता था। एमपिंग खासकर महिलायाँ, युवतियाँ, बच्चे के लिए होता था। जंगलों में से लकड़ी लाने, नदी में से पानी भरकर लाने के लिए एमपिंग का प्रयोग करते थे।

खेतों से अपने उगाई हुए फसल, अनाज आदि को भरकर लाने के लिए एमपिंग का प्रयोग करते हैं। एमपिंग बमबो से बनता है। पूर्वकाल में मिज़ो जाति में एमपिंग एक ही नहीं, बल्कि अनेक प्रकार के होते थे। जिसे मिज़ो भाषा में एमपिंग के अलावा :

- Dawrawn (दारओन)
- Thul (थुल)
- Thlangra (ठंग्र)
- Kho (खाऊ)
- Nghawngkawl (ह्नोंग्कोल)
- Bawmrang (बोमरांग)
- Paikawng (पाईकोंग)
- Bawng (बोंग)

इस प्रकार के सामान पूर्वकाल में पूर्वज रखने उठाने आदि के लिए इस्तेमाल किया करते थे। ऐसा देशकाल-वातावरण इस नाटक में प्रस्तुत होता है।

निष्कर्षत : डॉ. ललल्लुआङलिआना खिआंगते ने नाटक में देशकाल की सीमाओं को सुरक्षित रखा है। मिज़ो जाति के रीति-रिवाज, रहन-सहन, आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक परिदृश्यों का सफल चित्रण आलोच्य नाटक के अंतर्गत किया है।

2.5. अभिनेयता :

नाटक से संबंधित अभिनेयता और रंगमंचीयता दो अलग-अलग तत्व हैं। रंगमंचीयता शब्द इस ओर संकेत देता है कि अमुक नामक रंगमच पर प्रदर्शित होने के उपयुक्त है या नहीं। रंगमच में नाटकीय दृश्य विधान आता है। अभिनेयता का सीधा सम्बन्ध अभिनय से है। अर्थात पात्रों के कार्य-व्यपार से हैं। भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अभिनय के चार अंग बताए हैं -

अ) आंगिक : शरीरिक अंगो से किया जाने वाला अभिनय

आ) वाचिक : वाणी के द्वारा भावों की अभिव्यक्ति

इ) आहार्य : वेषभूषा, साज – सज्जा से अपने को प्रकट करना ।

ई) सात्विक : एकाग्र मन से भय, आश्चर्य, उत्सुकता आदि का अभिनय ।

अभिनय शब्द समग्र पारिभाषिक अर्थ में नाट्य प्रयोग की सकल सम्भावना व प्रक्रिया को सूचित करता है। इस सकल सम्भावना और प्रक्रिया को चरितार्थ करने वाला अभिनेता ही होता है। अभिनेता नाट्य-अभिनय के द्वारा ही अपने आप को प्रकट, परिभाषित, विस्तारित और रूपांतरित करता है। वह देह, वाणी, बाह्य सामग्री और मन को आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक अभिनय से ही निस्पंदित करता है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो जाति की एक लोक कथा है। जिसे लेखक ने नाटकीयता के द्वारा प्रस्तुत किया है। 'शेर के सिर पर नृत्य' एक ऐसी नाट्य कथा है, जिसमें पूर्व काल में मिज़ो जाति के पूर्वज किसी भी पशु के सिर का सम्मान करते थे। अर्थात् किसी भी पशु को मार गिराया जाता है, तो उसके मरे हुए शरीर को यूँहीं नहीं फेंके करते। उसे किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाकर, उस मरे हुए शरीर को धूप में सुखाकर रखा जाता था। मिज़ो जाति के लिए 'आई' नामक क्रिया करना उनकी परंपरा थी। हमारे पूर्वजो को शेर का 'आई' करना बहुत ही महत्वपूर्ण लगता था। शेर को जिस तरह मानते थे, अद्‌भुत था। वे शेर का नाम भी यूँहीं नहीं पुकारते थे। अपितु उसे 'सपुई' या 'सकओल' कहकर पुकारते थे। एक 'टिल' की तरह उसे जो कि अंतर्यामी है, जिसे लगभग दूसरों के बारे में पता होगा। उनका मानना था कि शेर चोरी छुपे गलत काम करने वालो को और बेवफओं को अच्छे से पहचान लेता है। परन्तु, अच्छे कर्म करने वालों का कभी नुकसान या चोट नहीं पहुँचाएगा, ऐसा मानना है। इसलिए उनका

मानना है कि शेर यदि किसी को काटता है। इसका मतलब उस व्यक्ति ने कुछ बुरा किया होगा। यदि एक शादीशुदा औरत किसी पराये मर्द के साथ भाग जाती है, तो शेर के काटने के डर से उसे अपना जुल्म कैसे भी कुबूल करना ही पड़ता है। इसलिए वह एक नन्हे बच्चे के कान में धीरे से 'मैं कायर हूँ' कहकर बोलती है।

शिकारी भी शेर का यूँहीं शिकार नहीं किया करते हैं। अपनी सुरक्षा के लिए जब कभी मार भी देते हैं, तो दूसरों के सामने वह कुबूल नहीं करता। अपितु कहता है कि प्राकृतिक हादसा हो गया होगा। उस पर जश्न मनाने के बजाया छुपा देते हैं। उसकी लाश तक को हाथ नहीं लगाते हैं। मिज़ो जाति में लाइ (पोइह) ऐसी एक उप जाति है जो शेर को अपने भाई की तरह मानती हैं। यदि कोई शेर मरता है, तो उसकी लाश को इन्सान की लाश के तरह, लाश के पास बैठकर नियमित रूप से अपने काम पर कोई भी नहीं जाता। उनका मानना है कि 'पोइह' जाति के शेर बिलकुल भी नहीं काटता है।

समय के चलते शेर के प्रति यह विचार भी बदलने लगा। जानवरों को काटना तथा दूसरों के घर से इन्सान को उठाकर काटने के वजह से लोगों को शेर को मार गिराना, बुरा या पाप नहीं लगने लगा। शेरों का शिकार जोरों से होने लगा। जब शेर को मार गिरा है, तो उसे राजा 'आई' करते हैं। जश्न मनाते हैं, इसे 'सपुइ वुइ' कहते हैं।

शेर का 'आई' करने के लिए प्रत्येक जानवरों के सिर का उपस्थित होना अनिवार्य है। इसके लिए सांड, सूअर, बकरी एवं कुत्ते का उपयोग कर सकते हैं। केवल सांड का भी उपयोग किया जा सकता है। दूसरे जानवरों के 'आई' की तरह ही शेर के आई का कोई निश्चित समय नहीं होता। उसके मरने के तुरंत या तो अगले दिन पर भी किया जा सकता है। मरने के तुरंत बाद उसकी 'आई' करते हैं। तो, वह लाश राजा के घर के सामने रखकर लकड़ियों के बीच खड़ा कर टांगी जाती है। परन्तु, यदि उसकी मौत के देर बाद उसकी 'आई' हुई, तो शेर का छीला-

फटा चमड़ा को फिर सिल देते हैं। उसके पेट के अन्दर पत्ता भर देते हैं। ताकि वो असली खड़ा जैसा दिखे। फिर उसे प्रजा के सामने दूर खड़ा कर देते हैं।

शेर के 'आई' होने वाली रात को उसका शिकार करने वाले और पंच काटने वाले को सोने की इज़ाज़त नहीं होती। उस दिन किसी को भी बारह किसी ओर काम पर जाने की अनुमति नहीं होती है। अपनी अपनी जगह, घरों में सब रहते हैं। स्त्रियों को नाली से पानी लेने जाना होता भी है, तो मर्द उसकी सुरक्षा के लिए उनके साथ जाया करते हैं। यह माना जाता है कि 'शेर के सिर पर नृत्य' करने के दिन कोई बाहर निकलता है, तो शेर उसे काट लेता है। इसलिए चौकन्ना रहते हैं। राजा के दरबार में विभिन्न प्रकार का गाना और मनोरंजन किया जाता है :

"छिमबुक लेह पेङ पेङ इनताऊ,

अ लू लमकोङ, लू लम कोङ"

यह गीत गाकर जानवरों की बलि चढ़ाते हुए मदिरा और मांस पूरा गाँव खाकर आनंद लेते हैं। यह मानना है कि दूसरे पहाड़ से बाकी शेर इस मनोरंजन को देख घबराते हैं और डरते हैं। जिसने उनके दोस्त शेर को मारा हो, वह कितना बलवान है, ये सोचकर उस जगह से दूर भाग जाते हैं। यदि उस शेर ने किसी को पहले से काट दिया होगा, तो उसकी आँखों की गुठलियों को लकड़ी से निकाल कर फैक दिया जाता है और अंत में उसकी लाश को फैक दिया जाता है।

इस प्रकार 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक द्वारा मिज़ो लोक परंपरा की कथा को में लेखक ने बहुत ही साफ़ और सही प्रकार से प्रस्तुत किया है। काफी हद तक नाटक में जितने भी पात्र हैं, सभी पात्रों ने अपनी-अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में पात्रों ने अपनी-अपनी भूमिका बहुत सही और अच्छे ढंग से निभाई है । 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में प्रमुख पात्रों में सबसे पहले उद्घोषक आते हैं।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में उद्घोषक ऐसे पात्र की भूमिका निभाते हैं, जिनका कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। प्राचीन काल में मिज़ो जाति में उद्घोषक को नगर और गाँव वालों को उचित सूचना देने का कार्य होता थ। लेकिन राजा के आदेशानुसार ही उद्घोषक निवासियों के लिए उचित और सही सूचना देते थे। राजा के आदेश के बिना उद्घोषक को अपनी मन मर्जी सूचना देने का अधिकार नहीं होता था। इस नाटक से प्रकट होता है कि उद्घोषक अपना कार्य बहुत ही सही और अच्छे तरीके से निभाता था। अर्थात उद्घोषक के द्वारा सूचना देने और सूचना में कही हुई बात गाँव के लोगों को अवश्य पालन करना होती थी। गाँव के निवासियों के लिए उद्घोषक का होना बहुत ही आवश्यक होता था। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में उद्घोषक की भूमिका को उद्घोषक ने बड़े ही उचित ढंग से प्रस्तुत किया है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में दूसरा मुख्य पात्र राजा है। 'शेर के सिर पर नृत्य' एक लोक परम्परा पर आधारित नाटक है। इस नाटक में मिज़ो जाति के रहन-सहन, व्यवहार, रीति-रिवाज की झलक को दिखाया गया है। जिसमें राजा होते हैं। जिस प्रकार 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में राजा के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है, उससे पता चलता है कि राजा अपने प्रजा से अति प्रेम रखते हैं। इस नाटक में राजा का पात्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। पूर्वकाल में राजा की उसकी प्रजा बहुत ही इज्जत करती थी। राजा को अपनी प्रजा से बहुत ही प्रेम और लगाव होता था। प्रजा की रखवाली करना राजा का कार्य होता था।

"महापशु के निमित अनुष्ठान कार्य संपन्न करने में समर्थ महामंत्री का होना हमारे लिए कितनी सौभाग्य की बात है! सुनिए, आज का पूरा दिन सभी काम से छुट्टी लेकर मनाया जाये । मदिरा के मटके भी कतार में लगाए जा चुके हैं । अहा, लाओ, लाते जाओ ।"[44]

इस कथन से पता चलता है कि नाटक में राजा का पात्र निभाने वाले की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिस तरह राजा अपने मंत्रियों को आदेश देते हैं,उससे पता चलता है कि राजा अपने प्रजा के लोगों का बहुत ख्याल रखते हैं। अपनी प्रजा से अति प्रेम भी राजा के दिल में समाया हुआ है। राजा के सभी गुण इस नाटक के राजा के पात्र से प्रकट होते हैं। राजा कभी अपनी प्रजा की हानि के बारे में नहीं सोचा करते, केवल प्रजा की भलाई के बारे में सोचा करते हैं।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में तीसरा मुख्य पात्र महामंत्री होता है। इस नाटक में महामंत्री का पात्र जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, वह अत्यंत प्रभावशाली है। मंत्री जिस प्रकार अपने राजा के आदेश का पालन करते हैं। राजा के आदेश के बिना कोई भी फैसला नहीं लेते हैं। राजा के आदेश का पालन करना अपना कर्तव्य मानते हैं। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में बहुत सुन्दर ढंग से इसे प्रस्तुत किया गया है:-

"महामंत्री : अहो भाग्य! हमारे राजा जी भी आ गए हैं। इनके सान्निध्य में हम निशिचंत रहेंगे। आप आ गए तो बहुत अच्छा हुआ।

राजा : आप ही ने तो हमारा कौतूहल बढ़ाया, तुरंत आने का मन हुआ, सो आ गए

महामंत्री: अच्छी बात है। अन्य भी आ रहे हैं, आप लोग भी आ गए हैं, अपनी मीठी मदिरा को लेकर बहुत बढ़िया"[45]

मंत्री राजा के प्रति, अपने साथियों के प्रति, अपने साथियों के प्रति उनके बाते करने का ढंग, अपनी सीमा को पार नहीं करते हुए, एक आदर्श मंत्री का पात्र निभाते हुए प्रकट हुआ है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के माध्यम से पात्र की अभिनेयता को प्रस्तुत किया गया है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के चौथे दृश्य में वृद्ध एक ऐसा पात्र है, जिसने इस नाटक में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस नाटक के अनुसार वृद्ध के पात्र को निभाने वाला किरदार शेर के सिर पर नृत्य का आयोजन किस प्रकार किया जाता है, उसकी पूरी जानकारी प्रस्तुत करता है। चौथे दृश्य में बच्चे का पात्र भी होता है। जिसमें वृद्ध और बच्चे के बीच का संवाद दिखाया गया है। बच्चे वृद्ध से सवाल करते हैं। वृद्ध उनके सवालों का बड़े ही धैर्य से जवाब देते हैं। वृद्ध और बच्चे के संवाद से पूरे नाटक के कार्यक्रम के आयोजन के बारे में पता चलता है।

"वृद्ध : अहो, मुझे अपनी जवानी के दिन की याद आ रही है। बेशक मैं भी राजा के पीछे चलकर शूरवीरों के नृत्य में शामिल होता था।

बच्चे : बाबा, देखें कौन नृत्य कर रहे हैं ?

वृद्ध : वे हमारे शूरवीर ही हैं। मजाक करने वाले भी हमारे वीर योद्धा कोल्हाला और बिआला ही है।"[46]

इस प्रकार प्रस्तुत पदों से पता चलता है कि वृद्ध और बच्चों में काफी लगाव के साथ विचार प्रकट किये जा रहे हैं। वृद्ध का बच्चों को 'शेर के सिर पर नृत्य' के बारे में बताना, उनमें उत्सुकता के साथ नृत्य को देखने की इच्छा बच्चों को जताना, वृद्ध का बच्चों को अपने परंपरा के बारे में सही-सही जानकारी देना, इस नाटक में वृद्ध की भूमिका से प्रकट होता है। वृद्ध और बच्चों के बीच का संवाद बहुत ही रोचक है।

"पहला योद्धा : मैं भी देखूँ कि तुझे खूँखार पशु क्यों कहते हैं, तुझ से थोड़ा मजाक करता हूँ। एक ही बार प्रहार भी तू सहन नहीं कर सकता? यों लेटा मत रह। उठ, उठ और मैं एक ही थप्पड़ मारकर गिरा देता हूँ। तुझे दूर से देखनेवाले तेरे साथी शेर भी डर के मारे भाग जाएँ।"[47]

"तीसरा योद्धा : मैं भी कुछ करता हूँ। दूर से हमें देखने वाले शेरों के झुंड भी यह कहे कि उन लोगों के सामने हमारी क्या बिसात, वे ऐसा कहकर भाग जाने को मजबूर होंगे। दूर पहाड़ से हमें देखने वाले तेरे सभी साथियों समेत मैं किसी से भी नहीं डरता ....।"[48]

इस कथन में योद्धा के व्यक्तित्व को बहुत ही अच्छी तरह से प्रस्तुत किया है। जिस तरह पूर्वकाल में वीर योद्धा की वीरता के बारे में हमें लोक कथा से जानकारी प्राप्त होती है। उनकी वीरता, बलवानी को अपनी प्रजा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा सकने के साथ 'शेर के सर पर नृत्य' नाटक में लेखक ने बहुत ही अच्छे वार्तालाप से उनके अभिनेयता को दर्शाया है। नाटक में उनके पात्र और संवादों के कथन से स्पष्ट होता है कि योद्धा द्वारा पूर्वकाल में राजा और अपने प्रजा की रखवाली करना, उनका कर्त्तव्य होता था। योद्धा बहुत ही वीर, साहसी, बलवान होते थे।

वीर योद्धा में नि: स्वार्थता कूट-कूटकर भरी होती थी। इसी निःस्वार्थता के कारण राजा और प्रजा भी उनके शत्रु से, जंगली जानवरों से सुरक्षित होते थे। वीर योद्धा को गाँव के राजा, युवती, बच्चे सभी का आदर सम्मान मिलता था। पूर्वकाल के युवक सभी वीर बनने की कोशिश में अपने बड़ों के आदेशों का पालन किया करते थे। वीरता का पाठ सीखने के लिए गाँव के सभी युवक अपने घरों में नहीं रहते थे सभी गाँव में सभी युवकों के लिए जोलबूक बनता था। उसी में सभी युवकों को रहना होता था। उसी जोलबूक में रहकर वीरता, साहस, बलवानी अर्थात भाला चलाना, तलवार, बंदूक आदि चलाना सीखते थे।

राजा और गाँव के लोग वीर योद्धा पर अपना सब कुछ सौंपते थे। इनके द्वारा ही राजा के होते हुए भी वीरों के कारण ही गाँव चलता था। इसलिए राजा और प्रजा वीर योद्धाओं को बहुत सम्मान देते थे। प्रस्तुत नाटक के कथन और इनके संवाद से प्रकट होता है कि योद्धा बहुत ही वीर होते थे। उनमें वीरता और साहस कूट-कूटकर भरी हुई थी। लेखक ने 'शेर के सिर पर

नृत्य' नाटक के माध्यम से नाटक के पात्र योद्धा की अभिनेयता को बहुत ही बखूबी ढंग से प्रस्तुत किया है।

निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि डॉ.ललत्लुआङलिआना खिआंगते के इस नाटक पर कथन, घटना विस्तार, भाषा की क्लिष्टता, गीतों की प्रचुरता के कारण इसकी रंगमंचीयता पर स्वंय ही प्रश्नवाचक चिहन लगाया है। लेकिन आधुनिक रंगमंच पर इसका सफल मंचन इन आपेक्षों को निराधार कर देता है। वस्तु विधान, संवाद, दृश्य संयोजन, रंग निर्देश आदि सभी बातों से इसकी रंगमंचीयता ही प्रकट होती है।

2.6 उद्देश्य:

रचनाकार अपनी स्थापना का संप्रेषण अपने पाठकों तक करना चाहते है। उसे ही उद्देश्य कहते हैं। रचनाकार के मन में अपने समाज, जाति से सम्बधित अनेक समस्याएँ समाविष्ट रहती हैं जो उन्हें प्रकट करने लिए कचोटती रहती हैं। लेखक इन्हें अपनी किसी रचना में माला के मनकों की तरह पिरोकर प्रस्तुत करता है। कोई मूर्ख व्यक्ति भी बिना उद्देश्य के किसी कार्य में प्रवृत नहीं होता है। इसी प्रकार रचनाकार भी अपनी कृति का सृजन करते समय एक या एकाधिक उद्देश्यों को लेकर चलता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय परंपरा के अनुसार नाटकों में रस को प्रधानता दी गई और पाश्चात्य परंपरा में उद्देश्य को प्रधानता दी गयी है। रचनाकार का मुख्य कार्य प्रधान रस के उत्कर्ष का वर्धन करना ही माना जाता है।

दूसरी ओर नाटकों में कोई न कोई उद्देश्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में समाहित रहता है। वह किसी प्रकार की जीवन मीमांसा या विचार सामग्री के रूप में आता है। उद्देश्य का सम्बन्ध जीवन के आंतरिक और बाहरी संघर्षो से होता है। यही संघर्ष पाठकों को उद्देश्य के ग्रहण करने

के लिए तत्पर कर देता है। अर्थात कोई भी रचनाकार किसी भी कृति का निरुद्देश्य सर्जन नहीं करता है। प्रत्येक रचना में कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। उद्देश्य प्रत्यक्ष भी हो सकता है और अप्रत्यक्ष भी हो सकता है। लेखक अपनी रचना में स्वानुभूति सत्य की आत्माभिव्यक्ति करता है। लेकिन इसके साथ ही उसका कोई न कोई मुख्य उद्देश्य होता है। "शेर के सिर पर नृत्य" नाटक के रचनाकार डॉ. ललल्लुंआङलिआना खिआंगते भी कृति में जो उद्देश्य निहित हैं, उन निहित उद्देश्यों को यहाँ देखा जा सकता है -

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक एक प्राचीन लोक कथा पर आधारित है। जिसमें मिज़ो जाति की प्राचीन संस्कृति को दर्शाया है। पहले के ज़माने में मिज़ो जाति अपने से बड़ों की बात को नहीं टाला करती थे। बड़ो का बहुत ही आदर सत्कार किया जाता था। कोई ऐसा नहीं होता था कि जो बड़ों का कहना नहीं माने। पहले के जमाने में मिज़ो जाति का खेती बाड़ी करना उनका व्यापार होता था। उन्हें किसी चीज की कोई कमी हो, उसका उन्हें हमेशा ख्याल रहता था। मिज़ो के पूर्वज अपने जमाने में बहुत ही मेहनती इंसान हुआ करते थे। उनका मानना था कि अगर हम काम नहीं करेंगे तो खाएंगे क्या? इसी बात को सोचकर मिज़ो पूर्वज बहुत ही मेहनत करते थे।

ईमानदारी की बात की जाए तो मिज़ो पूर्वजों के उन दिनों बहुत ही अच्छे संस्कार होते थे। हमेशा अपनी मेहनत के फल ही खाने की ठानकर रखते थे। किसी के चीजों की चोरी करना तो बहुत दूर की बात होती थी।

उन दिनों जाति-जाति, गाँव-गाँव में अक्सर युद्ध हुआ करते थे। उस युद्ध में एक दूसरे की मदद करते थे। युद्ध करते समय उनके साथी घायल हों जाए, तभी भी अपने साथी घायल को छोड़कर नहीं जाते थे। एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी।

पूर्वकाल में मिज़ो जाति के सभी लोग मिल जुलकर त्योहारों को बहुत ही धूम धाम से मनाते थे। निःस्वार्थता उनके दिल में जैसे बसी हुई थी। यह बहुत ही गर्व की होती थी। खाना खाते समय अपने बच्चों को सही बात बताने का ठीक समय माना जाता था।

पूर्वकाल में मिज़ो युवक अपने मन मर्जी यूँ हीं अपना समय नहीं गँवाते थे। गाँव के मंत्रियों के आदेश अनुसार उनके आदेश के इंतिजार के लिए हमेशा तैयार रहते थे। जंगली जानवरों और अपने शत्रुओं से गाँव की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य मानते थे। पूरा गाँव भी युवकों पर निर्भर होते थे। युवक अपना कर्त्तव्य निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। युवतियाँ भी घरों के काम में अपने माता-पिता का साथ देती थी। विवाह भी अपने माता-पिता की पसंद से किया करते थे। बड़ों का मान रखते थे। युवकों के तरह ही बड़ों का सम्मान करते थे।

इसी तरह युवक, युवतियाँ, बच्चें सभी अपने बड़ों का सम्मान करते थे। एक दूसरे के प्रति कोई घृणा नहीं होती थी। जैसा कि हमने कहा कि मिज़ो जाति में पुर्वकाल से उनके दिल में बसी हुई एक चीज, जो आज तक मिज़ो जाति के दिल में बसी हुई हैं। वह है दूसरे के लिए त्याग, बलिदान। नि: स्वार्थता, इन्सान के दिल में कभी घमंड, मज़ाक नहीं होता है, केवल दूसरे के भलाई चाहता है। वक्त आने पर अपने को दूसरों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रखते थे। पूर्वकाल से ही मिज़ो समाज में नि: स्वार्थता की भावना बचपन से सिखाई जाती थी। इसलिए आज तक यह भावना मिज़ो जाति के दिलों में बसी हुई है। नि:स्वार्थ व्यक्ति का व्यवहार कभी किसी को नीचा नहीं दिखाता, बल्कि ऊँचा उठाता है।

नि: स्वार्थ व्यक्तियों के कारण मिज़ो जाति के लोग सभी प्रकार की आपदाओं और संकट से बचे रहते थे। निराश लोगों के लिए वे आशा की किरण होते थे। इसके कारण ही गाँव के राजा, मंत्री अपना सिर उठाकर जीते हैं।

इस संस्कृति कि उत्पति “Tlawmngaihna leh aia upa zahna” (तोमनैना लेह अइअ उपा ज़हना) से हुई थी। मेहनती और कोई भी कार्य करने के लिए तैयार रहने वाला इसका हक़दार होता था। आलसी और कजोर लोगों के लिए इस स्थिति तक पहुँचाना बहुत कठिन होता था।

‘शेर के सिर पर नृत्य’ के लेखक इस नाटक के माध्यम से मिज़ो समाज की इन सभी परंपराओं को दोहराना चाहते हैं। अपनी संस्कृति को कायम रखने का उनका उद्देश्य इस नाटक को लेकर रहा है।

डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते ने ‘शेर के सिर पर नृत्य’ नाटक के माध्यम से मिज़ो जनजाति की लोक परंपरा, संस्कृति, इतिहास को इस नाटक के जरिये अभिव्यक्ति किया है। आधुनिक युग में देखा जाए, तो प्राचीन संस्कृति, परंपरा धीरे-धीरे क्षीण होती नजर आती है। लेखक ने ‘शेर के सिर पर नृत्य’ नाटक के माध्यम से अपनी संस्कृति को बचाये रखने का प्रयास किया है। जैसे- लोगों का रहन-सहन, रीति-रिवाज, बोल-चाल, देश-काल, वातावरण आदि अर्थात मनुष्य की संख्या बढ़ती जाती है। जिस तरह मनुष्य की संख्या बढ़ती जाती है, उसी तरह हम अपनी परंपरा, संस्कृति, इतिहास से छूटते एवं टूटते जाते हैं। उसी उद्देश्य के चलते लेखक ने अपनी परम्परा, संस्कृति को कायम रखने के उद्देश्य से ‘शेर के सिर पर नृत्य’ नाटक की रचना की।

पूर्वकाल में मिज़ो जाति के दिलों में एक बात बसी थी कि अपने से बड़ों की इज्जत और अपनों से बड़ों का सम्मान करना। बच्चों को जोलबूक के लिए लकड़ी इक्कठे करने को जब कहा जाता था, तो उससे पता चलता है कि बच्चें अपनों से बड़ों का सम्मान करते और उनके आदेशों का पालन करते थे। इसी तरह युवक भी बड़ों और बुजुर्गों का आदेश का पालन किया करते थे। जब युवक बच्चों को किसी काम के लिए कहीं भेजते थे, तो बच्चें बिना बात को टाले भागकर चले जाते थे। गाँव में जब किसी बड़े खाने का आयोजन किया जाता, तो वहाँ भी जब तक बड़े

खाने को मुँह में न डाल लेते कोई भी खाना नहीं खाते थे। इस प्रकार पूर्वकाल के समय में एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना मिलती है।

पूर्वकाल में पहले मिज़ोरम में कोई स्कूल नहीं होता था। इसलिए गाँव के बच्चे गाँव से थोड़ी दूर ऐसे ही टहलते रहते थे। पेड़ों से फल तोड़ते, नदी में जाकर मछली पकड़ते हैं। और घर लौटने से पहले सभी अपने-अपने तोड़े हुए फल को एक साथ जमा करते और बाँटते। इस तरह किसी को ज्यादा, कम भी नहीं मिलता। कभी तो बाँटने के लिए कम होता। तो उनके बीच सबसे छोटे को सब दे देते थे। इस तरह बचपन से ही एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना होती थी।

खाने और पीने में बच्चें बड़ों का आदर किया करते हैं। खेतों में भोजन करने का समय हो या त्योहारों में भोजन करने का समय हो, छोटे कभी बड़ों से पहले भोजन अपने मुहँ पर नहीं डालते थे। इस प्रकार से लेखक का इस नाटक को लेकर पूर्वकाल की लोक परंपराओं को उजागर करना अर्थात पहले ज़माने में जिस तरह का व्यवहार होता था। मिज़ो लोक परंपरा को और आधिक जानने का इस नाटक 'शेर के सिर पर नृत्य' का उद्देश्य रहा है।

मिज़ो के पूर्वज बचपन से ही साहस और वीरता का पाठ ही सिखाया करते थे। उनके ऊपर कोई जख्म भी आये, तो कभी अपने दर्द का एहसास नहीं होने देते थे। बचपन में बड़ों से मिली सीख बड़े होने पर कभी नहीं छोड़ते थे। पहले के जमाने में मिज़ो के पूर्वज की खासियत यह थी कि जो गाँव में थोड़े बहुत अमीर होते थे, कभी अपने को अमीर नहीं कहते थे। उनके पास गेहूँ (अनाज) ज्यादा होने से भी कभी उसका घमंड नहीं करते थे। कभी अपने आपको दूसरे से अधिक ज्ञानी भी नहीं समझा करते थे। जब किसी का देहांत हो जाये या किसी व्यक्ति की हालत ख़राब होती है, तो बड़े लोग जोलबूक में जो वीर युवक रहते हैं, उनको देहांत हुए व्यक्ति के परिवार, जो अपने खेतों में रात गुजारते हैं उनको बुलवाने का काम सौपते थे। आधी रात को भी वीर युवक चले जाते हैं। मिज़ो जाति के लोगों का कहना है कि एक बड़े पत्थर को

सीधा करने के लिए छोटे पत्थर की ही जरुरत पड़ती है इसी के चलते वे आपस में एक दूसरे का सहारा बनकर खड़े रहते थे। कभी भी एक दूसरे के प्रति नफरत नहीं होती पहले के समय में वीर योद्धा अपनी वीरता को दिखाने का प्रयास किया करते थे। उनको बहुत सम्मान भी मिलता था। हर कठिन काम को आसान काम कहने वाले होते थे। इस प्रकार पूर्वकाल की मिज़ो जाति के लोग जीवन जीते थे। इस प्रकार लेखक का इस 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के द्वारा मिज़ो समाज के रहन-सहन को दर्शाते हुए पूर्वकाल के रहन-सहन में आ रहे बदलावों को रेखांकित करना है। अपनी संस्कृति को कायम रखना इस नाटक का मुख्य उद्देश्य है।

मिज़ो जाति में अन्य पशुओं से अधिक बाघ को ऊँचा दर्जा दिया जाता था। लेखक का 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के माध्यम से इस बात को अभिव्यक्त किया है। आम तौर पर मिज़ो जातियों का पेशा शिकार करना होता है। आज भी देखा जाये तो जंगलों में शिकार करने निकल जाते हैं। प्राचीन काल से मिज़ो जाति अर्थात 'मिज़ो पूर्वजों' का मानना है कि शेर 'बाघ' सब कुछ जानने वाला होता है। शेर को भगवान का दर्जा दिया जाता है। लेकिन 'यदि शेर पालतू पशु, जैसे- सुअर, बकरी, मिथुन, गाय- बैल आदि को मारता है, या शिकार करता है तो उस शेर को मार गिराया जाता हैं।''[48]

अर्थात किसी मनुष्य के प्रति, गाँव में शिकार करते समय आंतक मचाये, तो शेर को मारना अनिवार्य समझा जाता है। इसी के चलते लेखक का इस नाटक को लेकर उद्देश्य है कि जिस प्रकार प्राचीन काल में शेर को ऊँचा दर्जा दिया जाता है उसी तरह आज भी यह प्रथा कायम रहने का सन्देश दिया गया है। परन्तु, यह तब तक, जब तक शेर किसी प्राणी, जंतु को नुकसान न पहुँचाए, मार न गिराए।

मिज़ो जाति प्राचीन काल में 'आई' नामक अनुष्ठान का आयोजन करती रही है। तत्कालीन मान्यता में उस व्यक्ति के मरने पर उसके शव को 'थि :थिआप' नामक जीव से

सुरक्षित करना आवश्यक हो जाता है। 'अतः नगर के सभी निवासी 'थि:थिआप' को डराने के लिए समस्त उपलब्ध वाद्य बजाकर शोर मचाते। तदन्तर उस मृतक के अंतिम संस्कार के बाद तर्पण के लिए अन्य पालतू पशु हलाल करना आवश्यक होता है। इस कारण से शेर का 'आई' क्रिया करना साधारण लोगों के लिए अत्यंत दुष्कर होता है।

शेर को जब मार गिराया जाता है, तब उस शेर का 'आई' अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है और इसी प्रकार यह पता चलता हैं कि शेर को बहुत ही ऊँचा दर्जा दिया जाता और 'आई' नामक अनुष्ठान का आयोजन अन्य पशुओ को लेकर नहीं किया जाता है। केवल शेर (बाघ) का ही 'आई' अनुष्ठान किया जाता है। इस प्रकार मिज़ो लोक सांस्कृतिक परंपरा के चलते मिज़ो समाज में यह सन्देश देने का प्रयास किया गया है। शेर के सिर पर बहुत ही बड़ी धूमधाम से नृत्य का आयोजन किया जाता है। 'शेर के सिर पर नृत्य' इतिहास है, जिसका जिक्र करना और आज के आधुनिक युग में उसे समझना नाटक का एक बड़ा उद्देश्य है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नामक एक मिज़ो लोक परंपरा पर आधारित है जिसमें मिज़ो समाज का रहन-सहन, व्यवहार और समाज में बच्चों को लेकर उनको साहसी बनाने का एक बड़ा उद्देश्य इस नाटक का है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो समाज की पूर्वकाल की एक लोक परंपरा कथा के ऊपर प्रस्तुत है। आज के आधुनिक युग और पूर्वकाल में बड़ी विभिन्नता आ गई है। अर्थात इस नाटक का उद्देश्य यह है कि अपनी संस्कृति को कायम रखने और अपनी परंपरा को समय के साथ बदलते रहने की सीख दी गई है। इस नाटक में लेखक ने हर पात्र को पूर्वकाल के देशकाल और वातावरण के साथ प्रस्तुत किया है। 'शेर के सिर पर नृत्य' के नाटक में लेखक ने जो एक-एक पात्र प्रस्तुत किये हैं, उन पात्रों का व्यक्तित्व पूर्वकाल और आज के आधुनिक युग से तुलना किया जाए, तो पूर्वकाल को आधुनिक युग बहुत हद तक पीछे छोड़ आया है। इसलिए लेखक ने

इस नाटक के माध्यम से पूर्वकाल के वे सारे गुण, आदर्श, वीरता, निःस्वार्थता,और एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना को उजागर करने का उनका एक उद्देश्य रहा है।

'शेर के सिर पर नृत्य' के नाटक में राजा पात्र की चर्चा की जाये, तो लेखक पूर्वकाल के राजा के स्वभाव और व्यक्तित्व से आज के समाज को सन्देश देना चाहते हैं। कि पूर्वकाल में राजा अपनी प्रजा से काफी लगाव करते थे। राजा को अपनी प्रजा से काफी प्रेम भी होता था। पूर्वकाल के समय कोई भी राजा अपनी प्रजा की हानि के बारे में कुछ ऐसी बात सोचा नहीं करते थे।

"राजा : महापशु के निमित्त अनुष्ठान कार्य संपन्न करने में समर्थ महामंत्री का होना हमारे लिए कितनी सौभाग्य की बात है! सुनिए, आज का पूरा दिन सभी काम से छुट्टी लेकर मनाया जाय। मदिरा के मटके भी कतार में लगाए जा चुके हैं। अहा, लाओ, लाते जाओ"[49]

राजा के इस कथन से प्रस्तुत होता हैं कि राजा को अपनी प्रजा से प्रेम है। पूर्वकाल में मदिरा के बारे में राजा के कथन से जो प्रकट हुआ है। पूर्वकाल में मिज़ो जाति के लोग मदिरा को एक खास दिनों में ही पिया करते थे। जैसा कि हम जानते हैं।

आज के युग में जिस मदिरा को हम शराब नाम से जानने लगे हैं और उसका गलत तरीके से सेवन कर रहे हैं। उसका ठीक उपयोग करना इस नाटक के मदिरा शब्द से प्रस्तुत होता है। पूर्वकाल और आधुनिक युग की तुलना किया जाये तो, पूर्वकाल में मिज़ो जाति हर शुभ दिनों के लिए मदिरा बनाये रखते थे। मदिरा को सेवन करने कि हर किसी को ऐसे ही अनुमती नहीं होती थी। केवल राजा और उसके मंत्री ही मदिरा का सेवन कर सकते थे। कोई भी मदिरा पीकर नशा भी नहीं करते थे। अर्थात मदिरा को एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना प्रकट करने का एक साधन मानकर चलते थे। लेखक का 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के प्रति यह उद्देश्य है कि जब हमारे पूर्वज मदिरा को अच्छे से उसका उपयोग करते हैं। तो हमें भी

अपनी सांस्कृतिक परंपरा पर विचार करना होगा। आज जो इस नशे के शिकार हैं, उनकी समस्या खत्म हो सकें। राजा का अपनी प्रजा से प्रेम की भावना, अपने लोगों के लिए मदिरा देने से और ज्यादा प्रकट होती है। गाँव के लोग आने वाले शुभ दिनों के लिए मदिरा को बनाये रखते थे। किसी शुभ दिन गाँव के किसी कार्यक्रम में, त्योहारों आदि में एक दूसरे को पिलाते थे। इस तरह उनके एक दूसरे का आपस का सम्बन्ध प्रेम और भाईचारे का सन्देश देता है। इस नाटक का समाज को एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित करना उद्देश्य रहा है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में युद्ध को लेकर लेखक का उद्देश्य यह है कि पूर्वकाल में युवकों के लिए रहने का दूसरा स्थान जोलबूक नामक में अपना समय बिताते थे। गाँव की हर मुसीबतों में डटकर खड़े रहते थे। गाँव की रखवाली सब उनके हाथों में होती थी। जिस प्रकार अपने प्राणों की बलि भी चढ़ा देते थे। यह वीरता आज के बच्चों के लिए एक बड़ा चुनौती पाठ है। जिस प्रकार वीर योद्धा जंगली शेर का शिकार करते हैं, शेर को मार गिराते हैं, वह आज के बच्चों को साहसी और वीर बनाने में सहायक है। यह भी नाटक का एक उद्देश्य रहा है।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक लेखक के लिए अपनी लोक परंपरा को बचाए रखने का एक रचनात्मक प्रयोग- प्रयास कहा जाए तो गलत नहीं होगा। 'शेर के सिर पर नृत्य' से मिज़ो समाज की लोक कथा को जानने के बाद इस नाटक ने बहुत सीख दी है। लेखक का उद्देश्य इस नाटक के द्वारा समाज को एकता का पाठ पढाना रहा है। एक दुसरे के प्रति प्रेम, भाईचारे का पाठ सिखाना, इस नाटक का उद्देश्य है। इस नाटक के द्वारा युवकों को वीरता और साहस का पाठ सीखने को मिलेगा। हर मोड़ पर अपने पूर्वजों के अनुसार मुश्किलों का सामना वीरता के साथ करना, अपनी सांस्कृतिक परंपरा के साथ चलते रहने की सीख देना इस नाटक का उद्देश्य है।

निष्कर्षत : डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में ऐसे भव्य संदेशों को संप्रेषित करने का प्रयास किया है जिसके द्वारा हम अपने जीवन में उत्कर्ष लाते हुए

विश्व के संघर्षपूर्ण वातावरण से जूझने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने इस नाटक के द्वारा आज की नयी पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक परंपरा को हमेशा ऊँचा दर्जा देने के लिए प्रेरित किया है। पूर्वकाल के लोगों के दिल में जिस प्रकार से प्रेम, त्याग, भाईचारे, निःस्वार्थता, साहस, वीरता आदि से जब युवक पर युवतियों को सीख मिले, यह भी नाटक का उद्देश्य है।

2.7 शीर्षक :

कोई भी कृति बिना उद्देश्य के नहीं होती। किसी का भी नामकरण बिना अर्थ के नहीं होता। प्रत्येक कृति के नामकरण के पीछे लेखक का कोई-न-कोई उद्देश्य निहित होता है। अर्थात नामकरण का कोई-न-कोई आधार होता ही है। लेखक या तो मुख्य पात्र के नाम पर या घटना या स्थान या उसमें निहित उद्देश्य के आधार पर नामकरण करता है। मिज़ो में अधिकतर ऐतिहासिक नाटकों का नामकरण रचना के नायक या नायिका के नाम पर ही किया जाता है। किन्तु कुछ नाटकों का नामकरण इस परिपाटी से हटकर काल विशेष या घटना या स्थान विशेष के आधार पर भी हुआ है। अतः कहा जा सकता है कि नामकरण के संदर्भ में रचनाकार स्वतंत्र हैं, किन्तु फिर भी उसके लिए यह अनिवार्यता है कि नामकरण कथा के अनुकूल एवं सार्थक प्रतीत होने वाला हो।

'शेर के सिर पर नृत्य' डॉ. ललल्लुआङलिआना खिआंगते द्वारा लिखित नाटक है। 'शेर के सिर पर नृत्य' एक लोक परंपरा है, मिज़ो संस्कृति है, जिसका आयोजन एक शेर के शिकार करने के बाद किया जाता है "शेर को मार गिराए जाने पर 'आई' नामक अनुष्ठान के लिए अन्य पालतू पशु को मारकर सम्पूर्ण गाँव या नगर वालों को सामूहिक भोजन खिलाना पड़ता है। मारे गए शरारती शेर का अन्य पशु को मारकर अनुष्ठान करना साधारण लोगों के वश की बात न होने के कारण गाँव / नगर के धनवान व्यक्ति, राजा या मंत्री महोदय के द्वारा ही यह संपन्न कराया जाता है"[50]

पूर्वकाल में मिज़ो जाति के लोगों की एक सांस्कृतिक परंपरा थी। "आई" नामक अनुष्ठान करने की एक अपनी परंपरा थी पूर्वकाल के पूर्वज अन्य पशु से अधिक शेर को बहुत ऊँचा और अन्य पशुओं से ज्यादा शेर का सम्मान किया जाता था। अर्थात मरे हुए आदमी का 'आई' नामक अनुष्ठान किया करते, उसी तरह शेर के सिर के ऊपर नृत्य का आयोजन किया जाता था। जब 'शेर के सिर पर नृत्य' का आयोजन होता था, तब पहाड़ के दूसरे जगह से सभी शेर अपने मरे हुए साथी शेर के सिर के नृत्य को दूसरे देखते थे। इसलिए इस नृत्य के दिन सभी के लिए काम से छुट्टी होती है। यह राजा की ओर से आदेश होता था। राजा के आदेश का पालन करना उनका कर्त्तव्य होता था। इस प्रकार सभी को भी 'शेर के सिर पर नृत्य' के दिन जंगलों में खेतों में जाना मना होता है।

इस दिन सभी अपने घरों में मदिरा पीकर गीत गाकर समय बिताते हैं। गीत इस प्रकार गाये जाते हैं

"उल्लू और एक प्रकार का चिड़िया जिसे पेंग कहा जाता है, शेर के सिर पर नृत्य करने वाले जब ढोल बजाते हैं तो यह चिड़िया भी नाचते हैं। शेर के सिर की ओर देखकर नृत्य किया जाता है।"[51]

इन बातों के अतिरिक्त जिसने शेर का अन्य पालतू पशु को मारकर अनुष्ठान संपन्न किया हो, तत्कालीन मान्यता में उस व्यक्ति के मरने पर उसके शव को "थि : थिआप" नामक जीव से सुरक्षित करना आवश्यक हो जाता है। अतः नगर के सभी निवासी "थि : थिआप" को डराने के लिए समस्त उपलब्ध वाद्य बजाकर शोर मचाते हैं। तदनंतर उस मृतक के अंतिम संस्कार के बाद तर्पण के लिए अन्य पालतू पशु हलाल करना आवश्यक होता है।"[52]

'शेर का आई' करने के कारण जिस शेर को मार गिराकर जो व्यक्ति उसके निमित्त 'आई' कार्य संपन्न करता है, माना जाता है कि ऐसा करने पर परलोक में शेर की जीवात्मा उस व्यक्ति की गुलाम बनी रहेगी, जिसने उसके लिए 'आई' कार्य संपन्न किया है।"[53]

'शेर के सिर पर नृत्य' करना कोई साधारण बात नहीं थी। लेखक डॉ. लालत्लुआङलिआना खिआंगते ने इस शीर्षक को बहुत ही सही निर्धारित किया है। जैसा कि शुरू में कहा गया है कि मिज़ो जाति की अपनी एक लोक परम्परा है। मिज़ो जाति के लोग पूर्वकाल से ही प्रकृति पर निर्भर थे। प्रकृति से जो देन हैं, उसका पूरा फायदा उठाया गया है। खेती करने के साथ-साथ जंगलों में शिकार करना उनका पेशा था। मिज़ो जाति मांस का बहुत सेवन करने वाली जाति है। मिज़ो जाति पुर्वकाल में एक गाँव से दूसरे गाँव में युद्ध होता था। जब युद्ध होता था तो एक दूसरे के गाँव को तबाह कर देते थे। गाँव में वीर योद्धा होते हैं। गाँव के सभी युवकों के लिए अलग से रहने की जगह बनाया जाता था। उसे जोलबूक कहा जाता था। उस जोलबूक में रहने वाले वीर योद्धा, सभी गाँव के युवक अपने गाँव की रखवाली करते थे। पूरा गाँव उन जोलबूक में रहने वालों पर निर्भर होते थे। उन दिनों के वीर योद्धा और युवक अपने गाँव, अपनी प्रजा और राजा की सुरक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तत्पर रहते थे।

पूर्वकाल के वीर योद्धा बहुत ही साहसी, बलवान, कर्तव्यनिष्ठ होते थे। युद्ध में अपने शत्रु को मार गिराए, तो अपने गाँव में शत्रु के सिर को काटकर लाया जाता था। शत्रु के सिर का 'आई' क्रिया अर्थात नृत्य का आयोजन किया जाता था। वह उनकी एक परंपरा थी। अपने शत्रु को मार गिराए जाने पर उसके सिर का 'आई' नामक क्रिया करना अवश्यक होता था। क्योंकि उनका माना था कि उनके मृत्यु के बाद परलोक में उनके हाथों से जिस शत्रु की जान गयी, वह परलोक में उसके हथियारे का दास बन जाएगा। इसलिए अपने शत्रु के सिर का 'आई' नामक क्रिया करना उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण होता था। एक पशु शेर को पूर्वज अपने भगवान माना

करते थे। शिकार करते समय भी अगर रास्ते में दिख जाए, तो शिकारी शेर को नहीं मारते थे। लेकिन शेर उन पर आक्रमण करे, तो उनके लिए उचित हो जाता शेर को मार देना उस मारे गए शेर को ऐसे ही छोड़कर नहीं चले जाते हैं। बल्कि उस शेर का सिर पर नृत्य की योजना का कार्यक्रम किया जाता है। इस प्रकार आई क्रिया के लिए एक शेर के सिर का आई क्रिया उनके लिए आवश्यक होता है।

मिज़ो जाति और मिज़ो भाषा में शेर को सकैई और सिर को लू, नृत्य को लाम कहा जाता है, तो इस नाटक के शीर्षक के लिए 'शेर के सिर पर नृत्य' कहना या नामकरण करना बहुत ही उचित है। क्योंकि मिज़ो जाति में जो लोक नृत्य शेर के सिर काटने के बाद ही आयोजन करते है। इस नाटक का शीर्षक, नामकरण बहुत ही उचित और सही माना जाता है अर्थात 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का शीर्षक उचित और सही है।

जिस प्रकार इस नाटक में जिस तरह घटनाओ को दर्शाया गया है, ज्यादा से ज्यादा शेर के नृत्य के बारे में प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने बहुत ही उचित शीर्षक चुना इस नाटक के लिए अर्थात इस नाटक के लिए 'शेर के सिर पर नृत्य' शीर्षक बहुत ही सही और उचित हैं।

निष्कर्षत : शेर के सिर पर नृत्य नाटक एक लोक कथा होने के कारण और पूर्वकाल में मिज़ो पूर्वज में शेर के सिर पर नृत्य का अनुष्ठान किया जाता था और लेखक ने इसे जिस तरह से इस नाटक के शीर्षक को नामकरण दिया है वह उचित ही है।

संदर्भ:

1. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम-III, अनुवादक – श्रीमत रमथङा खोलह्रिंग, Loise Bet Print & Publication, Aizawl, 2019, पृ. 42
2. वही, पृ. 42
3. वही, पृ. 45
4. वही, पृ. 44
5. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ.182

   “Pu Ngulbuka, Chhipphir kohhran upa chuan hetiang hian hetiang hian a sawi a, “ka pu Chawngtara (apa pa) chuan, Hmanlai Reieka kana wm lain thihthiap ka kap a, ka kah dan chu buhseng lain thla engah sanghal ka changa, chutih lai chuan thihthiap ni ngei tur hi alokal a,ka lo kap thlu der maia. Ka han en chiang chu uichal tia zet zawt a ni a,a beng chu thuah sarih a inthuah ani”ati a.” (अनुवाद मेरा)
6. डॉ.लल्त्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम- III, पृ. 51
7. वह, पृ. 51
8. वही, पृ. 68
9. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ. 21

"Mi kan tai lo chinlai par ang kan tlan e,tlang dum dur leh ka tukram that, Min tawn tum kan tai awm e, khua a kamin laldang suihlung phang lo la, Chhuatpui ziatial chungah tlang chawi, A lam ngai kan lam leh e." (अनुवाद मेरा)

10. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम – III, पृ. 52
11. वही, पृ. 56
12. वही, पृ. 62
13. वही, पृ. 66
14. B.LALTHANGLIANA, PI PU ZUNLENG, पृ.134

"Ami ngul maw zing zawk, a sa ngul maw? Hrualhrui an ban kherh chiai e, kan tual hmaiah. Hrualhrui an ban kherh chiai e, kan tual hmaiah, A zik e thim hman lo ve, a tualto ang" (अनुवाद मेरा)

15. डॉ. लालत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम-III, पृ. 51
16. वही, पृ. 51
17. वही, पृ. 55
18. वही, पृ. 52
19. वही, पृ. 52
20. वही, पृ. 58

21. वही, पृ.59

22. वही, पृ.43

23. वही, पृ. 51

24. वही, पृ. 52

25. वही, पृ. 53

26. वही, पृ. 53

“Haulai changsiar tur tui ang a dawn sual e, tlangsa kamkei sumtual ah, Nikhum chhingpan lal lai nikhang puan ka lo zawn e” (अनुवाद मेरा)

27. वही, पृ. 51

28. वही, पृ. 55

29. वही, पृ. 63

30. वही, पृ. 65

31. वही, पृ. 58 & 59

32. वही, पृ. 49

33. B.LA LTHANGLIANA, PI PU ZUNLENG, पृ. 237

“Zuva zovuai, zuva zovuai, Sakunga thovin zuva zovuai, khuain zuva zovuai, Khumpuia thovin zuva zovuai, Chumchiha thovin zuva zovuai, Bualchhuma thovin zuva zovuai, Chhuat cheha thovin zuva zovuai,

Chhuatphova thovin zuva zovuai, Mual lian thovin zuva zovuai, Nuntluang pangdama thovin zuva zovuai, sabana thovin zuva zovuai" (अनुवाद मेरा)

34. वही, पृ. 53

35. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ. 210

"ka lo tlan buan buan a e, min lo nghak rawh dailungah e.Hraileng puan ang thlang lova e, satin puan ang i thlan le, Ka di e siam chungnunga e" (अनुवाद मेरा)

36. वही, पृ. 211

"A saw ral a, saw ral a e,Changtui ral a, saw ral e. Sawm sial saw zawng rawn hawl a e,Vaipuan bukin rawn phur e, ka di e, zawlpala e" (अनुवाद मेरा)

37. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम-III, पृ. 54

38. वही, पृ. 58

39. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ. 120

40. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक हिंदी वॉल्यूम-III, पृ. 62

41. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ. 232

"Tinchuan 1892 A.D chuan Mizoram chu British awp ram a lo ni ve ta a" (अनुवाद मेरा)

42. वही, पृ. 232

“Hun a lo kal zeal a, abor tlawm turin sorkar chuan hma a la leh ta a. Kum 1911 ah chuan Mizo tlangval sanghnih rual zet mai chu Labour Crops ah inpe turin sorkar chuan a phut lui ta a, chu chu Mizote chuan ‘Abor Run’ an ti mai a.” (अनुवाद मेरा)

43. डॉ.ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक हिंदी वॉल्यूम- III, पृ. 58 & 59

44. वही, पृ. 52

45. वही, पृ. 52

46. वही, पृ. 62

47. वही, पृ. 65

48. वही, पृ. 43

49. वही, पृ. 52

50. वही, पृ. 43

51. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ. 180

“Chhimbu leh peng intu tu, a lulam kawng, lu lam kawng.” (अनुवाद मेरा)

52. डॉ.ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम- III, पृ. 43

53. वही, पृ. 44

तृतीय अध्याय

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक : संवेदना एवं शिल्प

3.1 संवेदना

'शेर के सिर पर नृत्य' डॉ. लालत्लुआङलिआना खिआंगते द्वारा रचित नाटक की संवेदना को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है –

क. स्थानीय लोक उत्सव का आनंद

ख. राजतंत्रीय (मुखिया) व्यवस्था का स्वरूप

ग. मिजोरम की लोक परंपराओं की व्याख्या

घ. प्राकृतिक परिवेश के साथ मनुष्य का सहचरी भाव

क. स्थानीय लोक उत्सव का आनंद :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में नृत्य को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस नृत्य के अलावा मिज़ो जाति के ऐसे बड़े-बड़े उत्सव हैं। वे अपने लोक उत्सव को वे बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया करते हैं। ''बड़े उत्साह की बात है न...इसमें तो हम अपनी सब से मीठी मदिरा न लावें, यह कैसे हो सकता है!''[1]

मिज़ो जाति के तीन त्योहार हैं। चपचार कूत, मीम कूत, और पोल कूत। इन तीनों में चपचार कूत सबसे बड़ा त्योहार कहा जाता है। इस त्योहार को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। चपचार कूत का त्योहार जब गाँव के सभी अपने खेतों के कामों को पूरा करने के

समय मनाया जाता है। मार्च या अप्रैल के महीने में हर साल यह उत्सव मनाया जाता है। मिज़ो जाति के लिए यह लोक उत्सव सबसे ज्यादा दिनों तक मनाया जाता है।

चपचार कूत त्योहार के लिए पूर्वजों का कहना है कि जब मिज़ो जाति के लोग चीन राज्य में बसे थे। तब चपचार कूत के त्योहार चल रहा था और उस समय कुछ लोग जंगलों में शिकार करने निकले थे। लेकिन कुछ भी शिकार हाथ नहीं आया। जब वे गाँव पहुँचे, तो उनको बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई।

लेकिन उनके मंत्री ने कहा, इसमें कोई, शर्मिंदगी की कोई बात नहीं है। आज कोई शिकार हाथ नहीं लगा। लेकिन जब हम फिर शिकार पर चलेंगे, तो हमें जरुर शिकार मिलेगा। हम कल त्योहार को बड़े उत्साह के साथ जरुर मनाएँगे। कहकर उनका हौंसला बढ़ाते थे। फिर सभी आपस में मदिरा ख़ुशी के साथ पीते हैं। इस तरह राजा उनकी इस ख़ुशी को देखकर उनके लिए और मदिरा लाने को कहते हैं और इस प्रकार हर साल भी इसी तरह राजा बड़ा खाने का आयोजन करते हैं और इस तरह यह त्योहार शुरू होता है। जब यह त्योहार का उत्सव मनाया जाता है। तो पहले से गाँव के सभी लोग मदिरा बनाते हैं। कोई शिकार करने जाता। त्योहार के लिए पशु का शिकार करते हैं। मिज़ो जाति माँस का काफी सेवन करने वाले हैं। इस त्योहार में सबसे पहले सूअर का माँस पुरे गाँव वालों के लिए बनाया जाता है। इस तरह दूसरे दिन दूसरे पशु का सेवन करते हैं। इस त्योहार में सबसे पहले दिन गाँव के बड़े लोग मदिरा पीते हैं। युवक, युवतियाँ, महिलाएँ भी मदिरा पीते हैं। लेकिन कोई भी नशे के लिए नहीं पीते। शाम को महिलाएँ खाना और अंडे लाकर अपने बच्चों को खिलाती हैं। जब सभी खा लेते हैं तो अंडे को एक दूसरे को खिलाते हैं, खुशी का माहौल बनता है। शाम को सभी मैदान में इक्कठे होकर एक साथ नाचते हैं। सभी गोला बनाते हैं और बीच में मिथुन की सींग बजाने वाला होता हैं। इस प्रकार गीत गाया जाता है:-

"त्योहार जब आता है तब बड़े धूमधाम मचती है तैयारियों की। सभी तैयारियों में इतने डूब जाते हैं कि जब रिमझिम सी बारिश आकर आँगन को मैला कर देती हैं, तब भी त्योहार की तैयारी में सभी डूबे हुए होते हैं। चाँदनी रात त्योहार की रात को ओर भी अधिक हसीन बनाती है।"[2]

इस तरह गीत गाया जाता था बच्चें गीत गाने वालों और नाचने वालों को मदिरा पिलाते जाते। जब इस उत्सव का तैयारी शुरू होती है, तो सबसे पहले रात में युवक और युवतियाँ पूरी रात जगकर नृत्यकर गीत गाकर रात बिताते हैं। अगर वे ऐसा नहीं करते तो दूसरी रात को गीत और नृत्य करने की अनुमति नहीं होती। युवतियाँ इस उत्सव में अपनी सबसे सुन्दर लुंगी पहनती हैं। 'वकिरिया' नामक मुकुट पहनती है माला पहनती हैं। युवक भी अपने सबसे सुन्दर और अच्छे कपड़े पहनते थे। इस त्योहार में किसी को किसी से भी झगडा करना माना होता है। पति और पत्नी के बीच में कोई झगड़े का माहोल उत्पन्न करना मना होता है। सभी ख़ुशी से त्योहार को मनाते हैं।

"पूर्वकाल में यह त्योहार मिज़ो जाति का ख़ुशी और धूम-धाम से मनाया जाने वाला उत्सव कहा जाता है, अर्थात पूर्वजों का कहना है कि यह त्योहार अपने सिर पर नृत्य करना हैं।"[3] ऐसा कहा जाता था और यह तीन दिन से सात दिनों तक यह उत्सव् मनाया जाता है।

दूसरा त्योहार 'मीम' कूत कहा जाता है। यह त्योहार अगस्त, सितम्बर के महीने में मनाया जाता है। इस त्योहार के लिए भी पहले से घरों में मदिरा बनाते हैं। इस त्योहार के लिए अपने-अपने खेतों से अनाज, फल, सब्जी आदि इक्ठ्ठा करते हैं। इस उत्सव के दिन कोई काम करने कही नहीं जाते हैं। सभी अपने घरों में रहते हैं। पूरे दिन माता-पिता मदिरा पीते हैं। खेतों से जो अनाज, फल, सब्जी आदि लेकर आते हैं, वह सारे अपने स्वर्गवासी रिशतेदारों के लिए प्रसाद में देते हैं। तरह तरह के खाने की चीज़े बनाते हैं। वह भी प्रसाद में देते हैं। उनका

मानना है कि मीम कूत उत्साह में मरे हुए फिर से लोटकर आते हैं, जो उनके लिए प्रसाद में चढ़ाए वह उन्हें खाने अवश्य आते हैं और फिर से उनकी यादों में खो जाते हैं। उनकी यादें फिर से ताज़ा हो जाती हैं और उनकी यादों में गीत गाते हैं।

"बरगद वृक्ष की डालियाँ मुर्झा गई, मनुष्य भी मर जाते हैं, चारपाई भी खाली है, लुर्त्लंग पर्वत की ऊँचाई को देखकर मन में सवाल उठते हैं कि जाने वाले पहाड़ के उस पार दिख सकते होंगे या नहीं।"[4]

इस तरह के गीत गाते हैं। उनके परिवार के लोग जो गुजर गए हैं, उनको याद करके रोते हैं। इस त्योहार को रोने का त्योहार भी कहा जाता था, मीम कूत का उत्सव केवल एक ही दिन के लिए मनाया जाता है। लेकिन दूसरे दिन भी कोई काम पर नहीं निकलते थे। जो प्रसाद के लिए मिला, उसे तीन दिनों बाद लेकर खा लेते थे। जिनके परिवार वाले गुजर गए वे मीम कूत के उत्सव में उनके साथ आकर खाना खाकर उनके साथ रहने के बाद तीन दिन के बाद लोट गए होंगे, कहकर अपने मन को तसल्ली दे देते थे। इस प्रथा के चलते इस त्योहार के महीने को "अशुभ महिना भी कहा जाता था"।

दूसरा त्योहार 'पोल कूत' त्योहार होता है। यह त्योहार दिसंबर के महीने में मनाया जाता है। जब खेतों से अनाज, फल, सब्जी आदि इक्कठे कर लेते हैं। सभी के पास ढेर सारे अनाज, फल होते हैं। सभी खुश होते हैं। अर्थात यह त्योहार बच्चों का त्योहार कहा जाता है। हर त्योहार की तरह इस उत्सव के दिन घरों में मदिरा बनाकर रखा जाता है। इस त्योहार के बड़े खाना के लिए वीर युवक जंगलों में पशु का शिकार करते हैं। त्योहार के पहले दिन में लुशाई लोग सूअर के मांस को 'बड़ा खाना' के लिए बनाया जाता है। इसी तरह दूसरे दिन अन्य पशु का मांस बनाया जाता है। इस तरह इस त्योहार के आने से पहले इन सभी चीजों का आयोजन होता है। इस 'पोल कूत' त्योहार को बच्चों का त्योहार कहा जाता है। इस दिन सभी बच्चें अपने-अपने नये-नये कपड़े पहनते हैं। 'चपचार कूत' की ही तरह बड़े धूम-धाम से यह त्योहार भी

मनाया जाता है। दिनभर पुरुष मदिरा पीते हैं। युवक और युवतियाँ सभी ख़ुशी से इस उत्सव का आनन्द लेते हैं।

"राजा : हे उद्घोषक, दूसरों को बुलाते जाओ। सब लोग एकत्रित हो जाये तो अच्छा होगा।

पहला मंत्री : आइये, ढोल बजाना शुरू करें और साथ ही गीत गाया जाए।"[5]

इस तरह मिज़ो जाति के लोग अपने लोक स्थानीय उत्सव का भरपूर आनंद लेते हैं। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक से प्रतीत होता है कि मिज़ो जाति पूर्वकाल में अपने हर त्योहारों को बड़े उत्सव के साथ मनाया करती थी। 'शेर की सिर पर नृत्य' बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। हर उत्सव की तरह इस 'शेर के सिर पर नृत्य' के लिए भी सभी अपने-अपने घरों पर मदिरा बनाते। अर्थात सभी अपने हर त्योहार के लिए सभी मदिरा पहले से ही बनाकर रखते हैं। उन दिनों मदिरा उनके लिए एक बहुत ही उपयोगी थी। लेकिन मदिरा को पीकर कोई भी नशा नहीं करते थे, अर्थात नशे के लिए पीया ही नहीं जाता था। 'शेर के सिर पर नृत्य' के दिन कोई भी शिकार करने या काम से कही नहीं जाते थे। सभी एक साथ उत्साह के साथ अपने उत्सव का आनन्द लेते हैं।

ख. राजतंत्रीय (मुखिया) व्यवस्था का स्वरुप :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में राजा नाम से एक पात्र का उल्लेख है। पर, मिज़ो समुदाय के पूर्वजों का कहना है कि मिज़ो समाज में राजा या राजतंत्र की परंपरा नहीं रही है। अत: इस नाटक के संदर्भ में जहाँ-जहाँ राजा शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ हमें राजा का अभिप्राय मुखिया से लगाना अधिक संगत प्रतीत होगा।

पूर्वकाल में मिज़ोरम के भीतर जो अलग-अलग गाँव होते थे। हर गाँव का एक अपना-अपना राजा होता था। राजा के पास पूरा अधिकार होता था। राजा अपनी मर्जी के अनुसार शासन करते थे। राजा जिनको पसंद नहीं करते थे, उनको मरने तक का आदेश देना, उनका अधिकार होता था। अलग-अलग गाँव के राजा अपने राज्य में राज करते थे। राजा खुद न्याय (नियम, कानून) भी अपने आप बनाते थे। गाँव में जो भी समस्या आये, उन सभी समस्याओं को सुलझाना राजा और मंत्री का कार्य होता था। सभी न्याय, कानूनी मामले उनके हाथ में होते थे। अगर राजा के परिवार से किसी के पास कानूनी समस्या हो, तो राजा के मंत्री लोग उन समस्या को राजा के बिना सुलझाते थे। उसी तरह राजा के मंत्री के परिवार में से किसी के पास भी कानूनी समस्या है, तो राजा उनकी समस्या को सुलझा लेते थे। राजा बदनामी से बहुत डरते थे। राजा नहीं चाहते थे कि उनके पीठ पीछे कोई कुछ बोले। जिससे उनके राज्य अनुशासन में कोई गलत बात कहे। इसलिए राजा बहुत सोच समझकर कोई भी फैसला लिया करते थे।

एक राजा हुआ करते थे। जिसको अपनी प्रजा से कोई प्रेम नहीं था। वह बहुत ही घमंडी राजा भी थे। वह राजा गाँव के लोगों का सामान छीनकर ले जाता था। इसी कारण गाँव के ह्नामचोप (Hnamchawm) गरीब लोग अपने कीमती सामान को छुपा देते थे। अपने गले में नकली माला पहनते थे। असली माला होते हुए भी नहीं पहन पाते थे। उनको हमेशा डर होता था कि राजा उनकी मालाओं को छीन न ले। इसी कारण लोग उसको 'Lal hlau lo thi' (लल ल्हॅअउ लओ थि) कहा करते थे। इसका मतलब राजा से निडर वाली मालाएँ।

"पूर्वकाल में भी अनेक प्रकार के कानूनी मामले भी होते थे। उनमें से प्रमुख है- पति पत्नी के बीच का झगडा, युवा और युवकों का मामला, चोरी का मामला, खून करने का मामला, किसी के पत्नी के ऊपर बुरी नजर डालने का मामला, झगड़ते समय दूसरों को अपाहिज करने का मामला''।

ऐसे मामलों को राजा इस प्रकार से राजा और उनके मंत्री सुलझाते थे:-

किसी के पास कानूनी मामले होते हैं, तो वे राजा और उनके मंत्री मदिरा पीकर दोनों पक्ष से उनकी बाते सुनते। फिर आराम से दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद सुलझाने की कोशिश करते हैं। अगर मामला सुलझाने में कोई तकलीफ होती है, तो 'तुई छिया' मतलब गन्दा पानी पीकर मामले को सुलझाने की कोशिश करते हैं। अगर दोनों पक्षों के बीच सही को चुनना मुश्किल होता है, तो दोनों को 'पुम तुई' जो एक प्रकार का लोहा बनाते वक्त, जो लोहे को ठंडा करने के लिए पानी में डालते हैं, उसी पानी को फेंथिर प्याला में डालकर दोनों को पीने के लिए कहा जाता है। उनका मानना यह है कि 'पुम तुई' को पीने के बाद जिसने भी झूठ बोला वह सीधा मर जायगा। इसी कारण जिसने भी झूठ बोला, वह सामने आ जाता है। सभी को पता चल जाता है कि न्याय किसको मिलना चाहिए नियम को तोड़ने वाले को जुर्माना भरना पड़ता है। सुअर से लेकर बैल तक का जुर्माना भरना पड़ता है। उस समय सुअर का दाम पांच रुपये होता था। अगर उसके पास सुअर न हो तो, वह सुअर के अलावा पाँच रूपए भी दे सकता था।

चलरेम: इसका मतलब यह है कि दो बैल आपस में झगड़ते हैं और दोनों के बीच कोई विजेता नहीं होता है। उसी प्रकार दो पक्षों के बीच समस्या हो, और दोनों में कौन सही है, और कौन गलत इसका निर्णय नहीं किया जा सकता, तो राजा कहते हैं कि 'ka chalrem che u' (क चलरेम चे उ) इसका मतलब हुआ कि दोनों के बीच गलत और सही नहीं बताते हुए दोनों के बीच समझौता किया जाता है।

Tualthah (तुआलथाह) हत्या के मामले कोई सीमित दण्ड नहीं होता है। जिसका खून किया जाता है उसका परिवार उस खूनी को भी मार सकते हैं। अगर वह खूनी उन लोगों से बचना चाहता हो, तो वह राजा के घर जाता है और राजा के घर की सूतपुई (sutpui) दीवार को पकड़ता है। अगर वह खूनी राजा के घर की दीवार को पकड़ लेता है, तो कोई भी उस खूनी

को छू नहीं सकता है। परन्तु, वह खूनी जीवनभर राजा का गुलाम बन जाता है। उसे अपना जीवन राजा के घर बिताना पड़ता है। अर्थात उस खूनी के पुत्रों को भी राजा का गुलाम बनना होता है। राजा की रक्षा करना उनकी जिम्मेदारी बन जाती है। इसलिए उनको 'Chemsen Bawih' (चेमसेन बोई) बोई कहा जाता है।

Minu lawithlen (मीनू लोईथेन) इसका मतलब है- किसी दूसरे की पत्नी पर बुरी नज़र डालना और उसको बहकाना। पूर्वकाल में सभी युवक जोलबूक में रहते थे। अगर किसी एक युवक का विवाह भी हो, तो वे जोलबूक से अपने पत्नी के पास सोने के लिए थोड़े वक्त के लिए घर आते और फिर वे सीधे जोलबूक वापस चले जाते। इसी तरह उनके एक बच्चे होने तक ऐसे ही रहना पड़ता है। अगर इस बीच कोई बदमाश युवक किसी ओर पत्नी का बलात्कार करते। तो उनके पति के न होने पर बलात्कार करने वाले को दण्ड दिया जाता है। उनके कान या नाक को काट दिया जाता है। लेकिन ब्रिटिश शासन के बाद यह परंपरा भी समाप्त हो गई। अगर ऐसे किसी पत्नी-पति के बीच कोई आ जाये तो उसे बहुत ही ख़राब चीज या अपशगुन माना जाता है। पति-पत्नी के बीच तलाक तक हो जाता है।

'Thlim' (थ्लिम) में युवती के सोते समय अगर किसी ने उसके साथ गलत काम, उसकी इज्जत उछालने की कोशिश की, तो वह एक जुर्म होता है। वही लड़की अगर राजा के पास यह बात कहती है, तो उस अपराधी को दण्ड के लिए बैल की माँग किया जाती है।

'Pawngsual' (पोङसुआल) बलात्कार : जो बिना लड़की को जाने, अकेले मिलने के बाद उसके साथ जबरदस्ती सम्बन्ध बनाता है, तो इसके दण्ड के लिए बैल की माँग की जाती है।

Nula leh tlangval thubuai (नुला लेह त्लंगवाल थूबुई) युवक और युवती के बीच का मामला: पहले के ज़माने में तो लड़का-लड़की खुले आम मिलते थे। अगर लड़का-लड़का के

बीच यौन का सम्बन्ध हो और पूरे गाँव में लड़की बदनामी के कारण उसे गलत कहकर और राजा के पास चली जाती है, तो राजा और उसके मंत्री मैदान में पुरे गाँव वालों के साथ मामले को सुलझाने की कोशिश करते हैं। राजा और मंत्री दोनों पक्षों की बात सुनते हैं। अगर निर्णय लेना मुश्किल हुआ, तो प्याले में पानी रखते हैं। पानी में उनके बाल रखते हैं। फिर उसे पानी को पीने को कहा जाता है। उस पानी को पीने के बाद जिसने भी झूठ बोला, वह मर जायेगा। उनका यह मानना होता है। जो झूठ बोलते हैं, वह पीने से डर जाते हैं और इस तरह सच्चाई सामने आ जाती है। अगर लड़का झूठा निकला तो उससे बैल की माँग करते हैं। अगर लड़की झूठी निकली तो लड़की का कुछ नहीं किया जाता है। लेकिन लड़का झूठा निकला तो लड़के का वस्त्र फाड़कर उसे मारने लगते हैं। यह लड़कों के लिए बहुत ही अपमान समझा जाता है।

'khawhring neia lnpuh thubuai' (खोहरिंग नैई इनपुह थूबुई) यह एक बहुत बड़ा कठोर मामला है। पहले तो सुन्दर और खूबसूरत लड़की को देखकर लोग बहुत ही जलने लगते थे। उसे झूठा साबित करने की कोशिश किया करते थे। वे (khawhring) एक तरह का भूत होता है। उससे सम्बन्ध रखता है। ऐसे उनको झूठ से पूरे गाँव में बदनाम किया जाता है। अगर यह झूठ निकला, तो उस बदनामी के कारण उन लोगों को दण्ड मिल सकता है।

'Kamtam man' (कमतम मन) ज्यादा बोलने की सजा- इस मामले में जो लोग ज्यादा बोलते हैं। वे अंत में कुछ न कुछ झूठ बोलते हैं। इसी में अगर किसी ने दूसरों का बुरा किया, तो उसके कारण बैल की माँग उस ज्यादा बोलने वाले से की जाती है।

'Rukruk' (रुकरुक) चोरी करने का मामला- किसी ने खेल में अगर उसकी फसल चोरी की तो है, उस चोर को सजा के तौर पर एक salam (सुअर) की माँग की जाति है।

'Ran Phil' (रन फिल) किसी के पालतू पशु की चोरी की जाये, तो उस चोर को उसकी चोरी का दंड दिया जाता है।

'Thingthul hmeichhia thuamthil ruk' (थिङथुल ह्मेइछिया थुआमथिल रुक) अगर किसी ने किसी और का कपड़ा चुराया, तो उसे सजा मिल सकती है। किसी ने किसी दूसरे की बात चोरी-चुपके सुनी, तो उसके लिए भी दण्ड दिया जाता है। लड़की को छेड़ने की सजा भी दी जाता है।

'khumpuisang kai man' (कुमपुईसंङ कई मन) पहले के जमाने में कोई भी अपने घर को ताला नहीं लगाया करते थे। इसी कारण कोई युवक जो रात को चुपके से लड़की के घर जाकर उसे छुते, तो इसकी सजा बहुत ही कठोर होती है। 'khumpui tihbawlhlawh man' (खुमपुई तीबोलह्लोह् मन) किसी पति पत्नी के बिस्तर में अगर कोई दूसरे युवक युवती सो जाये, तो उसकी सजा होती है; क्योंकि ऐसा करना मना है। इस प्रकार किसी के बिस्तर की गंदा करना माना जाता है।

ग. मिज़ोरम की लोक परंपरा की व्याख्या :

हर राज्य की अपनी-अपनी लोक परंपरा होती हैं। उस परंपरा को हर राज्य अपनाता है। जैसे- जैसे समय बीतता चला जाता है। लोक परंपरा भी छूटती चली जाती है। लेकिन आज के युग में मिज़ो जाति ने अपनी लोक परंपरा को कायम रखा। उनमें से विवाह, तलाक, अन्तिम संस्कार की परंपरा को बरकरार रखा। सबसे पहले विवाह की व्याख्या - पूर्वकाल में मिज़ो के पूर्वज विवाह को काफी महत्व देते थे। युवक और युवतियाँ भी अपने माता-पिता पर उनके विवाह का फैसला रखते थे। अपने मन मर्जी से विवाह नहीं करते थे। पहले के जमाने में युवक अपने माता-पिता के पास शादी के बारे में कहने से शर्माते थे। उनके माता-पिता को जब पता चलता, तो उनके दोस्तों से पूछते कि उनके बेटे का किसके साथ प्रेम सम्बन्ध चल रहा है, या नहीं। अपने पुत्र और पुत्रियों के लिए, जो दिखने में ठीक हो, उनसे यूँ ही विवाह नहीं करते। बल्कि, वे यह देखते कि उनका परिवार कैसा है? अच्छे खानदान के हैं या नहीं? इस सब चीजों

का बहुत ध्यान देते थे। वे अमीर और गरीब में फर्क नहीं देखते थे। उनको बस केवल अच्छे इन्सान से मतलब होता था।

विवाह होने से पहले लड़के की ओर से लड़की को खरीदने के लिए चार सौ बीस रूपये (420) दिए जाते लड़की की ओर से चार सौ बीस रूपये में से वापस लौटाते थे। उसे मिज़ो भाषा में 'Thutphah' (तुतफाह) कहा जाता है।

विवाह होने के बाद अगर किसी वजह से उनके विवाह में कोई समस्या के कारण उनके बीच तलाक हो जाये, तो तलाक के कारणों को तलाशा जाता। साथ ही तलाक के बाद की परिस्थितियों पर भी विचार किया जाता।

जब तलाक होता है, तो लड़की अपने किसी पड़ोस की स्त्रियों सारा सामान ले लेती है। जब पति पत्नी के बीच तलाक होता है, तो और लड़की अपने मायके चली जाती है। अगर उसकी मृत्यु नहीं होती है, तो लड़का चाहे तो अपनी पत्नी को फिर से बुला सकता है। मिज़ो जाति में हर तरह के तलाक के नियम होते हैं, जो इस तरह हैं-

1) Mak (माक) : इस प्रकार के तलाक में लड़का अपनी पत्नी को उम्र भर के लिए छोड़ता है। विवाह से पहले जो पैसे दिए, वे सब लड़के को लौटाने पड़ते हैं। लड़की अपना सारा सामान लेकर चली जाती हैं। ऐसा करना लड़की के लिए बहुत ही शर्मिंदगी की बात होती हैं। इसलिए लड़की अपने पति के घर से अपना कुछ भी सामान नहीं छोड़ती हैं।
2) Kawngka sula mak (कोङका सुला माक) : इस तरह के तलाक में पति अगर शादीशुदा होते हुए भी दूसरी लड़की को घर ले आये। यानि अपनी पत्नी के होते हुए दूसरी लड़की को घर ले आये। तथा अपनी पत्नी को 'माक' तलाक दे, तो उसे 'kawngka sula mak' (कोङका सुला माक) कहा जाता है। इस तरह तलाक दी हुए

पत्नी को अपने ही घर से खाली हाथ जाना मना होता है। जिस तरह दोनों ने पैसे कमाए, उसी तरह उन रुपयों का और घर का बँटवारा किया जाता है।

3) Sum chhuah (सुम छुआह) : इस प्रकार के तलाक में लड़की जब अपने पति को किसी कारण पति मानने से इन्कार कर देती है। तो विवाह में लड़की को खरीदने का जो पैसे दिया गया था, वह सारा लौटना होता हैं। लड़की को अपना सारा सामान भी अपने साथ वापस ले जाना होता है। इस प्रकार के तलाक को लड़कों के लिए बहुत ही बदनामी वाला कहा जाता है।

4) Sum lai tan (सुम लाई तन) : इस तलाक में दोनों तरफ से तलाक लेने की दोनों की मंजूरी होती है, 'sum chhuah' या 'mak' मंजूर होता है। लड़के की तरफ से जितने उसने विवाह के लिए पैसे दिए उसका आधा पैसे वह वापस ले सकता है। लड़की को भी अपना पूरा सामन लेकर जा सकती है।

5) Peksa chang (पेकसा चंग) : इस तरह के तलाक में लड़की को कुछ भी वापस नहीं देना पड़ता है। लड़की भी अपना सारा सामान ले सकती है, इसे 'पेकसा चंग' कहा जाता है।

6) Sazu meidawh (सजू मईदो) : इस प्रकार के तलाक में लड़का अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी लड़की के पास रहने चला जाता है। तो उसे 'sazu meidawh' (सजू मईदो) कहा जाता है।

7) Uire (उइरे) : शादीशुदा होने के बावजूद जब लड़की किसी दूसरे मर्द से सम्बन्ध बनाये और वह पकड़ी जाये, तो लड़की को अपने पति के घर से खाली हाथ जाना होता है। इस 'उइरे' नामक तलाक को मिज़ो जाति में सबसे ख़राब माना जाता है। इस प्रकार की प्रथा परंपरा को आज भी मिज़ो समाज में निभाते हुए देखा जा सकता है।

घ. प्राकृतिक परिवेश के साथ मनुष्य का सहचरी भाव:

पूर्वकाल में मिज़ो लोग झूम खेती ही करते थे। वहाँ से ही उन्हें खाना-पीना मिलता था। वे अपनी फसल के लिए कौन सा खेत अच्छा होगा, उसका चुनाव भी वे पूरे गाँव के लोग एक साथ करते थे। इस विषय पर राजा भी शामिल होते थे। राजा, मंत्री और गाँव के लोग ध्यान से और बहुत ही गहनता से सोचते थे कि कौन सी जगह खेत के लिए अच्छी होगी जहाँ पर कोई जानवर उनकी फसल को खाने के लिए न आ पाए। उसकी मिट्टी फसल के लिए अच्छी होगी की नहीं। इन सब बातों का ध्यान रखना जरुरी होता था। इन सभी को ध्यान में रखते हुए खेतों के लिए जगह को देखने के लिए सभी लोग जनवरी के अंत या फरवरी के महीने के शुरुआत में सभी लोग राजा के साथ चले जाते थे।

जब जगह के तय की जाती, तो अपने-अपने हिस्सों की जमीन चुनते। सबसे पहले राजा के सहोदर लोग चुनते। उसके बाद राजा के मंत्री के लोग चुनते। उसके बाद जो राजा के लिए काम आता, वे लोग चुनते। अंत में गाँव के जनजाति लोग चुनने लगते। खेतों के लिए जमीन देखने के लिए गाँव के उद्घोषक पूरे गाँव को खबर करता। पूरे गाँव को खबर करने के बाद जो दिन तय किया जाता, उसी दिन पूरा गाँव इक्कठा होकर उसी जगह पर जाते। जगह तय करने के बाद खेतों की साफ़ सफाई करते हैं। यह बहुत ही मेहनत का काम है। अगर उस खेत में वृक्ष ज्यादा होते हैं, तो पहले उस वृक्ष को काट दिया जाता है। इन कामों को करने के लिए गाँव के सभी मर्द इक्कठे होते हैं। वहीं पर झोपड़ी बनाकर बीस से तीस लोग सो जाते हैं।

सभी लोग खेतीबाड़ी खत्म होने के बाद एक साथ घर चले जाते हैं। खेतों को साफ़ करने के बाद उसको जलाया जाता है। इसके लिए शुभ समय होता हैं मार्च से अप्रैल के महीने का। खेत को जलाते समय बहुत ही सम्भालकर जलाया जाता है। क्योंकि इसके कारण कभी-कभी दुर्घटनावश पूरा का पूरा गाँव जल सकता है। जलाने के बाद फसलों के बीच महिला लोग

फसल उगाते हैं, उसे 'Mangkhawh' (मङखोह) कहा जाता है। पूरे फसल जैसे मकई, मिर्च आदि को उगाने के बाद चावल को उगाने का काम किया जाता है। इसके लिए शुभ समय है अप्रैल और मई का महीना। शरद ऋतू के बाद खेत भी सूख जाते हैं। वह उस समय होता है, जब चावल भी पूरी तरह सूख जाते हैं। काटने का समय होता है। यह अगस्त के अंत से सितम्बर महीने का समय होता है। पहले तो खेतीबाड़ी के अंत में गाँव वाले बहुत ही तैयारी करते हैं। मदिरा पहले से उसी दिन के लिए बनाया जाता है। सभी लोग ,मिलजुल कर मदिरा पीते हैं। लेकिन जब ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा तो मिज़ो लोग मदिरा को बुरी चीज मानकर छोड़ने लगे मदिरा के बदले वे लोग लाल चाय के साथ गुड पीने लगे।

इसी से यह बात भी स्पष्ट होती है कि खेती मिज़ो जनजाति के लिए कितनी जरुरी है। पहले तो पूरे गाँव लोग एक राजा के शासन में मिल जुलकर रहते थे। उनके जिंदगी में भी मदिरा ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जो भी कुछ त्योहार होता था, उसमें शराब का होना आवश्यक होता था। मिज़ो जाति ने प्रकृति से बहुत कुछ पाया है। खेतीबाड़ी मिज़ो जाति की अपनी एक अर्थव्यवस्था का साधन है। आज तक खेतीबाड़ी मिजोरम के हर गाँवों में प्रकृति के सहचरी भाव से होती आ रही है ।

इस प्रकार 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में प्रस्तुत शेर के सिर पर नृत्य का आयोजन किया गया। यह स्पष्ट है कि मिज़ो जाति माँस का सेवन करती है। माँस उनके खाने के लिए सबसे ज्यादा अच्छा भोजन होता है। इस प्रकार युवक जंगल में शिकार करने के लिए जाया करते हैं। गाँव की लडकियाँ, बच्चे, महिलाएँ, नदी, कुँए से अपने मटकी से रोज सुबह सुबह पानी लेने चली जाया करती थी। मिज़ो जाति के लोगों का पेशा पशुपालन भी है। कुत्ते, मुर्गी, मिथुन, सुअर, बकरी और गाय पालते थे। इन पशुओं का पालन इस प्रकार किया जाता है-

कुत्ता (Ui) :(Pre-history of world) पहले के ज़माने के इतिहास को जाना जाए, तो कुत्ता सबसे पहले मिज़ो समाज में एक पालतू पशु कहलाता था। पूर्वकाल में कुत्ते की बलि

चढाते थे। कुत्ते को ज्यादा किसी काम के लिए उपयोग नहीं करते थे। बचे हुए खाने को कुत्ते को खिलाया जाता था। मिज़ो समाज में पहले से ही कुत्ते का मांस खाया जाता है। लेकिन स्त्रियाँ कुत्ते का मांस नहीं खाया करती थी। घर की रखवाली के लिए भी कुत्ता बहुत ही काम में लाया जाता है। अन्य पशुओं से अधिक कुत्ते में भिन्नता दिखाई देती है। कुत्ते को कुछ भी खाने को दिया जाता है, तो वह सबकुछ खा लेता है। कुत्ते का जिस तरह पालन होता है, कुत्ता एक सच्चे मित्र की तरह फर्ज निभाता है। इसलिए पूर्वजों को भी पता था कि कुत्ते में वह खूबी है।

मुर्गी/मुर्गा (Ar) : मिज़ो जाति में सबसे पहले पशुपालन में मुर्गी पाली जाती है। मुर्गी को बहुत ही उपयोग में लाया जाता है। जैसे मुर्गी 'कोबलि' जिसे मिज़ो भाषा में इनथोई (Inthawi) कहा जाता है। उसके लिए बहुत ही उपयोग में लाया जाता है। जब लड़की की शादी होती है। जब वह लड़की अपने ससुराल जाती है, तो उसे मुर्गी लेकर जाना पड़ता है। ऐसा करना मिज़ो जाति की परंपरा है। यह परंपरा आज तक निभाती आ रही है। जब घर में मेहमान आते हैं, उस समय मेहमान के लिए मुर्गी का माँस खाने में बनाते हैं। अपने चाहने वालों के लिए मुर्गी के मांस को बनाया जाता है। पहले अंडे बड़े लोग बिल्कुल ही नहीं खाते थे। केवल बच्चे ही खाते थे। किसी त्योहार में एक दूसरे को अंडे खिलाए जाते थे।

मिथुन (Sial) : मिज़ो समाज में पशुपालन में मिथुन सबसे बड़ा पशु माना जाता है। पूर्वकाल में मिथुन की कीमत भी सबसे ज्यादा होती थी। यह देखा जाता है कि किस अमीर के पास कितने मिथुन हैं। जिसके पास मिथुन ज्यादा होते थे, वे अमीर कहलाते थे। मिथुन के मांस को सभी खाना पसंद करते थे। लेकिन मिथुन के दूध को पिया नहीं जाता था। खेती के कामों में मिथुन का प्रयोग नहीं किया जाता है।

जब कोई अपराध करता है, तो उसे मिथुन से जुरमाना भरना पड़ता है। इस तरह मिज़ो समाज में मिथुन बहुत ही उपयोगी पशु माना जाता है।

सुअर (Vawk) : सुअर मिज़ो समाज में आज तक सुअर पालतू पशु रहा है। आज मिज़ो समाज में हर घर में सुअर का पालन होता है। जिस प्रकार मुर्गी हर घर में पालते हैं। उसी प्रकार सुअर भी पाले जाते हैं। सुअर के माँस को सभी पसंद भी करते हैं। सूअर के मांस को भी हर उत्सव में बनाया जाता है। पूरे गाँव के लोग सभी मिलजुल कर खाते हैं। पूर्वकाल में सुअर से तेल बनता था। सब्जी बनाने के लिए सुअर के तेल का प्रयोग किया जाता था। कहा जाता है कि पहले के ज़माने में जिस घर में सुअर के तेल न हो, बहुत शर्मिंदगी की बात समझा जाता था।

बकरी (Kel) : बकरी भी मिज़ो जाति के पशुपालन में शामिल है। वैसे तो बकरी का दूध पिया नहीं जाता। स्त्रियाँ तो बकरी का माँस बिल्कुल नहीं खाती थी। लेकिन बकरी को बलि चढ़ाने में ज्यादा प्रयोग किया जाता था।

गाय (Bawng) : गाय का पशुपालन ब्रिटिश ने जब मिजोरम में कब्ज़ा किया था, तब 1890 के बाद ही मिज़ो जाति ने गाय पालना शुरू किया। गाय पालना कहा जाता है मिज़ो जाति ने नेपाली जाति से सीखा। पहले तो गाय को sebawng (सेबोङ) कहा जाता था। पहले तो गाय का माँस केवल लड़के ही खाते थे और गाय का दूध भी पीते थे। लेकिन स्त्रियाँ माँस नहीं खाती थी''।[6] प्रकृति का आनंद मिज़ो जाति के इतिहास को जानने के बाद पता चलता है।

3.2 शिल्प :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक के शिल्प का विश्लेषण जब नाटक के तत्वों के आधार पर किया जाता तो नाटक की भाषा और शैली की चर्चा होती है। नाटक की भाषा पर बात करते समय अर्थात भाषा का विश्लेषण करते समय नाटक में भाषा के अंतर्गत आये हुए शब्दों को पहचाना करना जरुरी होता है। 'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, विदेशी शब्द, मिज़ो शब्द आए है। उनका विश्लेषण इस प्रकार कर सकते हैं:-

(i) भाषा : विवेच्च नाटक की भाषा में प्रयुक्त शब्दों को इस प्रकार वर्गवार करके विश्लेषण किया जा सकता है-

(क) तत्सम शब्द

पूर्वकाल, दृश्य, द्वारा, अपेक्षा, घोषणा, राजाज्ञा, कार्य, अनुष्ठान, अपेक्षा, द्वार, पक्षी, , सौभाग्य, निश्चिन्त, कौतूहल, एकत्रित, प्रस्तुत, अत्यंत, अवश्य, ध्वनि, उत्सुकता, प्रस्थान, नृत्य, पुरुष, स्त्रीरूप, धारण, व्यक्ति, योद्धा, अर्थ, आवश्यक, अंतिम, वस्त्र, अनुष्ठानकर्ता, वृद्ध, स्त्रियोचित, परिक्रमा, कर्ण, आश्चर्य, स्वयं, विरुद्ध, पूर्वज, अनिष्ट, वेष, योद्धागण, विजयी, प्रख्यात, सांत्वना, सुसज्जित, पात्र, मूत्राशय, निश्चय, श्रेष्ठ, मार्ग, प्रतिस्पर्धा, पृथ्वी, तत्पश्चात, प्रहार, क्रिया, लेशमात्र, तत्पश्चात, विदूषक, झुंड, संतुनिष्ट, स्त्री, विश्राम, उक्त, धनेश, मधुर, अत्यधिक, हर्ष, पदार्पण, अर्थ, उपहास, शैया, परिक्रमा, पूर्वज, भ्रमित, व्यक्ति, दुस्साहस, दक्षिण, पर्वत, मार्ग, दुर्गम, पूर्व, पश्चिम, अनुचर, आरंभ, प्रति, स्पष्ट, झुंड, लेशमात्र, गंभीरता, भ्रमित, अनिष्ट, परिक्रमा, संस्कार, अभिषिक्त, उत्साह, आश्चर्य, अज्ञान, अक्षर, अग्नि, अमूल्य, आश्रय, उच्च, ग्राम, गृह, अवसर, स्नेह, नृत्य, तृण, तैल, धर्म, नयन, पुत्र, पंक्ति, बिन्दु, मस्तक, सत्य, हृदय, स्वप्न आदि।

(ख) तद्भव शब्द :

आग, आँसू, ऊँचा, कान, किसान, घर, काम, घी, जीभ, नया, धरती, नाच, दाँत, पक्का, पीठ, रात, सच, सीख, लड़खड़ाता, पलटकर, एकाएक, उछलकर, गिरा, भीड़, घंटों, हड़बड़ी, खचाखच, डुबकी, हँसना, हाथ, नाचना, पीठ, पत्थर, सींग, चिल्लाने, थप्पड़, पैर, साथी, टुकड़े।

(ग) मिज़ो शब्द:

- हाऊलाई चंगसिआल तूर तुई अंग दोन सुआल ए,
- त्लंगासा कमकेई सुमतुआल- अह नीखूमछींगपन लल लाई
- नीखंग पुआन लौ जोन ए।
- कन चंगसिआर छून रोला रिंग जौ तू, लौ लाई ए,
- लेनत्लंग वाल जून ङइ ए, मुआल कूर एमो का लौ ती ए।
- दरखुंआंग
- दरबू
- दरमंग
- छिम्बू ले: पेंग पेंग इन्तू अ लु लम कोंग, अ लू लम कोंग।
- तुईबूर
- एमपिंग
- कोल्हाआ
- बिआला
- थंगछुअ:पुआन
- फूंगकी
- वालपा ए, हान्नी खान ए, केई चु ए, जुआम तुक ओ हलाह लो, मूआल लिंग ए, लेंग ह्नुआइ अह ए, कई चु ए, कइटिआल सा कह चन ए
- थि:थिआप
- सारलामकाइ।
- चेम्पुई
- सेलुफन

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में इस तरह के मिज़ो शब्दों का प्रयोग हुआ है।

(घ) विदेशी शब्द : ख़ूब, क़ीमत, आदमी, असर, औरत, तलाश, दिल, आवाज़, आराम, डावात, नशा,कायदा, जिस्म, पेटीकोट आदि

(ii) शैली:

(क) कथात्मक शैली:

" बच्चे : बाबा, वे लोग महिलाओं की तरह अपने को क्यों सजाये हुए हैं, यह क्या जरूरी है?

वृद्ध : शेर पर नृत्य करते समय दूसरे शेर भी दूर से देखने आते हैं। वे आपस में कहते हैं कि "वह शेर स्त्रियों के सामने हारा और मर गया! कितनी लज्जा की बात है, ऐसे कायर के लिए मर जाना ही अच्छा है" ऐसा हमारे पूर्वज मानते हैं। उन शेरों को भ्रमित करने के लिए इस तरह स्त्रीरूप धरकर नाचने की आवश्यकता होती है।"[7]

इस कथन में वृद्ध बताते हैं कि जब शेर के सिर पर नृत्य होता है, तो शेर के सिर पर नृत्य पुरुषों की ओर से किया जाता है। जिस स्त्री का रूप धारण करके नृत्य किया जाता है, वह गाँव के वीर योद्धा होते हैं। उनसे शेर के सिर पर नृत्य कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस कथन के द्वारा प्रकट होता है कि नृत्य करते समय स्त्रीरूप धारण करने से शेर के राजा थि:थिआप दूर से उस मरे हुए शेर को देखते हैं। शेर के लाश के ऊपर जिस प्रकार स्त्रीरूप धारण किये हुए नृत्य से शेर के राजा दूसरे देखकर कहते हैं कि कितनी लज्जा की बात हैं, ऐसे कायर के लिए मर ही जाना अच्छा है।

" बच्चे : देखो, राजा जी बिल्कुल नहीं हँस रहे हैं। और उनके पास खड़ा कोई भी नहीं हँस रहा है जब कि बाकी सब लोग हँस रहे हैं। वे हँसना नहीं चाहते हैं क्या? वे एकदम गंभीर मुद्रा में क्यों हैं?

वृद्ध : यदि कोई वीर स्त्रीरूप में हैं तो उन्हें हँसना ही नहीं चाहिए। नहीं तो उसे किसी पिशाच का शिकार होना पड़ता है। उन पर अनिष्ट न हो जाए इसी कारण वे गंभीर हैं।"[8]

इस कथात्मक शैली में वृद्ध बच्चों को शेर के सिर पर नृत्य के बारे में कथा के महत्वपूर्ण बातों को बताते हैं। शेर के सिर पर नृत्य का अनुष्ठान करते समय शेर के सिर पर नृत्य के लिए लड़कों को स्त्रीरूप धारण करके नृत्य करने की परंपरा थी। इस नृत्य में भले ही देखने वालों के लिए मजाक बने, लेकिन शेर के सिर पर नृत्य करने वालों के लिए बहुत ही गंभीरता से नृत्य को पूरा करना जरुरी होता था। नहीं तो उनके नृत्य के अनुष्ठान कार्यक्रम में कोई बाधा पड़ सकने की संभावना रहती। इसलिए इस नृत्य को बहुत ही गंभीरता से प्रस्तुत एवं आयोजन करना होता था।

विवेच्य नाटक में प्रमुख संवाद शैली ही विद्यमान है। पर, नाट्य कथा के बीच-बीच में कथात्मकता के सूत्र देखे जा सकते हैं।

(ख) वर्णात्मक शैली :

"वृद्ध : यही तो अनुष्ठानकर्ता महामंत्री जी हैं। देखो, उसने "थांगछुअ:पुआन" नामक चादर को धारण कर रखा है। "फुंगकी" नामक मिथुन की सींग से बने बारूद के पात्र को झोले की तरह धारण किया है। पीठ पर तलवार है, जानवर के मूत्राशय बने झोल धरा है। उसके झोले में सफ़ेद पत्थर और पके हुए अंडे हैं।"[9]

प्रस्तुत कथन में "थांगछुअ:पुआन" नामक और फुंगकी का वर्णन हुआ है। "थांगछुअ:पुआन" एक प्रकार का वस्त्र होता है जिसे ओढा जाता है। मिज़ो समाज में थांगछुअ:पुआन कोई मामूली वस्त्र नहीं होता है। यह वस्त्र पूर्वकाल में पूर्वजों में जो भी अमीर है, जिसके पास पशु, खेती बाड़ी के जमीन आदि होते थे। पूरा गाँव एक साथ मिलकर उनका भरपूर आनंद लिया जाता था। यानी अमीर गरीब में कुछ भेदभाव के व्यवहार नहीं होते थे। एक दूसरे की मदद करते थे एक साथ सब कुछ मिलकर बाँट करते थे। ऐसा कर सकने वाले को, अपना सबकुछ पूरे गाँव के लिए बाँट सकने वाले को गाँव के राजा द्वारा इस थांगछुअ:पुआन को प्रदान किया जाता था। अर्थात वीर योद्धा या कोई भी नेक काम करने वाले को यह वस्त्र दिया जाता था। सभी उनको बहुत ऊँचा सम्मान देते थे। इसलिए थांगछुअ:पुआन मिज़ो समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। पूर्वकाल में इस वस्त्र को पाने की भी कोशिश सभी किया करते थे।

दूसरे वाक्य में जिस "फुंगकी" शब्द को प्रस्तुत किया गया है। फुंगकी का प्रयोग पूर्वकाल में किया जाता था। फुंगकी मिथुन के सींग को लेकर बनाया जाता है। फुंगकी एक प्रकार का संगीत उपकरण के लिए प्रयोग में लाया जाता है। फुंगकी को शिकार करते समय पुरुष लेकर जाया करते हैं। फुंगकी का प्रयोग बन्दुक के बारूद रखने के काम में लाया जाता है। इस प्रकार पूर्वज अपने ज़माने में फुंगकी का प्रयोग किया करते थे।

"युवकगण : चलो, शेर के सिर पर नृत्य करने की अनुष्ठान क्रिया तो पूरी हो गयी। इस शेर का सिर तो नष्ट हो गया। अपने पूर्वजों के नियमानुसार अनुष्ठानकर्ता के आंगन में "सेलुफन" नामक अभिषिक्त खंभा गाड़ा जाएँ। उनके द्वारा वध किये गए अन्य पशु का सिर ठीक और उचित रीति से टाँग दिया जाए"।[10]

प्रस्तुत कथन में जिस सेलुफन का जिक्र जिया गया है, वह शेर के सिर टांगने का जो लकड़ी होता है, उसे सेलुफन कहा जाता है। शेर के सिर पर नृत्य करने का अनुष्ठान कोई गाँव

के मामूली व्यक्ति नहीं कर सकते थे। क्योंकि इस अनुष्ठान को करने के लिए अन्य पशु के सिर को काटना होता था। पूरे गाँव के लोगों के खाने का बंदोबस करना होता था। इसलिए अनुष्ठान के कार्य को करने के लिए गाँव के राजा या गाँव के थोड़े अमीर जिसके पास काफी पशु होते हैं, वही शेर के सिर के नृत्य का अनुष्ठान कर सकते थे।

शेर के सिर पर नृत्य करने के बाद उस शेर के सिर को, जिसने शेर के सिर पर नृत्य का अनुष्ठान का आयोजन किया है, उसके घर के आंगन में एक लम्बी सी लकड़ी में उस शेर के सिर को सेलुफन लकड़ी में टाँगते हैं। उसी का जिक्र इस कथन में किया गया हैं और सेलुफन में जब शेर के सिर और अन्य पशु के सिर को टाँगा जाता है अर्थात जिसके घर के आंगन में किसी भी पशु के सिर को टाँगा जाता है, तो वह वीर कहलाता है।

निष्कषर्त: यह कहा जा सकता है कि विवेच्च नाटक के संवादों में यंत्र-तंत्र वर्णात्मकता का पुट भी देखा जा सकता है।

(ग) संवाद शैली :

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक में संवाद शैली देखने को मिलती हैं। नाटक में राजा और मंत्री के बीच के एक संवाद को देखा जा सकता है-

"राजा : महापशु के निमित्त अनुष्ठान कार्य संपन्न करने में समर्थ महामंत्री का होना हमारे लिए कितनी सौभाग्य की बात है! सुनिए, आज का पूरा दिन सभी काम से छुट्टी लेकर मनाया जाये। मदिरा के मटके भी कतार में लगाये जा चुके हैं। अहा, लाओ, लाते जाओ।

महामंत्री :अहो भाग्य! हमारे राजा जी भी आ गए हैं। इनके सान्निध्य में हम निश्चिन्त रहेंगे। आप आ गए तो बहुत अच्छा हुआ।

राजा : आप ही ने तो हमारा कौतूहल बढ़ाया, तुरंत आने का मन हुआ, सो आ गए।

महामंत्री : अच्छी बात है। अन्य लोग भी आ रहे हैं। आप लोग भी आ गए हैं अपनी-अपनी मीठी-मीठी मदिरा को लेकर, बहुत बढ़िया।"[11]

राजा और उद्घोषक के बीच की संवाद शैली को देखा जा सकता है:-

"राजा : कहीं हम यहाँ अत्यधिक समय न बिता दें। हे उद्घोषक,तू रंगभूमि की ओर जाकर देख और आकर फिर बता।

उद्घोषक :जी अवश्य, अवश्य। आप जब चाहें।"[12]

बच्चे और वृद्ध के बीच की संवाद शैली को भी यहाँ देखा जा सकता है:-

"बच्चे :किन्तु मजाक करने वाले उनके पास जाकर मजाक कर रहे हैं, वे हँस भी रहे हैं। मैंने साफ़-साफ़ देखा है।

वृद्ध : ऐसे हँसी को 'सही हँसी' कहते हैं, इसका मतलब यह है कि वे सही के लोम (तीर जैसा) को अपने काँख (बगल) में दबाकर रखते हैं। इसमें अनुष्ठानकर्ता को भी हँसना नहीं चाहिए। देखो उसने भी साही का तीर काँख में दबा कर रखा है। साही के जो तीर पर हँसने का बहाना बनाकर हँसा जा सकता है।"[13]

"बच्चे :अरे, अरे, सब के सब बदल गए हैं। देखो, देखो उनके पीछे वही मजाक करने वाले भी फिर से आ रहे हैं।

वृद्ध :अहो, मुझे अपने जवानी के दिन की याद आ रही है! बेशक मैं भी राजा के पीछे चलकर शूरवीरों के नृत्य में शामिल होता था।

बच्चे : बाबा, देखें कौन नृत्य कर रहे हैं?

वृद्ध : वे हमारे शूरवीर ही हैं। मजाक करनेवाले भी हमारे वीर योद्धा कोल्हआ और बिआला ही है।

बच्चे : वाह! वास्तव में भाईजी बिआला ही है, लगता है उनको बहुत मजा आ रहा है, काश मैं भी शामिल हो पाता !

वृद्ध : भाले और तलवार को हाथ में लेकर नाचना तो बहुत उत्साह की बात है ही। इस प्रकार से नृत्य प्रस्तुत कर पाने वाले एक गाँव के प्रख्यात वीर ही होते हैं जिनसे लोगों को मन ही मन सांत्वना मिलती है।

बच्चे : देखो, उसके हाथ में अंडा है, बाप रे ! निश्चिय उसने अंडा पकड़ रखा है।

वृद्ध : अवश्य। देखो वह शेर के पास खड़े होकर अंडा छील रहा है। झोले से सफ़ेद पत्थर भी निकलेगा, तुम देखते जाओ।"[14]

"युवकगण : चलो, शेर के सिर पर नृत्य करने का अनुष्ठान क्रिया तो पूरी हो गयी। इस शेर का तो नष्ट हो गया। अपने पूर्वजों के नियमानुसार अनुष्ठानकर्ता के आंगन में "सेलुफन" नामक अभिषिक्त खम्भा गाड़ा जाएँ । उनके द्वारा वध किये गए अन्य पशु का सिर ठीक और उचित रीति से टांग दिया जाय।

उद्घोषक : हाँ हाँ, अपने नेक बात कही। अब शुरू किया जाए ।

युवकगण :इसको खम्बे के रूप में गाड़ा जाय..... तुम तैयार हो? जोर लगाओ....लो भाई ...।

युवा नेता : वीर योद्धा का आंगन ऐसा ही होना चाहिए, बहुत बढ़िया और सुन्दर हो गया। हम ने महापशु का अंतिम संस्कार कर लिया है। अब हम अपने घर की ओर जा सकते हैं।

पहला युवक : इस अभिषिक्त खम्भें "सेलुफन" में इस उद्घोषक को भी बांध दिया जाए तो कितना अच्छा होगा।

दूसरा युवक : हाँ, यही ठीक रहेगा। वह कहाँ छुपा हुआ है?

उद्घोषक : नहीं, नहीं, मैं नहीं चाहता, बिल्कुल नहीं....।"[15]

(घ) प्रश्नोत्तर शैली :

"बच्चे :सच में? नहीं मानता । उस शेर के शव का क्या करनेवाले हैं?

वृद्ध : तुम लोग देखते जाओ। उस शेर के शव की परिक्रमा करके वे लोग नृत्य करेंगे। देखो, वे उसका उपहास भी कर रहे हैं। वे हमारे राजा और शूरवीर लोग हैं।

बच्चे : बाबा, वे लोग महिलाओं की तरह अपने को क्यों सजाये हुए हैं, यह क्या जरुरी है?

वृद्ध : शेर पर नृत्य करते समय दूसरे शेर भी दूर से देखने आते हैं। वे आपस में कहते हैं कि वह शेर स्त्रियों के सामने हारा और मर गया! कितनी लज्जा की बात है, ऐसे कायर के लिए मर जाना ही अच्छा है। ऐसा हमारे पूर्वज मानते हैं। उन शेरों को भ्रमित करने के लिए इस तरह स्त्रीरूप धरकर नाचने की आवशयकता होती है।

बच्चे : बाबा, देखें कौन नृत्य कर रहे हैं ?

वृद्ध : वे हमारे शूरवीर ही हैं। मजाक करनेवाले भी हमारे वीर योद्धा कोल्हआ और बिआला ही है।"[16]

प्रस्तुत प्रश्नोत्तर शैली में बच्चे और वृद्ध के आपस के संवाद में बच्चे अपने वृद्ध से सवाल पूछते हैं और उनका वृद्ध जवाब देते हैं। बच्चे और वृद्ध गाँव के रंगभूमि में जाकर शेर के सिर पर नृत्य देखने के लिए शामिल होते हैं। लेकिन बच्चों को नृत्य में कुछ चीजों को समझ नहीं पाते हैं। तो अपने वृद्ध से सवाल करते जाते हैं और वृद्ध भी बच्चे को शेर के सिर पर नृत्य के बारे में सारी बाते समझाकर नृत्य का आनंद लेते हैं।

संदर्भ:

1. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम-III, पृ. 52
2. B.LALTHANGLIANA, PI PU ZUNLENG, पृ. 97

   “Kutpui kan ur khuangruah chhiar nghian e, Chappui rawh lohvin a tul ngai lo, Ka chung chhawrthla a vanglai lo maw?” (अनुवाद मेरा)
3. C.LIANTHANGA, HMANLAI MIZO NUN, पृ. 90

   “Mahni lu lam kan ni ngei e, dam rei nghah thil a nih avangin uar tak leh hlim tlang taka hman theuh I tum ang u” (अनुवाद मेरा)
4. B.LALTHANGLIANA,PI PU ZUNLENG, पृ.100

   “Buangpui a tang bal a, a zik a thin reng e, milai kan tang bal e, laikhum a thing reng e,Lurhpui a sang khi e, vanhnuaiin an hril e, A chhipah chuang ila, fam ka ngaih khu lang maw?” (अनुवाद मेरा)
5. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम- III, पृ. 53
6. B. LALTHANGALIANA, PI PU ZUNLENG, पृ.80

   “British hovin Mizoram an awp, kum 1890 hnu lam chauha an vulh tan ve a ni. Nepali-ho hnen atanga an hriat ve niin a lang. Sial a an deuh avangin a tirah chuan “Sebawng’’ an ti nghe nghe. Tun hma chuan a sa

leh a hnute hi mipa chauhin an ei a , hmeichhia chuan an ei ve ngai lo”

(अनुवाद मेरा)

7. डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक ,हिंदी वॉल्यूम- III, पृ. 60
8. वही, पृ.61
9. वही, पृ.63
10. वही, पृ.68
11. वही, पृ.52
12. वही, पृ. 54
13. वही, पृ.61
14. वही, पृ.62 & 63
15. वही, पृ. 68 & 69
16. वही, पृ. 59 & 60

उपसंहार

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक मिज़ो की एक लोक कथा पर आधारित है। 'शेर के सिर पर नृत्य' मिजो समाज की प्राचीन परंपराओं में से एक है। वर्तमान में इस नृत्य का आयोजन नहीं किया जाता है। यह माना गया है कि सन् 1892 पर जब ब्रिटिश सरकार ने मिज़ो पर कब्ज़ा किया था। ब्रिटिश सरकर ने मिज़ो जाति के राजा पर भी अपना अधिकार जमाकर वीर योद्धाओं को युद्ध में शामिल किया। युद्ध के कारण विभिन्न देशों में रहकर उनके व्यवहार, रहन-सहन आदि में परिवर्तन आने आये। जिसके चलते मिज़ो समाज में बदलाव आने लगे और धीरे-धीरे ऐसी कई परम्पराएँ मिज़ो समाज से दूर होती गईं।

'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के बाद मिज़ो जाति की संस्कृति और परंपराओं को समझा जा सकता है। पूर्वकाल में मिज़ो जाति के पूर्वजों के अनुशासन, रीति-रिवाज, व्यापार, त्यौहार, नृत्य आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। परंतु, साथ ही निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस नृत्य का आयोजन वर्तमान में प्रासंगिक नहीं है। वन्य जीवों-जानवरों का मारना-शिकार करना आज न वैधानिक है और न ही किसी भी दृष्टि से उचित। अतः भले ही इस नाटक में मिज़ो समाज की एक लोक परंपरा को केंद्र में रखकर कथानक विस्तार पाता है, पर वर्तमान के अनुसार ऐसी परंपराओं का मान रखते हुए उनमें परिवर्तन की बेहद जरूरत है। बिना वन्य जीवों के शिकार किए मिज़ो समुदाय को अपनी उत्सवधर्मिता को जीवित रखना, यही इस नाटक का उद्देश्य भी है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि विवेच्य नाटक तमाम अपनी सीमाओं, कथ्य और शिल्प के बिखरेपन के वाबजूद मिज़ो समाज की परंपरा, संस्कृति और सभ्यता के अनूठे सूत्रों को हमारे सामने उजागर करता है। इस तरह हम पूर्वोतर भारत के अंतर्गत मिजोरम प्रदेश की मिज़ो जनजाति के परिवेश, परंपरा और संस्कृति से परिचित होते हैं।

सभी अध्यायों से प्राप्त निष्कर्षो का समाकलन-विवरण-विश्लेषण प्रस्तुत करने पर यह स्पष्ट हुआ कि प्रस्तुत नाटक हिन्दी में अनूदित होकर मिज़ो समाज के जनजीवन की लोक-परम्पराओं, संस्कृति और लोकाचारों को बड़ी संजीदगी और जीवंतता के साथ हिन्दी समाज के समक्ष रख पाने में सफल हुआ है। अत : हम कह सकते हैं कि विवेच्च नाटक अपने कथानक और मिज़ो नाट्य शैली से अपनी सार्थकता को रेखांकित करता है और अपने उद्देश्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ :

1. शेर के सिर पर नृत्य, मिज़ो नाटक, हिंदी वॉल्यूम-III, नाटयकार- डॉ. ललत्लुआङलिआना खिआंगते, अनुवादक – श्रीमत रमथङा खोलह्लिंग, Loise Bet Print & Publication, Aizawl, 2019

सहायक ग्रंथ:

हिंदी पुस्तकें:

1. डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ल्ली, 2001
2. डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
3. डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी (सं.), अनुवाद विज्ञान, समीक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
4. डॉ. रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, साहित्य निधि, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982
5. सी. कामलोवा, मिज़ो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास, Mualchhin Publication and Paper Work, Aizawl, 2016
6. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत: अतुल्य भारत, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2021
7. वीरेंद्र परमार, उत्तर-पूर्वी भारत के आदिवासी, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020
8. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत के पर्व त्योहार,मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020,
9. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक आयाम, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020
10. वीरेंद्र परमार, मिजोरम: लोकजीवन और संस्कृति, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2021
11. आलोक सिंह, पूर्वोत्तर की जनजातियाँ और उनका लोकजीवन, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2021

12. सुनील सिंह, पूर्वोत्तर समाज और संस्कृति, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2020
13. वीरेंद्र परमार, अरुणाचल का लोकजीवन, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2003
14. वीरेंद्र परमार, अरुणाचल के आदिवासी और उनका लोकसाहित्य, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009
15. वीरेंद्र परमार, पूर्वोत्तर भारत की नागा और कुकी-चीन जनजातियाँ, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2021
16. वीरेंद्र परमार, अरुणाचल प्रदेश: लोकजीवन और संस्कृति, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
17. वीरेंद्र परमार, उत्तर-पूर्वी भारत का लोक साहित्य (2021)-मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
18. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017
19. डॉ रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009
20. डॉ.नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1980
21. डॉ.हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य, विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1985
22. नंदकिशोर नवल, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
23. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2004
24. मोहन राकेश, साहित्य और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, आगरा, 2018
25. महादेवी वर्मा, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2011
26. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, 2018
27. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
28. रमणिका गुप्ता, (सं.), आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
29. माता प्रसाद, पूर्वोत्तर भारत के राज्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998
30. गंगा सहाय मीणा, आदिवासी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014

मिज़ो ग्रंथ:

1. Chaldailova, R.Mizo Pi Pute Khawvel, Mizo Pi Pute Lenlai, Aizawl, 2011
2. Dokhuma, James. Hmanlai Mizo Kalphung. Aizawl: Hmingthanpuii. Gilzom Offset 2nd Edition, 2008.
3. Khiangte Laltluangliana. Chantual Ennawm -2 (Lali & Sakei lu lam). Aizawl: L.T.L Publication. 2012
4. Lalthangliana, B. Mizo Culture. Aizawl: Gilzom Offset.2013
5. Lalthantlanga. "Folk Theatre leh Khawtlang Nun Zirchianna" Mizo Studies Vol. V No 2, Aizawl, 201
6. Zatluanga. Mizo Chanchin Aizawl: Royal Press. 1966
7. Colney Lalzuia & Lalthianghlima, Mizo Thu leh Hla cl-IX &X, Mizoram Board of School Education, Thankthing Bazar Press 1999.
8. Dokhuma, James, HManlai Mizo Kalphung, Electric veng, Aizawl: R.Lalrawna, 2015.
9. Duhsaka, V.L,Mary WINCHESTER (ZOLUTI)& Isreal-Mizo,Sabbath vrs Sunday, Krishmas, Good Friday etc. L.R.Offset& Flex Printing Canteen Kual Dawrpui, Aizawl, 2013.
10. Dokhuma, James& Pu Lalthangfala Sailo, Mizo Class-IX, Mualchin Publication and Paper Work, Peter's Street khatla, Aizawl, 2001.
11. Laltluangliana Khiangte, THU LEH HLA THLIFIMNA LAM, L.T.L Publication, Mission Veng, 2016.

12. Dr. Laltluangliana Khiangte, Saitual Centenary 1915-2015 Souvenir, Gilzom offset Electric Veng, Saitual Centenary sub-Committee, 2015.
13. Hnamte Isaac & Lalsangzuala, A PROFESSORS PADMA SHRI SOUVENIR, B-43, Fakrun, Mission veng Aizawl, Mizoram: Swapna Printing Works Pvt.Ltd Kolkata, 2011.
14. Lalauva, R Mizo MiBikte, Upper Bazar: R Lalauva, Maranatha, 2010.
15. Lianhmingthanga, Mizo Pasalthate, Rajinder Nagar new Delhi: Tribal Research Institute Department of Art & Culture, Government of Mizoram, 2004.
16. Laithanga, C, Mizo Khua, Chanmari: L.V Art, 2002.
17. Lianthanga,C, HMANLAI MIZO NUN, 1998.
18. Lalthangliana, B, Pi Pu Zunleng 2007.
19. Lalbiakliana,C, Zawlbuk Ti Ti, Milan Computerise,2000
20. Lalthangliana,B, & Lalthangliana, B, Mizo hnam zia leh Khawtlang nun siam that, 2016.
21. Lianhmingthanga, F, & Lalthangliana, F, Mizo nun hlui Part – 1 Pawl Riat zirlai, 1996.
22. Lalbiakliana,H.K.R, Pasalthate Chanchin, Khatla: H.R.K Lalbiakliana, 2006.
23. Lalhruaitluanga, Ralte, Thangliana, Aizawl: Art & Culture Department Govt. Of Mizoram, 2013.

24. Liankhaia, Rev, Mizo AWMDAN HLUI & MIZO MI LEH THIL HMINGTHANGTE LEH MIZO SAKHUA, L.T.L Publication Mission Veng, 2008.
25. Liangkhaia, Rev, Mizo Chanchin, L.T.L Publication, Felim Computer B- 43, Fakrun, Mision veng 2002.
26. Lalthangliana, B, Laithanga. C, Lalchungngunga, Hluna J.V, Lalsangliana, F, Mizo Hnam Zia Leh Khawtlang nun siam thatna, The Synod Publication Board Aizawl, Mizoram. Synod Press Aizawl, 1988.
27. Lalthangliana,B,Zotui, M. C Lalrintluanga RTM Press Chhinga Veng Aizawl, 2006.
28. Sailo Lalsangzuali, Class X Mizo Puitu, AJBP Publication, Hnamte Press Khatla 2009.
29. Siama, V.L. Mizo History, Lengchhawn Press, Khatla, 2009.
30. Zawla.K, Mizo Pi Pute leh an thlahte chanchin, Gosen Press Mission veng: Aizawl, 1989.
31. Zawla.K, Mizo Pi Pute leh an thlahte chanchin, zomi book agency, Samuel Press Electric Veng.
32. Vanlallawma, C, Bengkhuaia Silo, Lengchhawn Press, Mission veng 1996.
33. Thanga, Selet, Pi Pu Len, Bara bazaar, Aizawl: Lianchhungi Book store, 1989.

अंग्रेजी ग्रंथ:

1. Dr. Laltluangliana khiangte, Mizos of North East India. An Introduction to Mizo Culture,Folklore Language & Literature, L.T.L Publication, Mission Veng, 2008
2. Dr. Laltluangliana khiangte, TRIBAL CULTURE AND FOLKLORE AND LITERATURE, Krishna Mittal for Mittal Publication, New Delhi, 2013

कोश :

1. डॉ. सी. ई. जीनी, हिन्दी-अँग्रेजी मिज़ो शब्दकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
2. कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय व मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बृहत हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2000
3. एस.के.पूरी, आशा पूरी व सुमन ओबेरॉय, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, साहनी पब्लिकेशंस, 2015

पत्र-पत्रिकाएँ :

1. कंचनजंघा, संपादक – डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, जनवरी-जून, 2020
2. समन्वय पूर्वोत्तर, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग, अक्तूबर- दिसंबर, 2011
3. साहित्य परिक्रमा (कथा विशेषांक), क्रांति कनाटे (संपादक), ग्वालियर, अक्टूबर-दिसंबर, 2015
4. अक्सर, हेतु भारद्वाज (संपादक), जयपुर, अप्रैल-सितंबर, 2015
5. मधुमती, ब्रजरतन जोशी (संपादक), राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, अंक – 1, जनवरी, 2020

बायोडाटा

1. नाम : वानललङइजुआली

2. पिता नाम : श्री ह्मिंगथनसाङा

3. माता का नाम : श्रीमती ललरिनलिआनी

4. पता : ज़ेमाबोक गालिली वेङ, आइज़ोल, मिज़ोरम 796017

5. जन्मतिथि : 28.1.1987

6. शैक्षिणिक योग्यता : क) दसवीं (2006)-तृतीय श्रेणी

ख) बारहवीं (2010)- तृतीय श्रेणी

ग) स्नातक (2012)-तृतीय श्रेणी

घ) बी.एड (2018)- प्रथम श्रेणी

ङ) एम.ए- हिंदी (2016)- द्वितीय श्रेणी

7. मोबाइल : 8794835103

8. ईमेल : ngaihzuali28@gmail.com

9. भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी,मिज़ो

10. संगोष्ठियों में पत्र वाचन:

क्रम सं.	शीर्षक	आयोजक	तिथि
1.	मिज़ो नाटक की विकास परंपरा	हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल	12 ,जून, 2020
2.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य की भूमिका	हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय आइज़ोल	10, जुलाई, 2020

(वानललङइजुआली)

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	:	वानललङइजुआली
उपाधि	:	एम. फिल.
विभाग	:	हिंदी
लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक	:	**'शेर के सिर पर नृत्य' नाटक का विश्लेषणात्मक अध्ययन**
प्रवेश तिथि	:	25.07.2019
शोध प्रस्ताव की संस्तुति		
1. विभागीय शोध समिति की तिथि	:	27.04.2020
2. बी.ओ.एस की तिथि	:	19.05.2020
3. स्कूल बोर्ड की तिथि	:	29.05.2020
मिजोरम विश्वविद्यालय पंजीयन संख्या	:	1905369
एम.फिल.पंजीयन संख्या	:	MZU/M.Phil./623 of 29.05.2020
लघु शोध-प्रबंध जमा करने की तिथि	:	25.11.2021
अवधि विस्तार (एक्सटेंशन)	:	31.07.2021 तक (पत्रांक:**16-2/MZU(Acad)/ 20/394-399; दिनांक : 11.02.2021)** तथा 31.12.2021 तक (पत्रांक:**17-1/MZU(Acad)/ 20/14; दिनांक : 01.04.2021)**

(प्रो. संजय कुमार)

अध्यक्ष,हिंदी विभाग

मिजोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल